मैथिली गीतगोविन्द



कृष्ण कुमार कश्यप • शशिबाला

मैथिली गीतगोविन्द

(जयदेव-कृत 'गीतगोविन्द'क भावानुवाद)

रचनाकारः

कृष्ण कुमार कश्यप

आ

शशिबाला

भारती विकास मंच

बरहेता, लहेरिया सराय,

दरभंगा, मिथिला-846001

कॉपी राइट:
कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला

प्रकाशक:
भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय, मिथिला-846001

प्रकाशन-वर्ष : जनवरी, 2010

छायांकन : Alain Volut, Naples, Italy
कश्यप, विनय आदित्य

सज्जा : यशवंत सिंह रावत

मुद्रक : सिस्टम्स विज़न, नई दिल्ली
systemsvision@gmail.com

मूल्य : सजिल्द: रुपैया [redacted]
अजिल्द: रुपैया [redacted]-

सम्पर्क-सूत्र : 99316 65939
kashyapkk2000@yah oo.co.in
mithilauniversity@gmail.com

मुद्रण : एक हजार प्रति

MAITHILI GEETAGOVINDA (Maithili)
By Krishna Kumar Kashyap & Shashibala

जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।



Photo: Alain Volut, Naples, Italy

आमुख

कोनो कृति जीवनक सुन्दर अभिव्यक्ति होइत अछि। एकरा लेल कतेको वर्षक गहन अनुभवकेँ समेटि क' रचनाकार अपन मन केँ तुष्टि प्रदान करैत छथि आ तेहने कृति लोकक लेल प्रेरणाक स्रोत बनैत अछि।

जेना काव्यक आत्मा रस होइछ तहिना चित्रक शरीर प्रकाश आ छायाक कतेको विच्छित्ति सँ गठित होइछ। शरीर आत्माक अधिष्ठान अछि, आ तेँ शब्द सँ रचल काव्य-शरीर मे जे आत्मा रस बनि क' उपस्थित रहैछ, वैह आत्मा प्रकाश आ छायाक पृथक-पृथक विच्छित्ति मे चित्र स्वरूप व्यक्त होइत अछि। रवीन्द्र नाथ ठाकुर बाणभट्ट-विरचित 'कादम्बरी'क चित्रात्मकताक रहस्य उजागर कैलनि। हर्षवर्द्धनक युग मे बाण सन महाकविक सम्बंध मे ई तथ्य प्रचलित छल जे हुनकर आँखि चित्रकारक आँखि छल। हमरा बुझने एहने बात जयदेवक सम्बंध मे सेहो जानक चाही। श्री कश्यप आ शशिबाला जयदेवक मोन मे रहि गेल, छूटल-दबल अनुभूति केँ "मैथिली गीतगोविन्द" मे उजागर कैलनि अछि, तेँ ई रचना मैथिली-जगत मे मात्र महत्वपूर्ण नहि अपितु ऐतिहासिक कार्य कहल जायत, एकटा कालजयी रचना!

राधा-कृष्णक "तिल-तिल नूतन" होइत रूप केँ मन मे एकाग्र भाव सँ स्थिर करैत जयदेव जाहि रूप-रस-गंधक आस्वादन अपन काव्यक माध्यम सँ करौलनि ताहि साधनाक प्रसाद सँ "मैथिली गीतगोविन्द" प्रोद्भासित अछि। जयदेवक रचना मे चित्रात्मकता सहज रूप सँ रसक सङ्ग उपलाइत अछि। ओहि चित्रात्मकता केँ आर बेसी फरीछ करबा लै' कश्यप आ शशिबाला मिथिला-चित्रक प्रस्तुति कैलनि अछि। वाह रे जयदेव, जे विद्यापति "अभिनव जयदेव" कहयला; आ वाह रे "मिथिला गीतगोविन्द", जे जयदेव आ विद्यापति फेर स' मुसकियैला।

— डॉ. उमेश कुमार 'उत्पल'
व्याख्याता, हिंदी-विभाग
बि. म. आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी.
दरभंगा-847105

पोथी-पाथेय

राधा-कृष्णक रासामृत सँ विश्व-साहित्यक वृन्दावन मे "गीतगोविन्द"क कल्पतरु स्थापित कैनहार जयदेवकेँ श्रीकृष्णक कवि-अवतार कहल गेल अछि। वैष्णव-भक्तिक पार्श्वभूमि पर राधा-कृष्णक जाहि प्रणयलीलाक चित्रण जयदेव 'गीतगोविन्द' मे कैलनि अछि तेकर मूल स्रोत यद्यपि कि भागवत अछि मुदा संयोग आ विप्रलम्भ शृङ्गारक तानी-भरनी मे सङ्गीत, नृत्य आ अभिनय-कलाक जेहन रङ्ग जयदेव भरलनि ओ विश्व-वाङ्मय मे सर्वथा अपूर्व अछि।

जयदेवक जीवनक विवरण कतेको साहित्यिक, ऐतिहासिक आ परम्परागत दन्त-कथा पर आधारित अछि मुदा एहि सभ स्रोत मे श्रीधरदासक 'सदुक्तिकर्णामृत' बेसी महत्वपूर्ण मानल जाइछ। श्रीधरदास ल.सं. 36, तदनुसारेँ सन 1156 ई. मे एहि पोथीक रचना कैलनि जखन ओ गङ्गदेवक प्रधानमन्त्री छलाह। आ लक्ष्मण सेनक कवि-पण्डित लोकनिक चातुर्य-वैशिष्ट्यक वर्णन करैत तीस गोट पदक रचना कैलनि। जयदेव केँ लक्षित एकटा पद एना अछि —

"वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः सन्दर्भशुद्धिं गिरां
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूहद्रुते ।
शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्धन-
स्पर्धी कोऽपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविक्ष्मापतिः ॥" 1

(उमापतिधर नामक कवि मात्र अपन वाणीक विस्तार करैत छथि। एकटा जयदेवे एहन कवि छथि जे वाणीक सन्दर्भ-शुद्धिकेँ जनैत छथि। शरण नामक कवि मात्र दुरूह कविता करब जनैत छथि। शृङ्गार-प्रधान निर्दोषार्थ काव्य-रचनाक विषय मे आचार्य गोवर्धनक केओ प्रतिस्पर्धी नहि छथि आ कविराज धोयी त' मात्र एकटा श्रुतिधर छथि।)

मिथिलाक इतिहासकार उपेन्द्र ठाकुरक अनुसारेँ श्रीधरदास, कायस्थ, मिथिला मे कर्णाटक-राजवंशक संस्थापक नान्यदेव (1056–1146 ई०) आ तिनक पुत्र गङ्गदेव (1146–1226 ई०)क प्रधानमंत्री छलाह।[2] म.म. परमेश्वर झा अनुसारेँ, श्रीधरदास नरऊवाली मूलक कायस्थ छलाह।[3] एहि ऐतिहासिक साक्ष्यक पुष्टि 'अन्धराठाढ़ी प्रस्तर-अभिलेख' सँ सेहो होइछ जे झंझारपुर अनुमण्डलक अन्धराठाढ़ी गाम सँ प्राप्त भेल अछि। 'सदुक्तिकर्णामृत' आ श्रीधरदास सँ सम्बंधित अभिलेख सँ ई प्रमाणित होइछ, जे जयदेवक जन्म बारहम शताब्दी मे भेल छलनि।

जयदेवक जन्म-भूमिक सम्बंध मे सेहो साहित्यकार आ इतिहासकार लोकनिक मध्य बहुत लम्बा समय सँ विवाद रहल अछि। एहि विवाद मे बङ्गाल, उड़ीसा आ मिथिलाक विद्वान सभ 'गीतगोविन्द'क पद-संख्या ३-१० मे उल्लिखित "किन्दुबिल्व शुभ गाम सिन्धु सन, ताहि सिन्धु सँ चन्द्र जनमला ....", 'किन्दुबिल्व' गाम कैँ अपना राज्यक बतबैत छथि। उड़ीसाक विद्वानक तर्क छनि जे 'किन्दुबिल्व' पुरी जिलाक एकटा गाम अछि त' बङ्गालक विद्वान बीरभूम जिला मे एहि गाम कैँ सिद्ध करैत छथि। तहिना मिथिलाक विद्वानक तर्क छनि जे मधुबनी जिलान्तर्गत झंझारपुरक निकट स्थित 'केन्दुली' गाम जयदेवक जन्म-स्थान अछि। अगत्या, एहि विवादक समापन सुनीतिकुमार चटर्जीक प्रबन्ध (monograph) "Jayadeva, Makers of Indian Literature, Sahitya Akademy, 1973" सँ होइछ आ निश्चय पाओल जे जयदेव बङ्गालक भूमि पर बारहम शताब्दी मे अवतीर्ण भेल छलाह आ ओम्हरे एहि कालजयी रचना, 'गीतगीविन्द'क सृजन कैलनि।[4]

साहित्यिक विवरण आ गीतगोविन्दक अन्तिम पद १२-२६ सँ स्पष्ट होइछ जे जयदेव ब्राह्मण सन्त छलाह। हुनक पिताक नाम भोजदेव आ माताक नाम रामा देवी छलनि। अध्ययन आ कृष्ण-भक्ति मे आकण्ठ मग्न जयदेव सांसारिक माया-मोह सँ दूर, अपनहि धुनि मे मस्त, सतत भ्रमणशील रहैत छलाह आ भिक्षाटन पर अपन जीवन चलबैत छलाह। आश्रयक लेल ओ कोनो गाछ तर राति बिता लैत छलाह मुदा अगिला दिन फेर ओहि गाछ तर नहि जाइत छलाह जे कदाचित बेर-बेर गेला सँ ओहि भूमि सँ मोह ने भ' जाय। कथा अछि जे एक गोट ब्राह्मण-दम्पति कैँ सन्तान नहि होइत छलनि। एक दिन ओ दम्पति जगन्नाथजीक मन्दिर मे पूजा कैलाक बाद कबुला कैलनि जे जँ हुनका लोकनि कैँ सन्तानक प्राप्ति होयतनि त' समय अयला पर ओहि सन्तान कैँ ओ जगन्नाथजी कैँ अर्पित क' देतथि। कहबी छैक, विश्वासो फल-दायकम्! ब्राह्मण-दम्पति कैँ एकटा कान्या जन्म लेलथिन। ओहि कान्याक नाम रखायल पद्मावती। लक्ष्मी सन सुन्नरि पद्मावती माता-पिताक संरक्षण मे सङ्गीत आ शास्त्रक अध्ययन करैत बढ़य लगलीह। पद्मावती जखन सयौष्ट भेलीह त' ब्राह्मण-दम्पति निश्चय कैलनि जे कान्या जगन्नाथजी कैँ समर्पित क' देल जाय। किंवदन्ती अछि जे ओही राति दुनू बेगती कैँ भगवान स्वप्न मे आदेश देलथिन जे जयदेव नामक ब्राह्मण सँ विवाह कराक' ई कान्या हुनके सुपुर्द क' देल जाय। ब्राह्मण-दम्पति आ पद्मावतीक समर्पणक आगाँ जयदेवक जिद नहि टिकलनि। जगन्नाथक आदेश कैँ ओहो शिरोधार्य कयलनि आ एकटा

नव वैष्णव-पद्धतिक स्थापना करबा ले' जयदेव-पद्मावती दाम्पत्य-सूत्र मे बन्हि गेलाह। पद्मावती सङ्ग परिणयक बाद जयदेवक जीवन-चर्या मे भारी परिवर्तन भेल, घुमक्कड़ सन्त सद्गृहस्थक परिपाटी मे अयला। ओ 'जयदेव'(कृष्ण) आ 'पद्मावती' (लक्ष्मी) कैँ अपन नायक-नायिका मानि गीति-नाट्य लिखैत छलाह, राग-बद्ध करैत छलाह आ पद्मा गीतक बोल पर नृत्य करैत छलीह। अभिनयक क्रम मे काव्य-रचना बढ़ैत-बढ़ैत दशम सर्ग मे जखन आयल त' एकटा भारी घटना भेल। कृष्ण अपन रूसल प्रेयसी, राधा कैँ मना रहल छलाह। अनुनयक चरमोत्कर्ष पर हुनका कहबाक छलनि जे —

"हमर माथ पर राखू मानिनि
शीतल अपन कमल-पद,
मनक ताप-सन्ताप शमन हो
जीवन होय निरापद!"

मुदा भक्त-कवि अपन आराध्य कैँ एहि दशा मे कोना देखितथि! भगवानक माथ पर राधाक चरण राखाय, ई साहस नहि जुटा सकलाह। काज रोकि देलनि। दुविधा मे मोन भरिया गेलनि त' थिर बहटारबाक उद्देसें स्नान कर' चल गेला। ओम्हर, भगवान गोविन्द स्वयं जयदेवक भेष मे नहा क' आबि गेलाह, धोती कैं सुखैबा ले' घुमा क' चार पर फेकलनि, पद्मावती पीढ़ी-पानि लगा क' थारी आगाँ मे देलथिन, प्रेम-पूर्वक भोजन कैलनि, तृप्त भै आचमन कैलाक बाद जयदेवक पाण्डुलिपि मे अधखरू श्लोक कैं लीखि क' पुरौलनि आ असली जयदेव के अयबा सँ पूर्वहि अन्तर्धान भ' गेलाह। जयदेव जखन अजइ धार[5] मे स्नान क' क' आँगन अयलाह त' अपन दोसर धोती सुखाइत देखलनि। माथा ठनकलनि। जखन पत्नी सँ भोजन मङलनि त' ओ अकचकाइत कहलथिन, अहाँ एखने भोजन क' क' कविता लीख मे लागल रही, तखन फेर भोजन किऐक मङै छी? जयदेव दौड़ला अपन पाण्डुलिपि देखबा ले' त देखलनि जे अधखरू श्लोक पूर्ण छलनि — "स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं, धेहि पदपल्लवमुदारम्। ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनारुणो, हरतु तदुपाहितविकारम् ॥" (१०-८) .... आब दुनू बेगती कैं बुझबा मे कनेको भाङठ नहि रहलनि जे कवि कैं धर्म-सङ्कट सँ बचैबा ले' भेष बदलि क' अयलाह, भोजन कयलनि आ लीखि क' चल गेलाह। हे नारायण, अहाँ बहुत भक्त-वत्सल छी! दुनू बेगती भाव-विभोर भै नाच' लगलाह।

महान वैष्णव-सन्त महाप्रभु चैतन्यक जीवनलीला पर

आधारित ग्रन्थ "**चैतन्यचरितामृत**" (ले०-कृष्णदास कविराज) मे उल्लेख अछि जे महाप्रभु सोलहम शताब्दी मे पुरी गेलाह आ ओत' जगन्नाथजीक मन्दिर मे "गीतगोविन्द"क नियमित गान सुनि क' तेतेक प्रभावित भेलाह जे ओतहि बसि गेलाह। महाप्रभु कैं बङ्गाली कवि चण्डीदास आ मैथिल-कोकिल विद्यापतिक पदावली सेहो बहुत प्रिय छलनि।[6] "**बालबोधिनी**" टीका मे उल्लेख अछि जे जयदेवक 'गीतगोविन्द' प्रतिएँ चैतन्यदेवक अगाध प्रेमक कारणे 'गीतगोविन्द' सहजिया वैष्णव सम्प्रदायक पूजा-विधि मे सम्मिलित भ' गेल आ एहि सम्प्रदायक अनुयायी लोकनि जयदेवकैं सहजिया सम्प्रदायक आदिगुरु मान' लगलाह।[7]

जयदेवक जीवन-कालहि मे 'गीतगोविन्द' बङ्गाल, उड़ीसा आ मिथिला मे व्यापक प्रसार पौलक। बङ्गालक शासक लक्ष्मण सेनक दरबार मे जयदेव कवि-पण्डितक सम्मानित पद पौलनि, एहि मे निश्चित रूपैं गीतगोविन्दक प्रसाद-गुण प्रभावशाली रहल होयत। लक्ष्मण सेन अपने संस्कृतानुरागी छलाह आ 'परमवैष्णव' उपाधि सँ सम्बोधित होइत छलाह।[8] हुनक शिला-लेख सभ विष्णु-मन्त्र 'ओउम् ओउम् नमो नारायणाय' सँ प्रारम्भ होइत छल।[9] तें ई सहज अनुमेय जे लक्ष्मण सेन बङ्गाल मे गीतगोविन्दक प्रचार-प्रसारक लेल साधिकार प्रयास कयने होयताह।

बारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे महान वेदान्त-दार्शनिक आ श्रीवैष्णव सम्प्रदायक सम्पोषक-प्रचारक पुरी गेलाह आ उड़ीसाक राजा अनन्तवर्म्मन छोड़गङ्गदेव (१०७८–११४८ ई०) कैं श्रीवैष्णव सम्प्रदायक मत सँ प्रभावित कैलनि। रामानुजक प्रभाव बङ्गाल आ उड़ीसा पर समान रूपैं पड़ल। रामानुज सँ प्रभावित राजा अनन्तवर्म्मन पुरी मे जगन्नाथ मन्दिरक निर्माण-कार्य शुरू कैलनि जेकर समापन हुनक पौत्र अनङ्ग भीमदेव द्वारा बारहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मे भेल।[10] जगन्नाथ मन्दिरक अभिलेख बतबैछ जे छोड़गङ्गदेवक समय सँ ओहि मन्दिर मे विष्णुक सर्वोच्च रूप, जगन्नाथक पूजन होइत आबि रहल अछि, श्री अथवा लक्ष्मी जिनकर आद्याशक्ति छथि।[11] विद्वान लोकनिक कहब छनि जे विष्णुक एही जगन्नाथ वा जगदीश रूपक स्तुति जयदेव गीतगोविन्द मे कैलनि अछि। जगन्नाथ मन्दिर मे गीतगोविन्दक गान सम्भवतः बारहमे शताब्दी मे प्रारम्भ भेल मुदा एहि गान कैं राजाज्ञा द्वारा पन्द्रहम शताब्दी मे पूजाविधिक अन्तर्गत नियमित कयल गेल। राजा प्रतापरुद्रदेवक ई आदेश ओड़िया भाषा आ लिपि मे, मन्दिरक 'जयविजय' द्वार पर अंकित अछि — (१४९९ ई०) —

शिला-लेखक मूल अंश :—

"ज्येष्ठ भगवान (बलराम) आ गीतगोविन्दक प्रभु जगन्नाथकैं नृत्य सहित भोग लगाओल जाय। भगवानक संध्या-कालीन भोग सँ लगाएत शयन काल धरि नृत्य चलैत रहय। ज्येष्ठ भगवानक नर्तक-समूह, भगवान कपिलेश्वरक नर्तकी-समूह आ प्राचीन तेलङ्गाना नर्तक-समूह गीतगोविन्दक अतिरिक्त अन्य कोनो गीत ने सीखत ने गाओत। ओउम्। भगवानक समक्ष अन्य कोनो नृत्य नहि हो। नृत्य-समूहक अतिरिक्त चारि गोट गायक होथि जे मात्र गीतगोविन्दक गान करथि। जे केओ गीतगोविन्दक गान मे निपुण नहि होथि ओ समूह-गान मे भाग लेथि। हिनका लोकनिकैं कोनो अन्य गीत नहि सीखक चाही। मन्दिरक कोनो अधिकारी वा कर्मचारी जनैत-बुझैत जँ कोनो अन्य गीत वा नृत्यक अनुमति देथित' ओ जगन्नाथक अपराधी होयताह।"[12]

तेरहम शताब्दी बीतैत-बीतैत गीतगोविन्द पश्चिमी भारत मे पसरि गेल छल। अणहिल्लपत्तन (गुजरात)क महाराज सारङ्गदेव वाघेलाक एक गोट शिला-लेख (१२९१ ई०) गीतगोविन्दक दशावतार (१-१७) सँ प्रारम्भ होइछ। ओहि लेख द्वारा, पालनपुरक निवासी पर, कृष्णक मन्दिर पर होमयवला खर्चक मद मे अदायगी हेतु एकटा टैक्सक आदेश छल।[13] चौदहम शताब्दीक रचना 'साहित्यदर्पण'क दशम परिच्छेद मे रचनाकार विश्वनाथ गीतगोविन्दक एकटा पद (३-११) उदाहरण-स्वरूप रखलनि। नेपाल मे गीतगोविन्दक पसार सम्भवतः कर्णाट-शासक लोकनि द्वारा तेरहमे शताब्दी मे भेल आ प्रतिलिपि तैयार करबाक प्रचलन शुरू भेल, ताड़-पत्र पर नेवारी लिपि मे गीतगोविन्दक दू गोट प्रतिलिपि भिन्न-भिन्न कालक पाओल गेल अछि — नेपाली सं. ५६६ (१४४६ ई०) आ नेपाली सं. ६१६ (१४९६ ई०)।[14]

'गीतगोविन्द' पर विस्तृत साहित्यिक टीका 'रसिकप्रिया'क रचना मेवाड़क शासक कुम्भकर्ण (१४३३–'६८ ई०) कैलनि। एहि पोथी सँ भावार्थक लेल हमहुँ सहायता लेलहुँ अछि।

'गीतगोविन्द' काव्य पर आधारित एकटा विलक्षण चित्रावली, जेकर प्रकाशन राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली पहिल बेर 'Kangra

Paintings of the Gita Govinda' नाम सँ कैलक। एहि संग्रहक चित्रकार, ओकर संरक्षक आ चित्रक रचना-काल के लऽ'क' भारी विवाद रहल अछि। एहि संग्रहक पहिल चित्रक पुष्पिका पर एक गोट श्लोक अंकित अछि —

"मुनिवसुगिरिसोमैः सम्मिते विक्रमाब्दे
गुणिगणितगरिष्ठा मालिनी वृत्त चित्ता,
व्यरचयद अजभक्ता माणकुचित्रकर्त्री
ललितलिपिविचित्रम् गीतगोविन्दचित्रम्।"

एहि श्लोकक व्याख्या मे प्रख्यात कलाविद W.G. Archer समेत J.C. Wright आ प्रोफेसर A.L. Basham (School of Oriental and African Studies, London Univ) लगला आ श्लोकक पहिल पाँतिक अर्थ एना निकाललनि — मुनि (ऋषि =६), वसु =८, गिरि =६, सोम (चन्द्रमा =१); सम्मिते विक्रमाब्दे = जोड़ि क' विक्रम सम्वत्; ताहि रूपेँ ६८६१ वि. स.; आब एहि संख्या कैँ उनटाउ, अर्थात १६८६ वि. स., ताहि मे स' घटाउ ५६ वर्ष, तखन भेल १६८६ विक्रम सम्वत् वा सन् १६३० ईस्वी। रचनाक एहि काल-निर्णय पर त' विद्वान लोकनि सहमत होइत छथि मुदा श्लोकक दोसर पाँति मे 'मालिनी' आ तेसर पाँति मे 'माणकुचित्रकर्त्री' पर एखन धरि विवाद बनल अछि। एहि विवादक मुख्य विषय ई अछि जे माणकु पुरुष छल वा स्त्री? मालिनी छन्दक नाम अछि अथवा चित्रक संरक्षिका वा प्रेरणा-स्रोत? विवाद तखन आओर घनगर भ' जाइछ जखन 'गीतगोविन्द' पर आधारित चित्रक एकटा आओर संग्रह लाहौर म्यूजियम (पाकिस्तान) मे भेटैछ। एहि चित्रावलीकैँ एन. सी. मेहता 'गीतगोविन्द'क 'बसोहली सिरीज', रचना-काल १६३० ई. कहि क' १९३८ ई. मे The Illustrated Weekly of India मे लिखलनि। विवाद जेहन हो, काँगड़ा शैली मे माणकु चित्रकारक रचनाक सङ्ग 'गीतगोविन्द' अद्वितीय अछि।

आइ धरि 'गीतगोविन्द'क अनुवाद वा टीका-समीक्षा कौन-कौन भारतीय भाषा मे भेल तेकर अद्यतन सूचना एहि लेख मे सम्भव नहि अछि। भारत सँ बाहरक विश्वकैँ 'गीतगोविन्द' सँ परिचित करैबा मे Sir William Jones क रचना बहुत प्रभावकारी रहल। William क रचना Journal of Asiatick Researches, Calcutta, 1792 मे प्रकाशित भेल आ ओही मे दबायल रहल मुदा एहि सँ अंग्रेजी-पाठककैँ 'गीतगोविन्द'क पहिल परिचय भेटल। William क अनुवाद पढलाक बाद Friedrich Rückert,

जर्मन कवि, १८२५ ई. मे गीतगोविन्दक पद्यानुवाद प्रारम्भ कैलनि। जखन C. Lassen संस्कृत पाठ सहित लैटीन भाषा मे एकर अनुवाद Bonn मे १८३६ ई. मे प्रकाशित कैलनि तखन ओहि आधार पर Rückert अपन रचना कैँ फेर सँ सुधियौलनि। William Jones क रचनाक आधार पर F.H. van Dalberg सेहो जर्मन भाषा मे गीतगोविन्दक अनुवाद कैलनि। विश्व-साहित्यक एहि अनुपम कृतिक अनुवाद आओर यूरोपियन भाषा मे भेल अछि मुदा हमरा दु टा अनुवाद बेसी नीक लागल — एक त सन १८६५ मे लन्दन मे प्रकाशित Edwin Arnold क The Indian Song of Songs आ दोसर, अमेरिकी कवियत्री Barbara Stoler Miller क The Gitagovinda of Jayadeva (मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन)। अज्ञानतावश, मैथिली मे गीतगोविन्दक कोनो अनुवादक विषय मे हमरा नहि बूझल अछि।

गीतगोविन्द, नेपाल सहित मिथिला मे, बङ्गाल आ उड़ीसाक सङ्गहि विख्यात भेल आ अनेको प्रकार सँ मिथिलाक जन-जीवन कैँ प्रभावित कैलक। एहि बातक कोनो ऐतिहासिक प्रमाण नहि भेटैछ जे जयदेव कोन निश्चित कालावधि मे गीतगोविन्दक रचना कैलनि मुदा एहन तात्विक रचना पराधीन मानसिकता आ दरबारी ताम-झाम क बीच जीवयवला व्यक्ति नहि क' सकैत अछि। तैं, हम अनुमान करैत छी जे गीतगोविन्दक प्रकाशनक बाद लक्ष्मण सेन (११६३-१२०६) हुनका अपन दरबार मे कवि-पंडितक आसन प्रदान कयने हेथिन।

जाहि समय मे जयदेव लक्ष्मण सेनक दरबार मे छलाह ताहि समय मे "सदुक्तिकर्णामृत"क रचनाकार श्रीधरदास मिथिलाक शासक गङ्गदेव (११४८-११८८ ई०)क प्रधानमन्त्री छलाह। मिथिला आ बङ्गाल, दुनूक शासक कर्णाटकक मूलवासी छलाह आ प्रायः कनिते समयके आगाँ-पाछाँ उत्तर भारतक भू-भाग मे सत्ताधीश भेल छलाह, ताहि सभ कारणे दुनू राजपरिवारक मध्य अपनैतिक व्यवहार छल। यद्यपि कि मिथिलाक इतिहास मे दुनू शासकक मध्य विवाद आ युद्धक किछु घटनाक उल्लेख अछि मुदा तेकर कारण किछु आओर छल। दुनू शासक, प्रारम्भ मे मीलि क', सम्पूर्ण गौड़देश (बङ्गाल) पर आधिपत्य कर' चाहैत छलाह मुदा बाद मे ओहि योजना मे कतहु विशेष महत्वाकाङ्क्षा घुसिआ गेलाक कारणे खटपट भेल छल।[15] सामान्यतः दुनू दरबारक मध्य राजनीतिक आ सांस्कृतिक मामला मे बढ़िया मेल-जोल छल। मिथिला मे लक्ष्मण संवतक चलन सेहो एही मेलजोलक परिणाम छल। तहिना श्रीधरदास जे 'सदुक्तिकर्णामृत' मे

लक्ष्मण सेनक प्रशस्तिक सङ्ग हुनक दरबारी कवि-पण्डित लोकनिक चातुर्यक वर्णन कैलनि तेकर अर्थ ई नहि अछि जे ओ लक्ष्मण सेनक सेवक छलाह। श्रीधरदास गङ्गदेव सँ पूर्व हुनक पिताक मन्त्री छलाह —

"श्रीमान्नान्यपतिर्जेता गुणरत्नमहार्णवः
यत्कीर्त्या जनितो विश्वे द्वितीयःक्षीरसागरः।
मन्त्रिणा तस्य नान्यस्य नवखङ्गाब्जभानुना
तेनायं कारितो देवः श्रीधरः श्रीधरेण च॥"

उपर्युक्त श्लोक झंझारपुर अनुमण्डल (मधुबनी) क अन्धराठाढ़ी गाँव मे श्रीधरदास द्वारा बनबाओल एक गोट विष्णु-मन्दिरक पीठिका मे अंकित छल। एहि साक्ष्य कें इतिहासकार 'अन्धराठाढ़ी-शिलालेख' नाम सँ जनैत छथि।[16] उपलब्ध साक्ष्यक मोताबिक, नान्यदेव आ गङ्गदेव — दुनूक सत्ता-काल उँ १०९७ ई. सँ ११८६ ई. धरि, नब्बे वर्षक छल, आ श्रीधरदास दुनू राजाक मन्त्री छलाह त' कोना सम्भव छल जे ओ लक्ष्मण सेनक सेवा मे रहल होयताह? एहि सँ सिद्ध होइछ जे श्रीधरदास लक्ष्मण सेनक सौजन्य मे हुनक दरबारी कवि-पण्डित वा स्वयं राजाक प्रशस्तिकैत 'सदुक्तिकर्णामृत' क रचना मिथिला मे कैलनि। ग्रन्थ मे जयदेवक उचित प्रशंसा आ विष्णु-मन्दिरक निर्माण सँ स्पष्ट होइछ जे मिथिला मे प्रारम्भिके काल सँ गीतगोविन्द प्रसिद्ध भेल होयत। जहिना जयदेवक संरक्षक-प्रशंसक लक्ष्मण सेन 'परमवैष्णव' क उपाधि धारण करैत छलाह[17]. तहिना नान्यदेव सेहो 'धर्माधारभूपति, राजनारायण, मोहनमुरारि' आदि उपाधि धारण करैत छलाह।[18] हुनक सभ पुत्र-पौत्रादि, अगिला सभ उत्तराधिकारी परम विद्वान, संस्कृतानुरागी आ कला-मर्मज्ञ छलाह। तेँ, गीतगोविन्द सामाजिक-धार्मिक जीवन मे ओहिना घोरा गेल होयत जेना जल मे मिसरी घोरा जाइत अछि। आगाँक एकटा उदाहरण सँ ई बात बेसी फरिछ भ' पाओत।

मिथिलाक पहिल हिन्दू राजा नान्यदेवक सङ्ग कर्णाटक सँ विशाल जन-समुदाय मिथिला आयल आ राज्य-स्थापनाक बाद स्थानीय समाज मे 'कर्ण-कायस्थ' नाम सँ सङ्गठित भेल। म.म. परमेश्वर झा लिखलनि जे नान्यदेव चौदह हजार सैन्यबलक सङ्ग मिथिलाक सत्ता पर (नेपाल समेत) आसीन भेलाह।[19] सुदूर दक्षिणक द्रविड़ सभ्यता सँ विस्थापित भेल कायस्थ-समुदाय मिथिलाक माटि-पानि कें अपन सौजन्य सँ नमन-अङ्गीकार कैलनि मुदा हुनका लोकनि कें सामाजिक-धार्मिक कृत्यक निर्वाह नवीन परिवेश मे स्वभावतः कठिन छलनि। एतावता, नान्यदेव सँ लै गङ्गदेव धरिकैक बेर

विवाहादि पूजा-पाठक नियम बनल आ सुधार होइत रहल। वृद्ध-परम्परानुसारेँ, कर्ण-कायस्थ लोकनिक समस्त सामाजिक आ धार्मिक संस्कार रामसिंहदेव (१२२५-१२८५ ई.) संहिता-बद्ध कयलनि। इतिहासकार उपेन्द्र ठाकुर अनुसारेँ, रामसिंहदेवक सत्ता-काल राजनीतिक सँ बेसी बौद्धिक उत्कर्षक लेल जानल जाइत अछि जेकर प्रतिफलन अमर साहित्यिक सृजन आ दार्शनिक सिद्धि मे भेल। स्वयं एकटा धर्मनिष्ठ उपासक आ विशिष्ट प्रतिभा-सम्पन्न लेखक, ओ धार्मिक साहित्यक कतेको शाखाक प्रणयन कयलनि। ओ तेहन गिनल-चुनल विद्वान-राजा छलाह जिनकर मत कें धार्मिक साहित्यक परवर्ती अधिकारी-लेखक उदाहरण स्वरूप रखैत छथि। हुनकर सत्ता-काल शृङ्खला रूपेँ प्रशासनिक, धार्मिक आ सामाजिक क्षेत्र मे कतेको मौलिक सुधारक साक्षी बनल। ओ हिन्दू लोकनिक सामाजिक आ धार्मिक रीतिक अनुपालन करबा ले' दिशानिर्देशक नियमादि बनबौलनि। एहि नियमादिक अनुपालन सँ सम्बंधित विभिन्न प्रश्नक शङ्का-समाधान हेतु गामे-गाम एकटा अधिकारीक नियुक्ति कयल गेल।[20]

रामसिंहदेव द्वारा निर्धारित विवाह-पद्धति, कर्ण-कायस्थ समाज मे अद्यावधि प्रायः अविच्छिन्न अछि। अधिकांश विध कला आ तान्त्रिक सिद्धान्त पर आधारित अछि। विवाह मे, कन्या-पक्ष मे, कोबर-घरक भीत पर कोबर, कमलदह, बेरी, बाँस अरिपनक अतिरिक्त नयना योगिनि आ गीतगोविन्दीय दशावतारक लिखिया करब अनिवार्य अछि। तहिना वर-पक्ष पाँच गोट कागज पर दू टा कोबर आ एक-एक टा कमलदह, बाँस तथा दशावतारक चित्र लिखबबैत छथि। अरिपनवला चारू कागज मे विशेष विधिएँ सिन्दुरक पुड़िया बनाओल जाइछ जेकर उपयोग पृथक-पृथक विध मे होइछ आ दशावतारक चित्र मे कनियाक लेल आभूषण ल' गेल जाइत अछि। किछु दिन पूर्व धरि कोबर-घरक गीत मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण छल गीतगोविन्दक 'दशावतार'। एहि विवरण सँ ज्ञात होइछ जे गीतगोविन्द मिथिलाक समाज मे अद्यावधि कतेक प्रभावकारी अछि।

मिथिला मे गीतगोविन्दक महत्व कें पदर्शित करबला एकटा आओर महत्वपूर्ण साक्ष्य अछि स्वयं विद्यापतिक 'अभिनव जयदेव' उपाधि। राजा शिवसिंह श्रावण शुक्ल सप्तमी, दिन बृहस्पति ल.सं. २९३, तदनुसारेँ सन १४१२ ई., विद्यापति कें बिस्फी गामक दानपत्र देलनि। ओहि दानपत्र मे बिस्फी गामक समस्त जनता आ कृषक कें आदेश दैत जनाओल गेल अछि, "महान पण्डित श्री विद्यापति ठक्कुर, जे अभिनव जयदेव सन यशस्वी छथि, तिनकाँ जरैल परगना अन्तर्गत बिस्फी गाम देल जाइत अछि।"[21]

गीतगोविन्दक 'मधुरकोमलकान्तपदावली'(१-३)शब्दचयन-पद्धति विद्यापतिक रचना मे मैथिलीक पाक सँ आओर मीठ भेल मुदा कतेको पद मे विद्यापति जयदेवक भाव कें ठामक-ठाम राखि देने छथि-

"लोचन अरुन बुझल बड़ भेद
रजनि उजागर गरुअ निवेद। – विद्यापति

"रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिवेशम्।"
– गीतगोविन्द ८/२

"ततहु जाहु हरि करहु ने लाथ
रअनि गमओलहु जनिके साथ।" – विद्यापति

"हरि हरि याहि माधव! याहि केशव! मा वद कैतववादम्।
तामनुसर सरसीरुह लोचन! या तव हरति विषादम्॥"
– गी॰गो॰, ओतहि, ८/२

गीतगोविन्दक पद तेना ने झमकि क' मिथिला पर बरसल जे मैथिल मानसक माटि त' सराबोर भेले, विद्यापतिक सङ्ग-सङ्ग समस्त लौकिक गीतक शृङ्खला — होरी, चैतावर, पावस, झूला, बारहमासा, बटगमनी — राधा-कृष्णक प्रेम-रस सँ आप्लावित होइत रहल अछि। दुर्भाग्यवश आजुक पीढ़ीक लेल जयदेव आ 'अभिनव जयदेव' दुनू अनठिआ भ' गेल छथि। संयोग नीक अछि जे मिथिलाक विश्व-प्रसिद्ध चित्रकला जयदेव आ विद्यापति कें सदैव जोड़ने रहैछ।

एहि रचनाकारद्वयक कार्मिक यात्रा मे गोविन्द-पथक पाथेय अपन-अपन पिता सँ भेटल। कश्यपक पिता इन्द्र नारायण लाल आ शशिबालाक पिता श्री उग्र नारायण लाल। इन्द्र नारायण अपन मित्र लोकनिक मददि सँ गाम मे 'श्री महाकाली पुस्तकालय'क स्थापना सन १९४० ई॰ मे कैलनि। एहि पुस्तकालयक कैक तरहक शैक्षिक काज छल। अपन गाम (बरहेता)क सङ्ग ई पुस्तकालय आनो गामक हित मे बौद्धिक-सांस्कृतिक सञ्जिवनी बूटी जेकाँ काज कैलक। इन्द्र नारायण लिखैत छलाह। सन १९४६-४७ ई॰ मे एकटा लघु-उपन्यास 'लाल भौजी' प्रकाशित कयलनि। आन कोनो पुस्तक त' प्रकाशित नहि भ' पौलनि मुदा उग्र नारायणजीक सहयोग सँ एकटा हस्तलिखित पत्रिका "कर्म-कलापी" जे शुरू कैलनि से १९६० क दशक धरि अबैत-अबैत खूब झमटगर भ' गेल छलनि। ई पत्रिका तत्कालीन युवा-वर्ग मे लिखबा-पढ़बाक खूब बढ़िआ अभिरुचि जगौलक। कदाचित ई पत्रिका शुरू-शुरू मे मासे-मास निकलैत

छल जे कहियो आगाँ जा क' "होलिकाङ्क"क रूप मे वार्षिक भ गेल। एकटा निधि बुझि, उग्र नारायणजी एखन धरिक बहुत अङ्क कें जोगा क' रखने छथि। ओहि 'होलिकाङ्क' मे विविध साहित्यिक विधाक लेख आ कविता त' रहिते छल, चारि-पाँच पृष्ठ मे इन्द्र नारायणजीक पद पर आधारित ठखराम वासी गजेन्द्रजीक चित्र ओहि सभ अङ्कक विशेष आकर्षण रहैत छल। फगुआक सम्मत दिन नव अङ्कक विमोचन आ वाचन होइत छल आ तेकर बाद लोक उग्र नारायणजी सँ मांगि क' ओहि एसकरुआ अङ्कक रसास्वादन करैत छलाह। सन १९४२ ई॰क होलिकाङ्क एखनहुँ आँखिक सोझा मे ओहिना झलकि रहल अछि। ओहि अङ्कक पाँच-छः पृष्ठ मे गजेन्द्रजीक चित्र बनल छल आ चित्रक नीचाँ मे विलक्षण आखर मे 'इन्द्र'क पद, जे मोन मे कतहु बसि गेल, सभ दिनक लेल —

'प्रीतम के अछि नारि नवेलि जे केलि कलायुत रति गमीलक।
बोल अमोल सुना बिरमा पुनि भोरे भगाय एना सिठियैलक॥
सप्पत छी कवि 'इन्द्र'कहू मन-मोहिनि के मन के भरमौलक।
के अछि सौतिनि बाजु कहाँ जे अहाँ के शरीर अबीर लगौलक॥"

गजेन्द्रक कृष्ण छलाह रङ्ग-अबीर सँ पोतल, आँखि नीन सँ मातल, भकुआयल, धुरखुर धैने ठाढ़, एकटा पएर चौकठिक भीतर आ एकटा बाहर; राधा मोख्वा लागल ठाढ़ि, कृष्ण सँ प्रश्न करैत; एहन छल ओहि चित्रक दृश्य। हमरो मोन मे भेल, एहन किछु बनबितहुँ! हस्तलिखित पुस्तक रचबाक चसका हमरा 'होलिकाङ्क'हि सँ लागल। एत' स' चित्र बतिआय लागल। चित्रक एहि बतिआन मे गोविन्द कहियो असङ्ग नहि भेलाह।

हमरा सभहक एकटा बाबा छलाह, भुवनेश्वर लाल। ओ वैष्णव छलाह। पौराणिक आ दन्त कथाक अघट-अथाह भण्डार छलनि हुनका लग आ सङ्गहि अपन जीवनक भोगल सुख-दुखक पिहानी त' छलनिहें। दादिओ तेहने विदुषी आ बितपनि छलीह। बाबा लग हम बेसी काल रही आ हुनका सँ बहुत किछु सिखलहुँ। एक दिन बाबा बतौलनि, जे केओ दोसरक दुख बुझय से अछि वैष्णव, आ जे दोसरक दुख दूर करै वैह गोविन्दक सखा आ हुनकर परिवार अछि। बाबाक ई कथन मन्त्र जेकाँ जीवन-यात्रा मे अघट पाथेय बनल रहल मुदा गोविन्दक द्वारि धरि जायबला बाट देखौलनि उग्र नारायणजी। हुनका गामक सभ छोट-पैघ लोक 'लाल भाइ' कहैत छनि। लालभाइ पहिने पटना मे काज करैत छलाह। ताहि दिनुक लोकक हालति बड़ खराब छल। समान सभ सस्त छल, लोक लग पाइ बड़ कम। सरकारी नोकरीक अलावा काजक बेसी क्षेत्र नहि।



Photo: Alain Volut, Naples, Italy

गामे-गाम उपास-तिरासक रत्ता। जँ बेनिहारक दशा त' दयनीय छल मुदा ओ सभ स्त्री-पुरुष दुनू मीलि क' श्रम करबा ले' स्वतन्त्र छलाह, आ' केनहुना गुजर क' लैत छलाह; हुनका लोकनिकेँ पेटक दुःख कम छलनि, तखन पेट भरक अलावा आओर सभ चीजक दुःखे-दुःख छलनि। भ'ल (?) कहबयवला गरीब लोकक दशा बेसी खराब छल, कारण जे हुनका लोकनिक आधा जन-संख्या, स्त्री-वर्ग, अर्थोपार्जनक कोनो काज करबा ले' स्वतन्त्र नहि छलीह। कतेको परिवार मे साँझक-साँझ उपास होइत छल, करसी जेकाँ पेट-पाँजर बैसल, सुखायल, पपड़ी भेल ठोर, विषण्ण मुह-माथ। चिल्हका समेत चिल्हकाउरि अछुरिआ काटि क' रहैत छलीह तेँ कोनो काज करबा ले' घर स' बाहर डेग नहि उठा सकैत छलीह, 'आ' काजे कोन करितथि? ई दशा कोनो एक गामक नहि छल, गामे-गाम ऐह वादी। लालभाइ एकटा निदान ताकलनि।

ओ जखन पटना सँ गाम आबथि त किछु टकाक साबे घास बजार सँ कीनि लाबथि आ लोक केँ कहथिन जे बैसल-बैसल जौर बाँटू, कहियो बीड़ीक सुक्खा आ पत्ता कीनि लाबथि आ किछु महिला केँ कहथिन बीड़ी बनेबा ले'। लोक कहनि, ई बना क' की करब? भूख लागत त' की, जौर खायब? आ कि बीड़ी पी क' भूख मेटायब? ई समान कत' बिकायत? के कीनत आ के बेचत? एक बेर केनहुना बेच क' पूजी खा लेब, फेर समान कत' स' आओत? कतेको प्रश्न आ एसकर लालभाइ। कैक बेर ओहो अपन रुपैआ गमा क' खौंस लेलनि। मुदा हुनकर कयलहा बेकार नहि गेलनि। सन १९८२-'८३ मे ऐह विचार "भारती विकास मंच" नाम सँ संस्थागत रूप लेलक। कश्यप आ हुनक पत्नी शिवा, उग्र नारायण जी आ हुनकर बेटी शशिबाला — चारि गोटे सँ प्रारम्भ भेल ई संस्था बहुत जल्दी गाम-गमइ सँ लै देश भरि आ विदेश धरि, गोविन्दक कृपा सँ अद्यतन पसरिते जा रहल अछि।

भारती विकास मंच एकटा विद्यालयक रूप मे शुरू भेल; निरसल, वञ्चित, अवडेरल लोकक विद्यालय, सभ जाति आ धर्मक स्त्रीक लेल सुरक्षित कला-विद्यालय। चित्र सँ आखर, आखर सँ पोथी आ चित्रहि सँ कमाइ, पढ़ाइ आ कमाइ दुनू संङे।

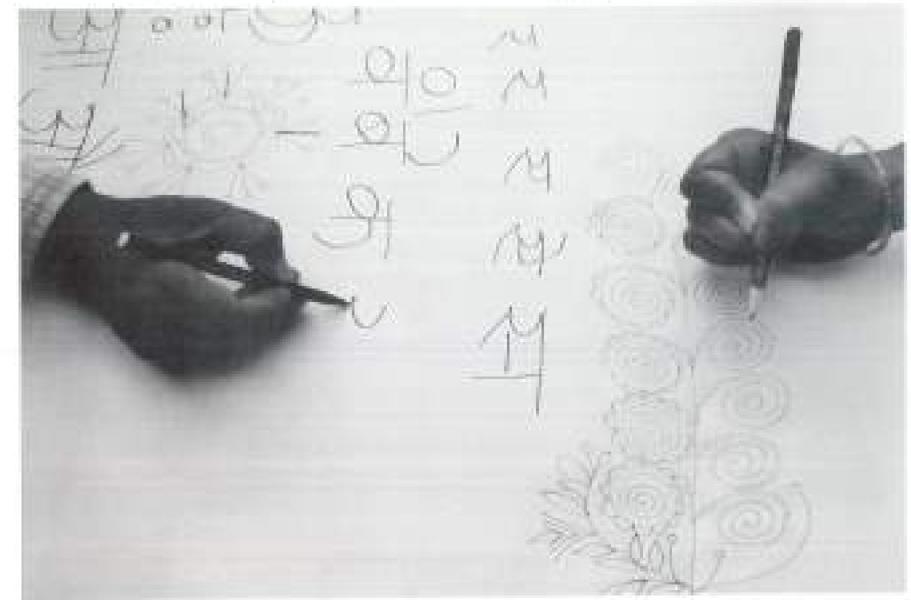


Photo: Alain Volut, Naples, Italy

लुरिगर छी वा अलूरि, पाइ किछु ने किछु अवश्य होयत। सभ स्त्रिगण, बारि-कुमारि घर सँ निकलू, दस डेग चलि क' संस्था आउ। जिनका जरह अछि, सरह पहीरि क' आउ। जिनकर नूआ फाटल अछि सेहो आउ; स्त' मुलकक साड़ी राखल अछि, देश भरि स' माङि-बटोरि क'। डेराउ नहि जे लोक हँसत। हँसि क' केओ की करत? जे हँसत से देत? सोचू। हँसनाहर की पेट चला देत? ठोपनी भरिक बच्चा के केओ दू कौड़ भात देत? तखन कथी ले' केकरहु स' डेराइत छी? बड़ करत त' केओ उधार-पैंच नहि देत, आओर की करत? ..... युग-युग स' ठाढ़ल स्त्री लोकनि छान तोड़ि क' बाहर निकलली। गोविन्दक कृपा! भारत भरि मे पहिल बेर लोकचित्र मे उपयोगितावाद (utilitarianism) घुसिआयल। उपयोगी फैशन आइटम, टेढ़-सोझ हाथे बनल टेबुलमैट, कुशन कवर, दोपट्टा, डिजाइनदार जैकेट, फिरन कश्मीरी, बिन्दास कुर्त्ता आ तसर मिटीरियल पर अरिपनवला साड़ी महानगर सभक फैशन-बिर्री मे उड़िआय लागल। रुपैआ ससरि क' शहर स' गामक रुख केलक।



जे कहियो पाइ नहि कमायल छलीह, ओ दस टकिआ भजब' लगलीह। एहन कहियो भेल नहि छल पहिने। स्त्रीकें मात्र घरक काज करयवला प्राणी बूझल जाइत छल। तें, गाम मे जे अपना कें कहवैका बुझैत छलाह, से सभ तिलमिला उठलाह। फफइदलाल सभहक पौंजि-पाग खसं' लगलनि। भारी उड़विण्डो मचि गेल। जे अपन छलाह, से वैरी भ' गेलाह; जे सङ्गी छलाह, से दुदिसिया भ' गेलाह। केओ कहय, हिनका सभ के बारि दिअ' त' केओ कहय, उजाड़ि दिअ'। गोविन्द, गोविन्द कहैत आगाँ बढ़ैत रहलहुँ। शिल्प-केन्द्रक पसार एक गाम स' बढ़ैत-बढ़ैत एकैस गाम धरि भ' गेल। एखनहुँ बहुत विरोधी जीवित छथि आ' हमहुँ सभ काज मे लागले छी, जमाना मुदा बदलि गेलइ। आइ सभ स्त्री आ बालिका पढ़इ ऐ, कमाइ ऐ, बुलइ ऐ। यद्यपि कि काज एखनहुँ अधखरुर अछि मुदा आइ स्त्री परावलम्बित रहि दुःख काटबा ले' बाध्य नहि अछि।

हम सभ जाहि तरहक "कला-आधारित पढ़ाइ-कमाइ"वला शिक्षा-पद्धतिक चलन केलहुँ, तेकर पाठ्य-पुस्तक कतहु उपलब्ध नहि छल। एहि तरहक सामग्री तैयार करबा ले' हमरा बहुत किछु देखबाक छल। एहि अनुभव मे कतेको वर्ष धरि उत्पादन, बाजार, कला-तथ्य आ पठनीयताक मिलान करब आवश्यक छल। पहिने हस्त-लिखित, तखन साइक्लोस्टाइल्ड पुस्तक निकाललहुँ, अन्ततः १९९५-९६ ई. सँ मुद्रित पुस्तक निकालबाक प्रक्रिया शुरू भेल। एखन धरि उत्पादन-डिजाइन आ' कला-तथ्यक अध्ययन सँ सम्बंधित चारि गोट पुस्तक —— माछ-भात, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१; मिथिला चित्र प्रवेशिका, भाग-१,२; मिथिला चित्र-कोर, भाग-३ आ उच्च साहित्यिक रचना मेघदूत प्रकाशित भ' चुकल अछि। सद्यः प्रकाश्य "मैथिली गीतगोविन्द" सेहो एही शृङ्खलाक एकटा पोथी अछि। आशा अछि, विद्वज्जन राधा-गोविन्दक प्रसाद बुझि एकरा स्वीकार करताह।

शशिबाला — कृष्ण कुमार कश्यप

२५ दिसम्बर, २००८

सन्दर्भ : पोथी-पाथेय

1. Barbara Stoler Miller, *The Gitagovinda of Jayadeva* ;
2. Upendra Thakur, *History of Mithila* ;
3. परमेश्वर झा, मिथिला तत्व- विमर्श ;
4. S.K. Chatterji, *Makers of Indian Literature* ;
5. M.S. Randhawa, *The Kangra paintings of the Gita Govinda* ;
6.,7.,8.,9, 10., 11.,12-14 Barbara Stoler Miller — ओतहि ;
15 सँ 21 धरि — Upendra Thakur, ओतहि ।



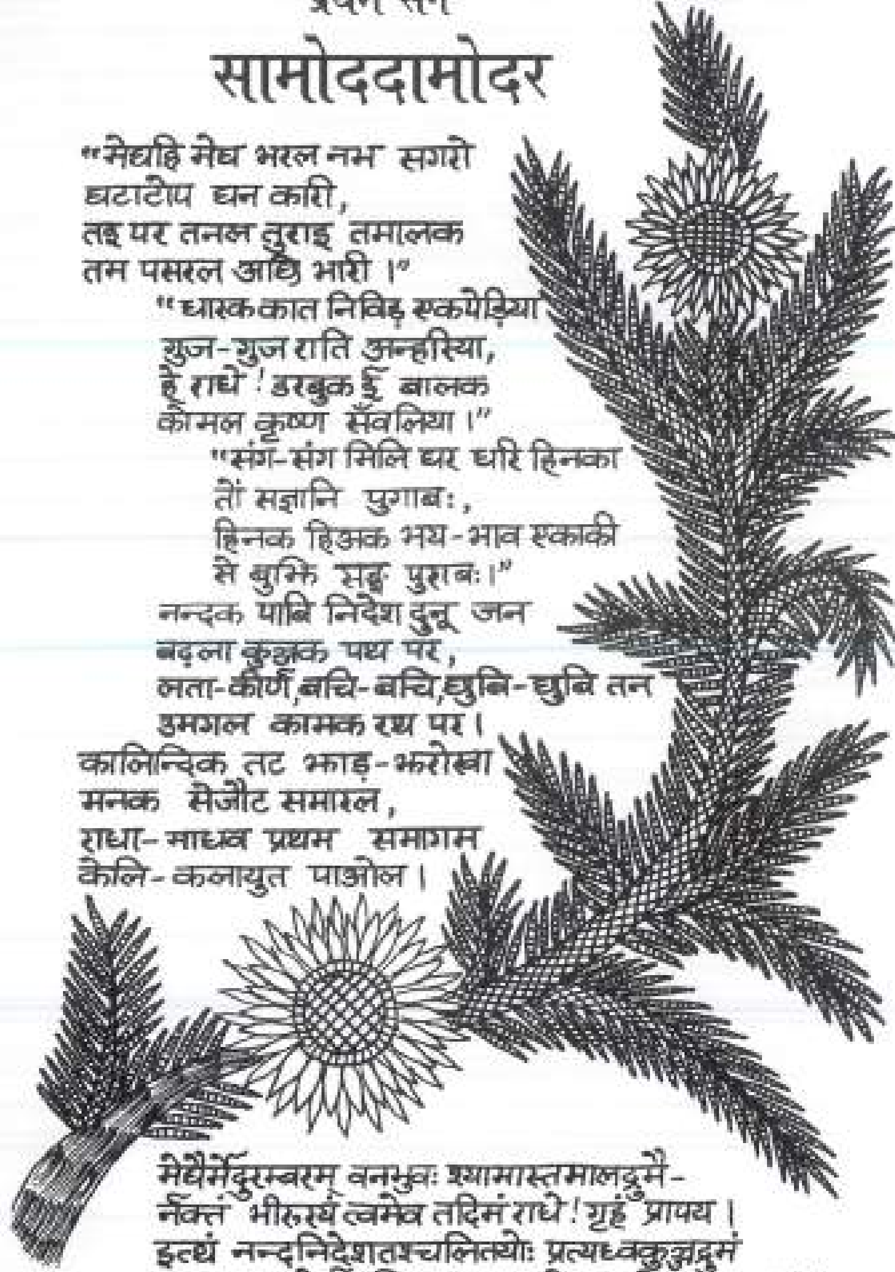
Photo: Alain Volut, Naples, Italy

भारती विकास मंच, बरहेताक "कला- आधारित पढ़ाइ-कमाइ" वला शिक्षा-पद्धतिक अवधारणाक मूल स्रोत मिथिला-कला अछि। एहि कला क पोर-पोर मे राधा- कृष्णकवास अछि। उदाहरणतः, देवोत्थान अरिपनक "राहि-दामोदर" (राधा-कृष्ण)क समायोजन राजा रामसिंहदेवक काल मे भेल जेकर स्रोत जयदेवक 'गीतगोविन्द' छल।



प्रथम सर्ग

सामोददामोदर



"मेघहि मेघ भरल नभ सगरो
घटाटोप घन करि,
तइ पर तनल तुराइ तमालक
तम पसरल अछि भारी ।"
"धारक कात निविड़ एकपेड़िया
गुज-गुज राति अन्हरिया,
हे राधे ! डरबुक ई बालक
कोमल कृष्ण सँवलिया ।"
"संग-संग मिलि घर धरि हिनका
तों सङ्गानि पुगाब:,
हिनक हिअक भय-भाव एकाकी
से बुझि सद्द पुराब: ।"
नन्दक पाबि निदेश दुनू जन
बढ़ला कुञ्जक पथ पर,
लता-कीर्ण, बचि-बचि, छुबि-छुबि तन
उमगल कामक रथ पर ।
कालिन्दिक तट झाड़-झरोखा
मनक सेजौट समारल,
राधा-माधव प्रथम समागम
केलि-कलायुत पाओल ।

मेघैर्मेदुरम्बरम् वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे ! गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुनाकूले रहः केलयः ॥ (१/१)



वाग्भवानी सदय कृपा कै
बसथु कविक मानस मे,
पुष्पित हो भावक नव कलिका
मञ्जरि नव पल्लव मे ।
कवि जयदेवक हृदय-निलय मे
वागीशक नित बासा,
तेँ रचलनि ओ सरस-कलामय
श्री-हरि-चरित-विलासा ।
पद्मावती-चरण-पद्मक जे
अनुरागी - अनुसेवी,
तिनका हित मंगल-शुभकारक
गीतगोविन्द कथा ई ।

वाग्देवता च रित चित्रित चित्तसद्मा
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती ।
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतम्
करोति जयदेव कविः प्रबन्धम् ॥ (१/२)



जिनका हरि-चर्चा मन-भावय
रुचय हरिक लीलावलि,
मधुर कोमल कान्त पदावलि
तिनका हित पुलकावलि।



यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।
मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेवसरस्वतीम्॥
(१/३)

प्रबन्ध १ : दशावतारकीर्तिधवल

प्रलयकाल मे जखन विश्व छल
डूबल अगम जलनिधि मे,
वेद चोरा हयग्रीव नुकायल
लीला ताहि अवधि मे।
केशव, धैलहुँ मीन-शरीर
जय जगदीश हरे!

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्
विहितवहित्रचरित्रमखेदम्।
केशव धृतमीनशरीर
जय जगदीश हरे! (१/४)

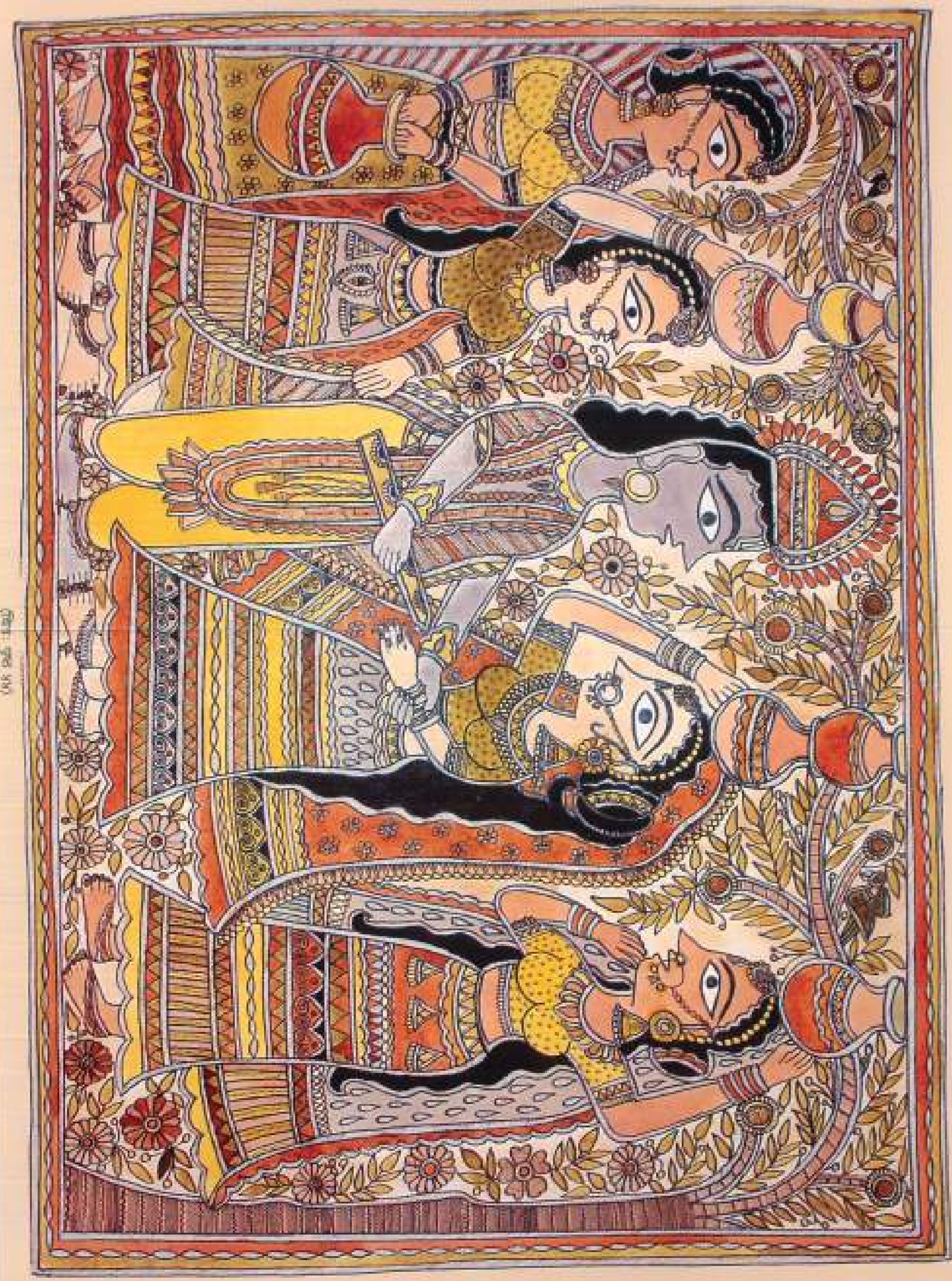


कत-कत बेर पीठ पर अपने
धारण कैल धरणि के,
तेकरहि घर्षण-चिन्ह अमिट बनि
अलंकार अद्भुत से।
केशव, धैलहुँ कच्छप रूप
जय जगदीश हरे!

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे।
केशव धृतकच्छपरूप
जय जगदीश हरे! (१/५)



(चित्र: पृष्ठ २५)



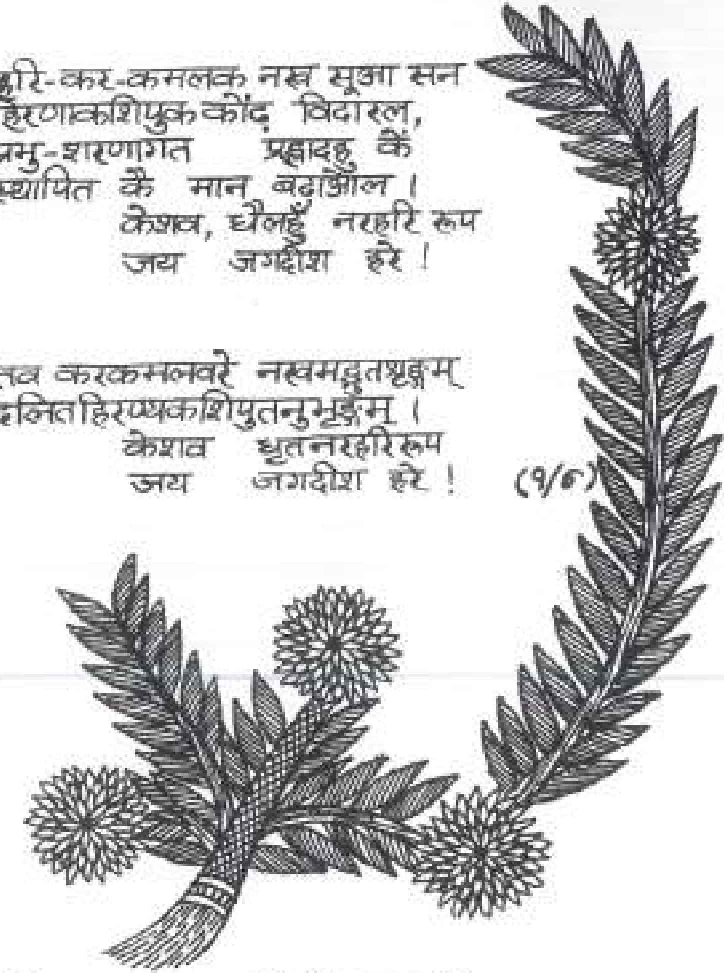
प्रलय अनन्तर, सृष्टि सँ पहिने
बीजरूप छलि धरणी,
हरण कैल हिरणाक्ष नुका कैं
पैसि पतालक खोन्हीं।
जानल हरि, फानल पयोधि मे
अपहर्ता कें मारल,
मुदित मही संग कैल समागम
सृष्टिक चक्र सुधारल।
दशन-शिखर पर बैसल वसुधा
सुन्दर लागथि ओहिना,
शशि मे निहित कलङ्क मनोहर
छवि पाबइ अछि जहिना।
केशव, धैलहुँ शूकर रूप
जय जगदीश हरे!



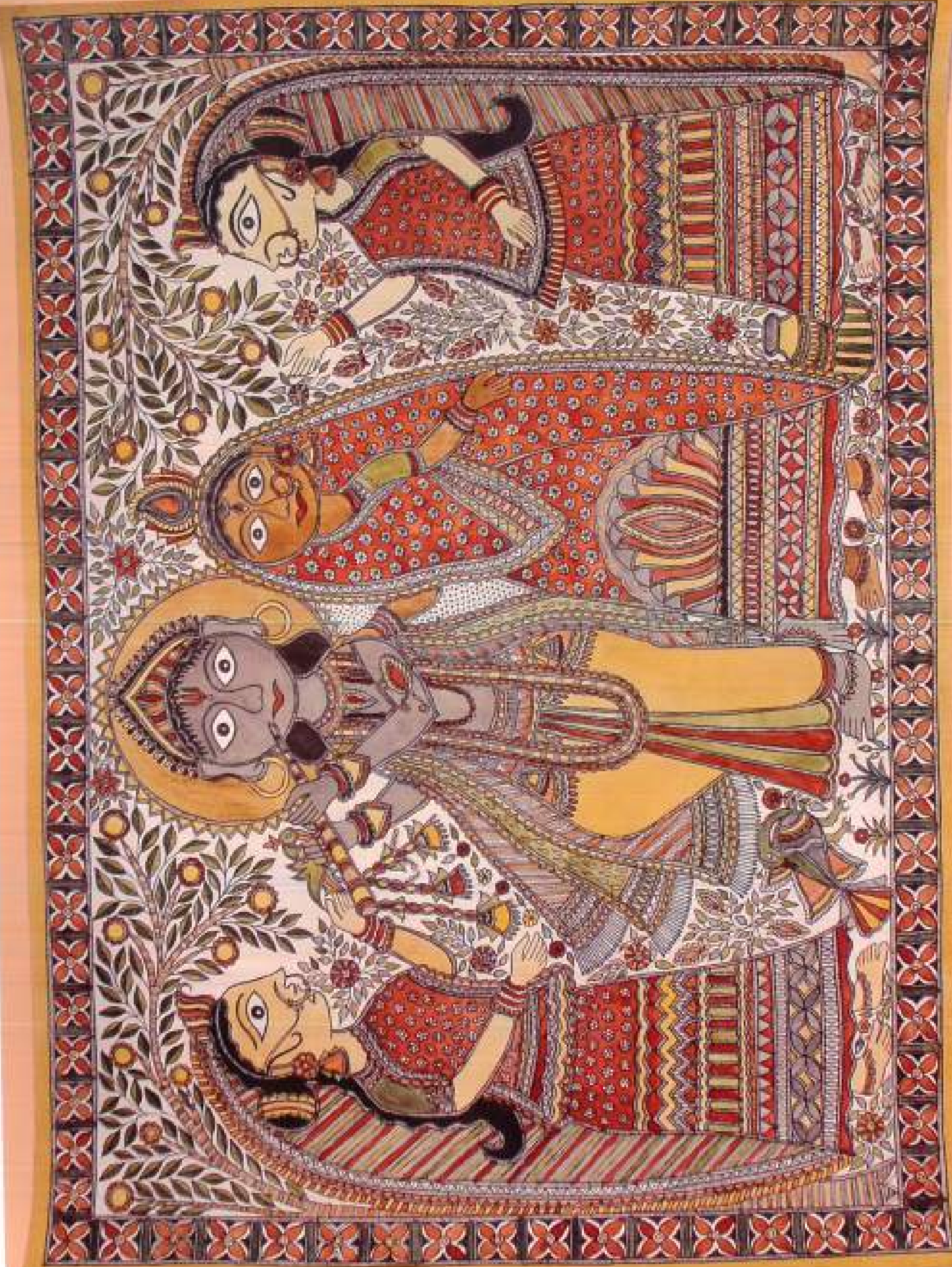
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना।
केशव धृतशूकररूप
जय जगदीश हरे! (१/६)

हरि-कर-कमलक नख सुआ सन
हिरणाक्शिपुक कोंढ़ विदारल,
प्रभु-शरणागत प्रह्लादहु कें
स्थापित कै मान बढ़ौलन।
केशव, धैलहुँ नरहरि रूप
जय जगदीश हरे!

तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम्।
केशव धृतनरहरिरूप
जय जगदीश हरे! (१/७)

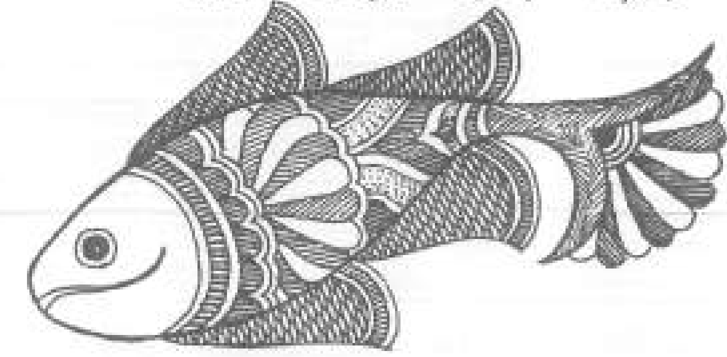


हरिक चरण-नख-निर्गत जल सँ
भेल पवित्र त्रिलोक पुरातन,
तीन डेग मे नापि त्रिपुर हरि
ठकलनि बलि कें मैथिल ठक सन।
केशव, धैलहुँ वामन रूप
जय जगदीश हरे!
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन
पदनखनीरजनितजनपावन।
केशव धृतवामनरूप
जय जगदीश हरे! (१/८)



क्षत्रिय रुधिरक धार बहा कैं
भक्तक भव-भय ताप हरइछी,
राजनीति मे आयुध-बल पर
तप-बल-शस्त्रक नेओं धरइछी।
केशव, धैलहुँ भृगुपति रूप
जय जगदीश हरे!

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्।
केशव धृतभृगुपतिरूप
जय जगदीश हरे! (१/८)

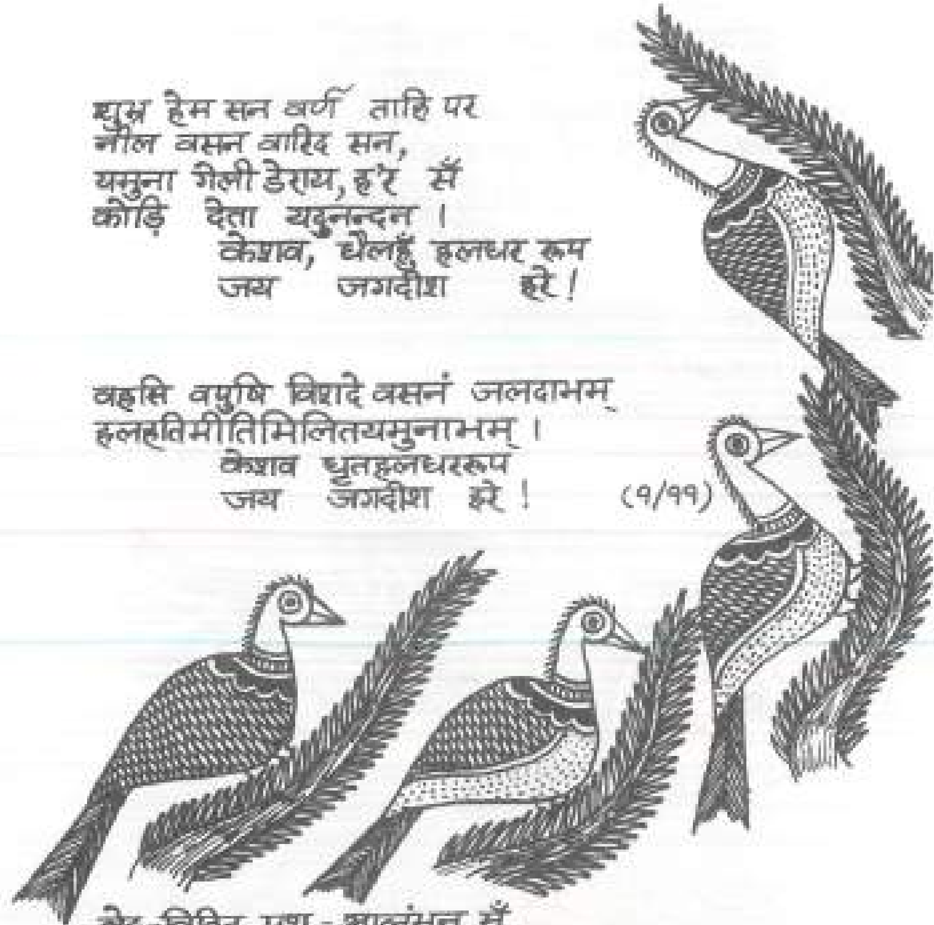


दशमुख रावण बड़ अगिमुतू
दशदिक्पालक चैन हेरैलनि,
समर-भूमि मे दसो दिशा कैं
रावण-सीसक बलि चढ़ैलनि।
केशव, धैलहुँ रामक रूप
जय जगदीश हरे!

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्।
केशव धृतरामशरीर
जय जगदीश हरे! (१/१०)

शुभ्र हेम सन वर्ण ताहि पर
नील वसन वारिद सन,
यमुना गेली डेराय, हरे सँ
कोड़ि देता यदुनन्दन ।
केशव, धैलहुँ हलधर रूप
जय जगदीश हरे !

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम्
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ।
केशव धृतहलधररूप
जय जगदीश हरे ! (१/११)



वेद-विहित पशु-आलंभन सँ
दया हृदय मे ऐलनि,
ई अनुचित थिक, धर्महानिकर
वैदक निन्दा कैलनि ।
केशव, धैलहुँ बुद्ध-शरीर
जय जगदीश हरे !

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम्
सदयहृदय दर्शित पशुघातम् ।
केशव धृतबुद्धशरीर
जय जगदीश हरे ! (१/१२)

जखन उपद्रव बढ़ल म्लेच्छक
धारण कैल कृपाण,
धूमकेतु सन लपलप चमकय
कैलहुँ धर्म-निदान ।
केशव, धैलहुँ कल्कि-शरीर
जय जगदीश हरे !

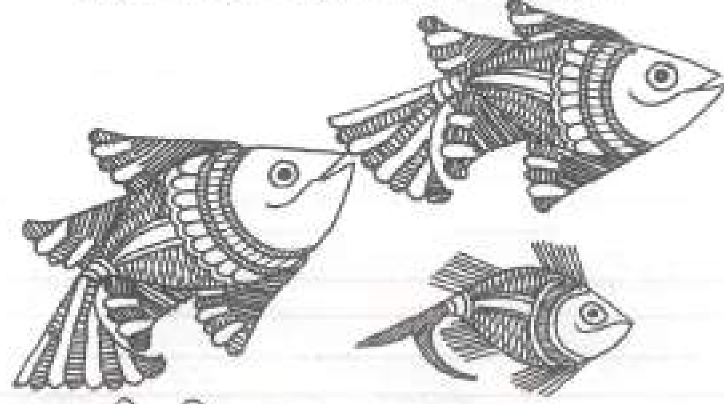
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव धृतकल्किशरीर
जय जगदीश हरे ! (१/१३)



हे हरि, श्रीजयदेव कविक ई
सुखद शुभद सुनु रचना,
भवसागर सँ पार कराबय
रसिक जनक हो गहना ।
केशव, धैलहुँ दशविधरूप
जय जगदीश हरे !

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम्
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव धृतदशविधरूप
जय जगदीश हरे ! (१/१४)

वेदोद्धारक जगतिक पालक
भूमण्डल उद्धारक,
श्रीहरि हरिणाकशिपु - विदारक
बलि - छल - कल - भल कारक ।



क्षत्रि - विनाशक रावण - घातक
हलधर करुणा - धारक,
म्लेच्छ - विनाशक नमो नमो हरि
जय गोविन्द कृपांकर ।



वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥
(१/१५)

प्रबन्ध २ : हरिविजय

श्री- कुच- मण्डल - आश्रित
कुण्डल-शोभित ए ।
कलित ललित वनमाल
जय जय देव हरे !
दिनमणि - मण्डल - मण्डन
भवदुःख - भञ्जन ए ।
मुनिजन - मानस - हंस
जय जय देव हरे !



श्रितकमलाकुचमण्डल
धृतकुण्डल ए ।
कलितललितवनमाल
जय जय देव हरे ॥ (१/१६)

दिनमणिमण्डलमण्डन
भवखण्डन ए ।
मुनिजनमानसहंस
जय जय देव हरे ॥ (१/१७)

कालियविषधरगञ्जन
जनरञ्जन ए।
यदुकुलनलिनदिनेश
जय जयदेव हरे ॥ (१/१८)

मधुमुरनरकविनाशन
गरुडासन ए।
सुरकुलकेलिनिदान
जय जय देव हरे ॥ (१/१९)

अमलकमलदललोचन
भवमोचन ए।
त्रिभुवनभुवननिधान
जय जय देव हरे ॥ (१/२०)

जनकसुताकृतभूषण
जितदूषण ए।
समरशमितदशकण्ठ
जय जय देव हरे ॥ (१/२१)

अभिनवजलधरसुन्दर
धृतमन्दर ए।
श्रीमुखचन्द्रचकोर
जय जय देव हरे ॥ (१/२२)

तव चरणं प्रणता
वयमिति भावय ए।
करु कुशलं प्रणतेषु
जय जय देव हरे ॥ (१/२३)

श्रीजयदेवकवेरिदं
कुरुते मुदम् ए।
मङ्गलमुज्ज्वलगीतं
जय जय देव हरे ॥ (१/२४)



पद्मावतिक पयोधर तट पर
स्वर्णिम घुम्हक दार भाग पर
स्खल सुचन्दन- केसर अङ्गर
मधुसूदन कामक उफान पर।
स्वन उद्रेकक गहन जाल पर
प्रस्वासक बिड़रो पलार पर
श्रम-सीकर-कण दिप्त भाल पर
श्री-माधव युगनद्ध ताल पर।
आलिंगन-मर्दन-परिरम्भन
स्वासक लय उच्चावच क्षण-क्षण
कण-कण उन्मन
उर्म्मिल मधुमन।
लखयथ हरि
लछमी मुसुकैली
छाप वक्ष पर
देखि जुड़ैली।
अँकुरायल मृदु अधरक कोनी
आँखिक काजर टघरल मुसुके
डिमहा कहल 'व्यक्तानुरागमिव'
अरुणिम आभा छाँहि राहि के।



पद्मापयोधरतटीपरिरम्भलग्न-
काश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्गखेद-
स्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रियं वः॥ (१/२५)

सिसकि शीर्ण भै शिशिर बिदा भेल
पाला ससरि पताल पड़ायल,
कहुआयल गाछक फुनगी पर
मधुमासक नट आबि तुलायल।
लता-गुल्म मे फुटल कनोजरि
लाल-लाल डुस्सा बहरायल,
पुक्की देलक कतहु दोग सँ
अगिलटेंट कोइली कुकुआयल।
"जाग्नु ए, अनुराग-तरङ्गिनि
युवति-नवोढ़ा, ऋतुपति-भामिनि
कत' सुतल छी, केहन नीन अछि?
धुरखुर ठाढ़ि सखी मधु-यामिनि।"
सुगबुगायल वासन्तिक काया
हाफी लेल अलस भसिआयल,
सिहकल मन्द बसात सुगन्धिक
बिरहि जनक लिप्सा भरिआयल।
बेकल भेली वृषभानु-लली
सन्ताप बढ़ाबय नव-नव बाधा,
प्रथम समागम स्मृति टीसय
कामक ज्वर सँ तबधलि राधा।



वन-वन फिरथि कतहु नहि पाबथि
ठौर-ठौर पर बैसि गमौली,
भेलि बताहि हकासल बूलथि
झामरि देह सिङार नेरैली।
नैन थीर नहि ज्ञान थीर नहि
उचटल हिअ भसिऔली,
मन मानै नहि तन हारै नहि
असोथकित भै खसली।
दौड़लि सखी कतहु कानन सौं
विविध भाँति परबोधल,
बोल-भरोस तरास मेटाबय
प्राण कतहु सँ जोड़ल।



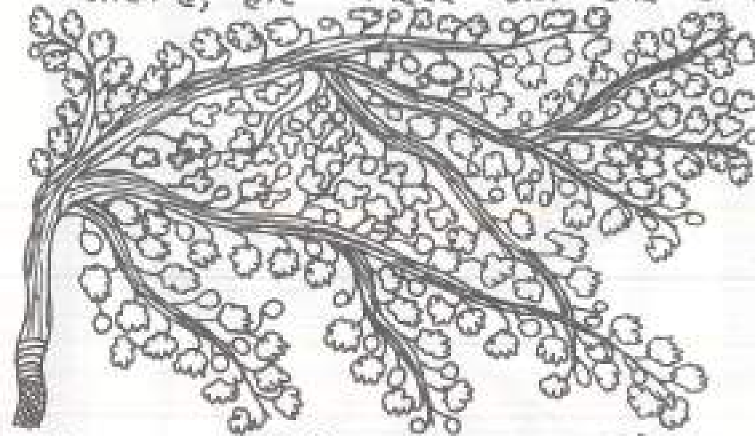
वसन्ते वासन्तीकुसुमसुकुमारैरवयवै-
र्भ्रमन्तीं कान्तारे बहुविहितकृष्णानुसरणाम्।
अमन्दं कन्दर्पज्वरजनितचिन्ताकुलतया
चलद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी॥ (१/२६)

प्रबन्ध ३ : माधवोत्सवकमलाकर

ललित लवंग लता कें छुबि-छुबि
दुगुन बास मलयानिल,
मह-मह सुरभि दसो दिस पसरल
उनटल गंधक पातिल।

हेंजक हेंज मधुप रस-मातल
गाबय जौं बौरायल,
ताल ठोकि कोइली कुकुआबय
कुञ्ज-भवन गौञ्जायल।
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ!

सरस वसन्त समय रति-रञ्जक
स्वप्निल सहज निरामय,
तहिना विरहि-हृदय घतघालक
जुनि ई रोग बेसाहय।
युवतिजन उमगि नचइ छथि जइ ठाँ।
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ॥



ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे
मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुञ्जकुटीरे।
विहरति हरिरिह सरसवसन्ते
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि, विरहिजनस्य दुरन्ते॥(१/२६)

जिनकर पति परदेस विराजय
से वनिता विरही दुख पाबय,
सिसकि-सिसकि खन ठेहि पाड़ि कै
बिलपि अहुरिया काटय।
उन्मद मदन मनोरथ जगै,
बकुल पर लुबधल भौंरा जइ ठाँ!
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ!

उन्मदमदनमनोरथपथिकवधूजनजनितविलापे।
अलिकुलसङ्कुलकुसुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते॥ (१/२८)



नव किसलय दल नवल तमालक
ललित माल्य सन लागय,
मृगमद सौरभ कस्तूरी सन
गन्ध तेकर भरमाबय।
टुहटुह लाल पलासक कुड्मल
बंकिम बनसी कामक,
गंधक मातल युवजन-वृन्दक
हृदय विदारय घातक।
मनसिज सदल डटल छथि जइ ठाँ,
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ!

मृगमदसौरभरभसवशंवदनवदलमालतमाले।
युवजनहृदयविदारणमनसिजनखरुचिकिंशुकजाले॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते॥ (१/२९)

स्वर्ण-छत्र सन पीअर चम्पा
अग-जग बहुरि फुलायल,
कनक-दण्ड लै मदन महीपति
लागय आबि तुलायल।
चौदक चौद गुलाब फुलायल
तइ पर भौंरा सीहरल
कामदेव रति-रण करबा लै'
तीर-तूणीर सम्हारल।

मगन मन रस भीजइ आछि जइ ठाँ,
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ!

मदनमहीपतिकनकदण्डरुचिकेशरकुसुमविकासे।
मिलितशिलीमुखपाटलपटलकृतस्मरतूणविलासे॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते॥ (१/२०)



विगलित चित विरहि नव नागरि
तजि लज्जा नित हुकरय,
नेबो फूल फुलायल लदबद
दशा देखि टिटकारय।
केतकी फूलक नोक टाकु सन
हृदय बेधइ आछि जइ ठाँ,
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ!

विगलितलज्जितजगदवलोकनतरुणकरुणकृतहासे।
विरहिनिकृन्तनकुन्तमुखाकृतिकेतकदन्तुरिताशे॥ (१/२१)

नव नव बेलिक लतिका उमरल
गिरह-गिरह पर कनखुर ओबरल,
तीतल-उष्ण बसातक सिहरन
सनसनाइत रग उधकल उपगल।

सिहरल लतिक गत्र सगर्भा
वृन्तक रेह कने सँकुचायल,
भोंभरि मे अलगल रस-कोनी
नहुने-नहुने पम्ही जागल।

अधखिज्जू छुइरी नव कलिका
छुआनि बसातक, मुँह अलगौलक,
चनकल दलक ओदार सिहरि कै
सिमसिमायल रस, गन्ध घमौलक।

सुरति ताल पर मन्द गन्धवह
बाकुट मे भरि सुरभि उधायल,
नेओंतल मधुकर-निकर निकुञ्जक
बनल उदार दहोदिस बिलहल।

छमकि उठलि सहसा वन-सुन्दरि
हमहूँ करब सिङार अमनिआँ,
परिमल सँ सिखार उघारब
पटबासव आनन सिर नहिआँ।

छली केतकी कान पाथने
तखन बान्हि कोनाठ अधोखा,
लपकलि बारि-कुमारि उमकि कै
खोंच लागि फाटल रसकोका।

उदमत खसलि उतान केतकि
छिरिआयल रस-गन्धक बुकनी,
लाजें निहुरि सम्हारल नीवी
रस-कुम्भरि कें भीजल पियनी।

माधविका-परिमल सँ पोषित
नवमलिका सँ सुरभित,
मादक भेल वसन्त घनेरो
मुनि-मन सहित सुमोहित ।

युवजन नेओंतै जतै मिताइ,
उमगल यौवन कण-कण जइ ठाँ !
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ !!

माधविकापरिमलललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबन्धौ ।।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ।। (१/३२)



वायु-वेग सँ चञ्चल लतिका
माधवीक उमतायल,
आलिङ्गन मे बान्हि आमके
चूमल, गाछ फुलायल ।

यमुना तट पर वृन्दावन मे,
युवति अनेको रमसै जइ ठाँ !
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ !!

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरम्भणमुकुलितपुलकितचूते ।
वृन्दावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ।।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ।। (१/३३)



श्रीजयदेव प्रणीत सुमङ्गल
मधुरिम प्रीतिक चर्चा,
रसमय काम-कला वन-वर्णन
श्री-पद पूजा-अर्चा ।

मुदित मन माधव गोपिक संग,
सुचञ्चल रम्य वनाञ्चल जइ ठाँ !
सखि हे, हरि विहरइ छथि ओइ ठाँ !!

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति हरिचरणस्मृतिसारम् ।
सरसवसन्तसमयवनवर्णनमनुगतमदनविकारम् ।।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ।। (१/३४)



अलबेली बेली कठबेली
सुहब केतकी छैल-छबीली,
पहिरि बसन वासन्ती झिलमिल
सुरभि-सुगन्ध लुटाबय चलली।

पवन उताहुल बनल समदिआ
सूतल ऋतुपति, टोकि जगौलक,
भकुआयल भौंरा भनसीआ
आगाँ-आगाँ बाट देखौलक।

जगला ऋतुपति मनसिज जागल
पहिरि-ओढ़ि रसवन्ती आयल,
विरह-वेदना सिरकी तोड़ल
घोघ तानि कें लाज पड़ायल।

कामक रथ पर बैसल मधुपति
छोड़ि कुसुम-शर दसदिक बेधल,
लाल पलासक दावानल सँ
सगरो विश्व-वनांचल घेरल।

उठल उजाहि युवामन-सर मे
इच्छा-मीन उछलि उमतायल,
चलल वसन्त सिकार करइ ले
विरहीजन तापें मुरछायल।



दरविदलितमल्लीवल्लिचञ्चत्पराग-
प्रकटितपटवासैर्वासयन्काननानि।
इह हि दहति चेतः केतकीगन्धबन्धुः
प्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्धवाहः॥
(१/३५)

सखि हे, समय कठिन विरही के।
वन-वन सुमन अलेल फुलायल,
चम्पक कुन्द कली के॥ सखि हे....
बहय समीर सुगन्धि सनायल,
मह-मह बास मही के।
तुइ तुइ मह मकरन्द समारल,
अरिपन प्रेम-गली के॥ सखि हे....
नेबो-नीम चढ़ल महफा लै,
अक्षत चूमि दही के।
अमलतास पटमाइस करइ अछि,
सुभगे भालसरी के॥ सखि हे....
आमक डाढ़ि लदल मज्जर सँ,
मधुमक्षी कें नीके।
खुरखुच्ची भौंरा ढुसकौलक,
रस-भैरवि कोइली के॥ सखि हे....
सुमनक अङ्क विदारि शिलीमुख,
गुङुआबय पिपही के।
पञ्चम सुर मे कोइली गाबय,
सोहन धुन तुरही के॥ सखि हे....
सरस वसन्त पुरुष परदेसी,
फाँस पड़ल सिकड़ी के।
कामक ज्वर सँ कंत पड़ै नहि,
टीसय विष सिङ्ही के॥
सखि हे, समय कठिन विरही के॥



उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कुर-
क्रीडत्कोकिलकाकलीकलरवैरुद्गीर्णकर्णज्वराः।
नीयन्ते पथिकैः कथङ्कथमपि ध्यानावधानक्षण
प्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः॥ (१/३६)

सखि हे, जुनि बनु विरह-बताहि !
युवति अनेक घेरल माधव के
भुज-बन्धन मे बान्हि !
सखि हे, जुनि बनु विरह-बताहि !!
क्यौ मुख चूमै मुँधै छूबै
क्यो सिर-गात हँसोथय,
बहुविधि प्रेम प्रकाशय गोपिनि
क्यौ हरि कैं अँकबाथय।
चलू, ओतहि देखब सभ लीला
हिअ नहि धारू आहि,
सखि हे, जुनि बनु विरह-बताहि ।।

अनेक नारीपरिरम्भसम्भ्रमस्फुरन्मनोहारिविलासलालसम् ।
मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ सखी समक्षं पुनराह राधिकाम् ।।
(१/३६)

चन्दन-चर्चित नीलकलेवर
पीतवसन मधुसूदन,
सौरभयुत वनमाल ग्रिवा मे
मणिकुण्डल द्युति-दोलन।
मुक्त मगन मुग्धा वनिता सभ
हरि संग रमण करइ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि।।

प्रबन्ध ४ : सामोददामोदरभ्रमरपद

चन्दनचर्चितनीलकलेवरपीतवसनवनमाली ।
केलिचलन्मणिकुण्डलमण्डितगण्डयुगस्मितशाली ।।
हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनी विलसति केलिपरे ।। (१/३८)

हास्य-सिङार रसक समतुल्यहि
मध्य ताल पञ्चम मे,
हरि गाबथि रसवति अनुभासथि
सुर-लय गति संयम मे।
पीन पयोधर भार-समर्पण
गोपिनि पाँज कसइ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि।।

पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् ।
गोपवधूरनुगायति काचिदुदञ्चितपञ्चमरागम् ।। हरिरिह....
(१/३९)



कात ठाढ़ि क्यो मुग्धा रसिका
लाजेँ सिकुड़ि रहल अछि,
अन्तस मे मन्मथ-मन्थन सँ
तिल-तिल पिघलि रहल अछि।
एक ताल सँ ताकथ मुँह पर
हरि लोचन काढ़इ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि।।

कापि विलासविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम् ।
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजम् ।।हरिरिह....
(१/४०)

लाथ लगा क्यो कनफुसकी के
अधर श्रवण दिस बढ़बय,
लपलप कम्पित ठोर कँपालक
मधुरामृत रस पीबय ।
चुम्बन सँ मातल नितम्बिनी
मधु मे चुभुकि रहल छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥

कापि कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले ।
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले ॥
(१/४१)

कोनो अधीरा धोतिक कोंचा
धै बल सँ घीचइ अछि,
यमुनाजल-तट रम्य घाट पर
स्वरस रभसतीतइ अछि ।
रतिरण-हारल प्रणय-रथी सन
रसनिधि भासि रहल छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥



केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमुनाजलकूले ।
मञ्जुलवञ्जुलकुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले ॥ (१/४२)

रासक वृत्त रचल मणि-मण्डल
अरिपन जेना कमलदह,
विविध वाद्य मुरलीकतान पर
करतल-कङ्कन धुनसह ।
बँसुरी-स्वर पर थपड़ी तालक
मेल सराहि रहल छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥

करतलतालतरलवलयावलिकलितकलस्वनवंशे ।
रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे ॥ हरिरिह ... ..
(१/४३)

खन केकरो आलिङ्गन बान्हथि
तखनहि चुम्बन केकरो,
केकरो संग रमण-रत माधव
पाछु धरइ छथि केकरो ।
रूसय कोनो रूपगर्विता
तेकरो पुनि मनबइ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥

श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामाम् ।
पश्यति स स्मितचारुतरामपरामनुगच्छति वामाम् ॥ (१/४४)

श्रीजयदेव कैल उद्घाटन
केशव-केलि रहस्यक,
वृन्दावन मे ललित विलासक
वर्णन रास वसन्तक।
हो कल्याण सुखद शुभकारक
जे क्यो ई गाबइ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥

श्रीजयदेवभणितमिदमद्भुतकेशवकेलिरहस्यम् ।
वृन्दावनविपिने ललितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् ॥हरिरिह..
(१/४५)

आगत मास वसन्त समय भल
जगदानन्द उदेसे,
सकल शृङ्गार देह धारि कै
अवतरला हरि-वेशे ।
नीलकमल सन सुन्दर कोमल
अंग-समूह श्रीकृष्णक,
व्रजललना चुम्बन कै पाओल
दिव्य कृपा हरि-चरणक ।
सखि हे, आब उचित नहि देरी,
माधव लगबथि विपिनक फेरी ॥

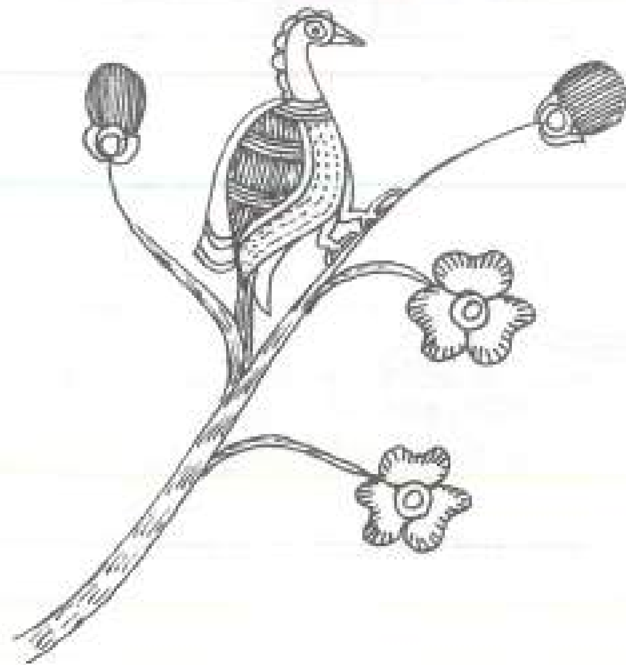
विश्वेषामनुरञ्जनेन जनयन्नानन्दमिन्दीवर-
श्रेणीश्यामलकोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्सवम् ।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरीभिरभितः प्रत्यङ्गमालिङ्गितः
शृङ्गारः सखि ! मूर्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥ (१/४६)

मलयाचल मे चन्दन-तरु पर
सटल भुजङ्ग रहइ अछि,
मलयपवन कै हनकि हँपसि कै
नित्य विषाह करइ अछि ।
विष तापें तबधल मलयानिल
चैलक बाट हिमालय,
देखि आम पर मज्जर उमरल
कोइली कू-कू बाजय ।
सखि हे, कामक सुनु रण-भेरी
माधव लगबथि विपिनक फेरी ॥



नित्योत्सङ्गवसद्भुजङ्गकवलक्लेशादिवेशाचलं
प्रालेयप्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्डशैलानिलः ।
किं च स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्यालोक्य हर्षोदया-
दुन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः ॥
(१/४७)

सखिक वचन के सहि नहि सकली
विरहोत्कण्ठित राधा,
डेग बढ़ा पहुँचलि माधव लग
ठेलि सकल हित-बाधा ।
"गीत अहाँ बड़ मोहक गौलहुँ"
कहली कान-समीपे,
रोच-रोख धकियौलनि मन सँ
चूमल प्रेम-महीपे ।
भुज-बन्धन मे प्रेम-वियोगिनि
राधा सुख पाबइ छथि,
माधव मन्द-मन्द मुसुकइ छथि ॥



रासोल्लासभरेण विभ्रमभृतामाभीरवामभ्रुवा-
मभ्यर्णं परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया ।
साधु त्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति
व्याजादुद्भटचुम्बितः स्मितमनोहारी हरिः पातु वः ॥ (१/४८)

दोसर सर्ग

अक्लेशकेशव

केशव छथि अकलेश
विराजथि सभहक मन मे,
नहि हुनका मे दोष
बिलासथि सभहकतन मे ।
जेना सूर्य नहि मिलथि
कदाचित तम-जड़ता सँ,
तहिना हरि निरपेक्ष
वासना द्वेष मोह सँ ।
कर्म नियम परिणाम
न कनिञो हुनका छुबनि,
पुरुषोत्तम भगवान
जगत हुनके मे डूबनि ।
ओ सभहक छथि परम
प्रकृति-गुण संश्लेष नहि,
माधव पुरुष-विशेष
हुनकर क्यो विशेष नहि ।
छली विरह मे विकल
राधिके, सखि परबोधल,
कैलनि मन मे होस
रोखकें मन सँ मोचल ।
मदनोत्सव के बादि
युवति स्वच्छंद रमइ छलि,
प्रेमान्हर भै राहि
दिनादिष्टी चूमइ छलि ।
राधा मन मे भेद
हमहीं सभ सँ सुन्दरि,
हम्हीं प्राणक स्वाद
हुनकर नित्यक सहचरि ।
समदर्शी भगवान
ध्यान विशेष ने देलनि,
राधा भेलि रिसिआय
छोड़ि उत्सव चलि देलनि ।

मदनोत्सव मे गोपवधू सभ
मुक्त मगन किलकइ छलि,
एक सँ एक परम सिरखाम्रक
गुण-आगरि बिलसइ छलि ॥
क्यो केकरो स' द्वेष करै नहि
नहि केकरो दिठिआबय,
एकहि धरातल सभ क्यो नाचय
सभ कें सब हरखाबय ॥
सभ जनि मोहित सभ अनुमोदित
सकल समान सुहासिनि,
नहि क्यो ऊँच नीच नञि क्यो छलि
माधव-प्रिय सभ मानिनि ॥
राधा मन मे रोच एकरबड़
हरि विशेष नहि बुझलनि,
हमरो बुझला निपट गुआरिनि
पथ मे कूही फेटलनि ॥
मानक हानि अति बुझि राधा
सखिक संग बहरैली,
सभ स' नजरि बचा झोंझरि मे
उपवन अन्य नुकैली ॥
ओतहु बसन्तक वैह दृश्य छल
ओहने पवन सोहाओन,
डाढ़ि-डाढ़ि पर पंछी कुरय
वासन्तीक चुमाओन ॥
ईर्ष्या सँ आकुल रूसल धनि
भागि एत' चल आयली,
हरि सँ विलग असह दुःख, सखि कें
गोपन भेद बतैली ॥

विहरति वने राधा साधारणप्रणये हरौ
विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्यावशेन गता'न्यतः ।
क्वचिदपि लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रतमण्डली -
मुखरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहः सखीम् ॥ (२/१)

प्रबन्ध ५ : मधुरिपुरत्नकण्ठिका

सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि !
अधरसुधा-रस पीबय मुरली
तें एतबा मोदक अछि,
जौं-जौं ध्वनि पइसय श्रुति-मण्डल
सुधि-बुधि मति रोधक अछि ।
पहिने हरि मुरली-वादन कें
सुर-मरछाउर छिटइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि !
सुर सरगम संग दृग-परिचालन
मौलि-कपोल सुचञ्चल,
मोहन-वशीकरण अभिचारय
सुनि स्तम्भित अञ्चल ।
बँसुरी धुन सँ नट मधुसूदन
टोना कोनो करइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि !

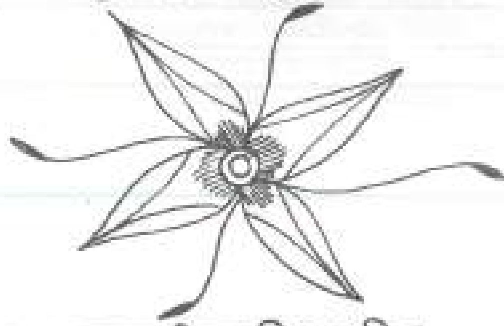
सञ्चरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशम् ।
चलितदृगञ्चलचञ्चलमौलिकपोलविलोलवतंसम् ।
रासे हरिमिह विहितविलासम्
स्मरति मनो मम कृतपरिहासम् ॥ (२/२)

मोरपाँखि- चन्द्रक मे मिजहर
औंठिया केसक कुन्तल,
कुण्डलयित भै इन्द्रधनुष औं
द्युति छिटकइ अछि अविरल ।
मेघ- मनोहर वेश मनोरम
मन सँ नहि बिसरइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि !

चन्द्रकचारुमयूरशिखण्डकमण्डलवलयितकेशम् ।
प्रचुरपुरन्दरधनुरनुरञ्जितमेदुरमुदिरसुवेशम् ॥ रासे... (२/

मधुकोषा मभ्फ ललित नितम्बिक
पुनि-पुनि अधर चुमइ छथि,
दुहदुह लाल अधर दुपहरिया
फूलक भास हरइ छथि।
अधराधर पल्लव पर स्मिति
मदिर मधाइ रचइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!

गोपकदम्बनितम्बवतीमुखचुम्बनलम्भितलोभम् ।
बन्धुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसितस्मितशोभम् ॥ रासे...
(२/४)



भुज-पल्लव रोमावलि पुलकित
सहस नारि परिरम्भन,
मणिमय भूषण बाँहि-वक्ष-कर
हरय तिमिर तम प्रतिक्षण।
केलि-तरङ्ग भुजा-सञ्चालन
जगमग ज्योति भरइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!

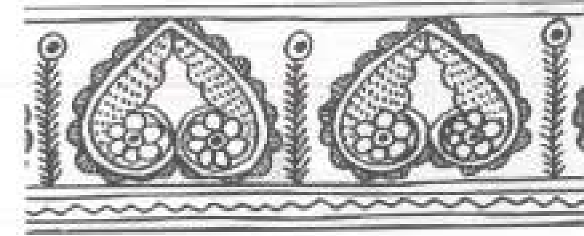


विपुलपुलकभुजपल्लववलयितवल्लवयुवतिसहस्रम् ।
करचरणोरसि मणिगणभूषणकिरणविभिन्नतमिस्रम् ॥ रासे....
(२/५)

उन्नत भाल तिलक अनुरञ्जित
शुभ्र ज्योत्सना-मण्डित,
जलद-पटल अधझाँपल चानक
ज्योति करइ अछि खण्डित।
कठिन कठोर हृदय बनि माधव
पीन-पयोद मथइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!

जलदपटलचलदिन्दुविनिन्दकचन्दनतिलकललाटम् ।
पीनपयोधरपरिसरमर्दननिर्दयहृदयकपाटम् ॥ रासे...
(२/६)

मकराकृति मणिमय दुइ कुण्डल
शोभा चारु कपोलक,
पीत वसन धारल पीताम्बर
बरबस मन उद्वोलक।
एहि रूपक रस-लोलुप जे जन
सेहो परिवार भनइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!

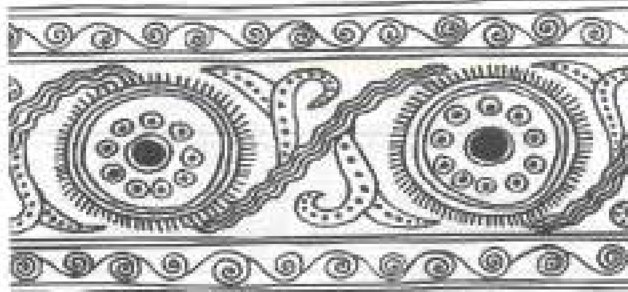


मणिमयमकरमनोहरकुण्डलमण्डितगण्डमुदारम् ।
पीतवसनमनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारम् ॥ रासे...
(२/७)

विशद कदम्बक छाँहि बैसि कै
मुनिजन दरस करइ छथि,
श्रीभगवानक संग निरापद
कलि-कल्मष भगबइ छथि।
गुणिजन-साधु करथि हरि-वन्दन
हरि हमरा ताकइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!

विशदकदम्बतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयन्तम्।
मामपि किमपि तरलतरङ्गदनङ्गदृशा मनसा रमयन्तम्॥ रासे...
(२/८)

श्रीजयदेव मधुर मति गाओल
हरि-गुण गाबि सुनाओल,
मधुरिपु-रूप सकल भय-नाशक
कवि पुण्यक पद पाओल।
रास-समय चञ्चल पद-पङ्कज
लीला अजब करइ छथि,
सखि हे, रास मे हरि बिलसइ छथि!



श्रीजयदेवभणितमतिसुन्दर मोहनमधुरिपुरूपम्।
हरिचरणस्मरणं प्रति सम्प्रति पुण्यवतामनुरूपम्॥ रासे....
(२/९)

सखि हे, मनहि हमर वैरी अछि!
हमरा बिनु आनहि हरि भावय
लोकक मुँह सुनइ छी,
बिसरि जाइ किछु ध्यान ने लावी
हमहूँ यत्न करइ छी।
जैतबहि चाही मोन ने पाबी
तैतबहि मन बिलमइ अछि,
सखि हे, मनहि हमर वैरी अछि!
मन चाहय तामस कै बरजी
हुनक स्वभाव जनइ छी,
परनारी-आसक्ति प्रकृति जानि
मन ने तोख धरइ छी।
एक मन होय वृथा अछि सोचब
पुनि हुनकहि ध्याने अछि,
सखि हे, मनहि हमर वैरी अछि!



गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते
वहति च परितोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः।
युवतिषु वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किम्॥ (२/१०)

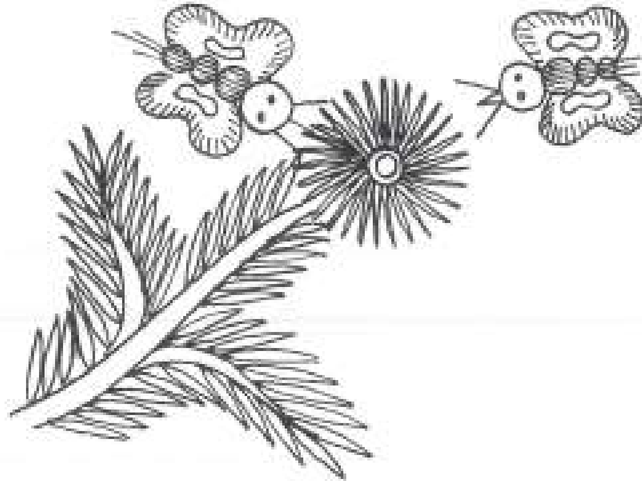
प्रबन्ध ६ : अक्लेशकुंजरतिलकम्

एक राति, हे सखी, निकुञ्जक
निविड़ मिलन-स्थल पर,
चकित वसन्त नियत अभिसारक
मन उद्वेगक रथ पर।
　　पहिलहि सँ हरि आबि नुकैला
　　पुष्पित डाढ़िक आड़ मे,
　　हम चकुआय तलासी हुनका
　　रसकर गाछक गाड़ मे।
राति अन्हार भयावह तइ पर
कामक वेग असाधे,
हम उद्विग्न कननमुँह सोची
कैलहुँ से अपराधे।
　　तखनहि हरि भरि पाँज पकड़ि कै
　　हँसला बड़ परिहासे,
　　मन भेल थीर हरखि अरुणाचल
　　नेलहुँ दीर्घ उसाँसे।
ओ क्षण स्मृति रोम-रोम मे
उधकि करय कामातुर,
मदन-मनोरथ माथ चढ़ल अछि
सन्तापें मन मातुर।
　　केशी दैत्यक वध कैलनि जे
　　परम उदार सनातन,
　　शीघ्रहि रमण कराब:, सखि हे
　　केशीमथनमुदारम्।

निभृतनिकुञ्जगृहं गतया निशि रहसि निलीय वसन्तम्।
चकितविलोकितसकलदिशा रतिरभसभरेण हसन्तम्।
सखि हे केशिमथनमुदारम्
रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम्॥ (२/११)

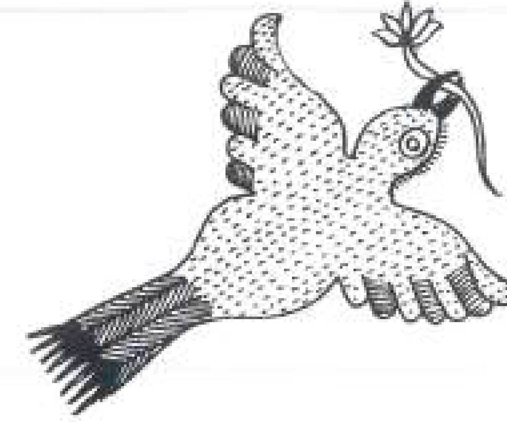


यद्यपि छल नहि प्रथम समागम
लाज तदपि पहिले सन,
हम सँकुचायल सिहरल देहें
तारु सुखायल कीनादन।
श्रीहरि त' छथिए बड़ छट्टू
बोलक चतुर खेलाड़ी,
मुँहक बकार फुटै नहि हमरा
लागल जेना केबाड़ी।
तेहन-तेहन ने कथा सुनौलनि
हँसलहुँ अवश भभा कें,
बुझि अपना अनुकूल तखन हरि
लगला जघन उघारै।
बादक बात कहू की बहिना
ओ छल दिव्य समागम,
कहुना रमण कराबः जल्दी
केशीमथनमुदारम् !

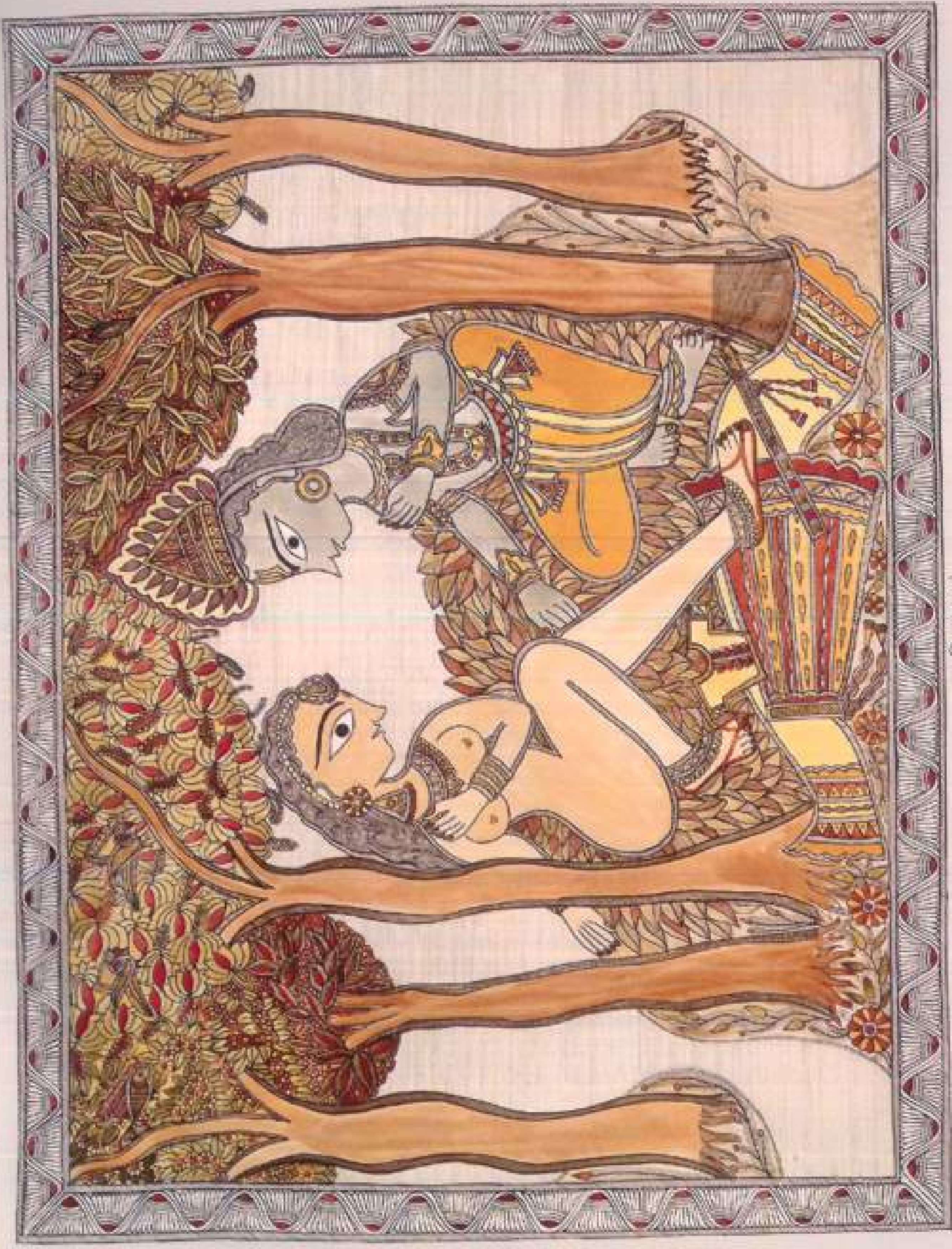


प्रथमसमागमलज्जितया पटुचाटुशतैरनुकूलम्।
मृदुमधुरस्मितभाषितया शिथिलीकृतजघनदुकूलम्॥
सखि हे केशिमथनमुदारम्॥ (२/१२)

कोमल पातक बनल ओछाओन
तइ पर सहज सुतौलनि,
सुसुम परस जागल रोमावलि
सुसुके अधर सटौलनि।
थिर नहि रहल ज्ञान, नहि बुझलहुँ
कखन वक्ष सँ सटला,
तिलतण्डुल आलिङ्गन कैने
बड़ी काल धरि रहला।
कोना, जानि नहि, सौंचे बहिना
हमहूँ बान्हि भुजा मे,
चुम्बन लै आरो बौरैलहुँ
चषक हेरायल सुधा मे।
तैखन ओ भुजबन्ध छोड़ि कै
करथि सरस मधुपानम्,
तखनुक दशा जनइ छथि केशव
केशीमथनमुदारम्।

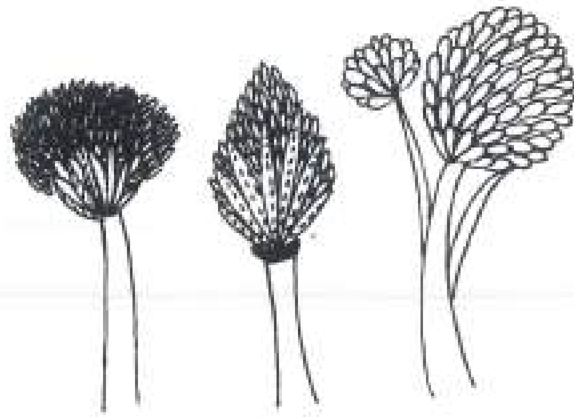


किसलयशयननिवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम्।
कृतपरिरम्भणचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम्॥
सखि हे केशिमथनमुदारम्॥ (२/१३)



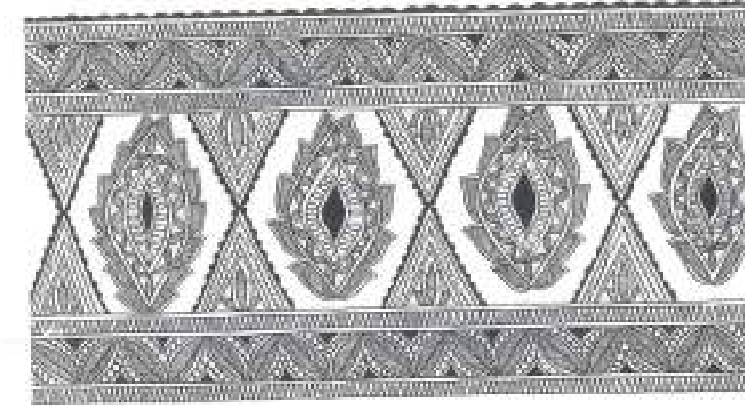


समय जानि नहि ससरल कतबा
सुरति क्रिया मे भासैत,
किछु पल भेला मन्द, बुझायल
अलस नयन मे पसरैत ।
हमरो सगर देह लथपथ छल
श्रम- सीकर बुनिआयल,
आँखि झाँपि पल चूमल हरि कें
पुनि फुरती सरसायल ।
हरि आनन पर तखनुक आभा
अरुण गाल रस- कीपर,
सुरति- ऊर्म्मि मे सभ किछु भासल
जे बाँचल से दोबर ।
दोसर क्षेपक श्रम भारी छल
शीघ्रहि भेल सुखागम,
शिथिल जघन माधव मुसुकैला
केशीमथनमुदारम् ।



अलसनिमीलितलोचनया पुलकावलिललितकपोलम् ।
श्रमजलसकलकलेवरया वरमदनमदादतिलोलम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (२/१४)

पूर्वक्रिया मे सुँघथि जखन हरि
सगरो देह हँसोथथि,
खन रोमावलि मृदु सोहराबथि
कौखन वक्ष दबाबथि ।
कोइलिक दाबल मन्द कूक सन
खन पीरकी सन छुटकब,
जानि कोना सिसकारी निकसय
शी - इस्- आहक फूटब ।
एहन दशा लखि श्रीमधुसूदन
कामक नियम बिगाड़थि,
तोड़ि- मचोड़ि कुसुम- कच- कुन्तल
वक्ष नखक्षत पाड़थि ।
ई स्मृति सभ टीस रहल अछि
प्रकट प्रेम- प्रतिकूलम्,
तें दूती बनि रमणं कराबः
केशीमथनमुदारम् ।



कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतन्त्रविचारम् ।
श्लथकुसुमाकुलकुन्तलया नखलिखितघनस्तनभारम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (२/१५)



जखन रतिक विस्तार करथि हरि
मणि- नूपुर झंकारय,
डँड़कस ता धरि घन-घन बाजय
जा' टुटि मौन ने धारय।
तेहन समय हरि केस पकड़ने
करथि अधर-रस-चुम्बन,
ताहि रसिक केशव सँ मिलबः
केशीमथनमुदारम् ।

चरणरणितमणिनूपुरया परिपूरितसुरतवितानम् ।
मुखरविशृङ्खलमेखलया सकचग्रहचुम्बनदानम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (२/१७)

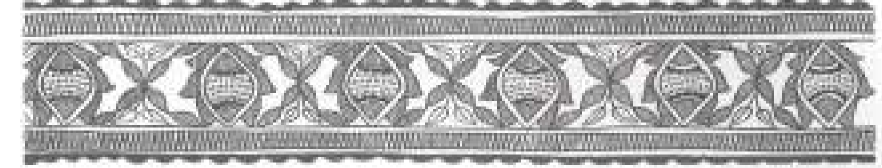
हे सखि जैखन चरम बिन्दु पर
संगहि रेतः-क्षरण हो,
सुन्न देह बलहीन सेज पर
आँखि मुनायल हमर हो।
तेहन समय किञ्चित अलसा क'
हुनकी थकनि लगइ छनि,
मुदा हमर निश्चेष्ट देह लखि
काम पुनः जागइ छनि।
फेर वैह उद्रेक प्रणय के
नहुँ- नहुँ मधुर निनादम्,
ओहि प्रणयी सँ मिलन कराबः
केशीमथनमुदारम् ।

रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजम् ।
निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (२/१८)



श्रीजयदेव कैल रति-वर्णन
नीक बुझथु भल कविता,
मुदा कविक धर्मोल्किथन ई
सद्यः राधा-भणिता ।
भक्त-रसिक जे पढ़थि-सुनथि ई
गीतगोविन्दक काव्यम्,
तिनकर हित-कल्याण पुराबथु
केशीमथनमुदारम् ।

श्रीजयदेवभणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम् ।
सुखमुत्कण्ठितगोपवधूकथितं वितनोतु सलीलम् ॥
सखि हे केशिमथनमुदारम् ॥ (२/१८)



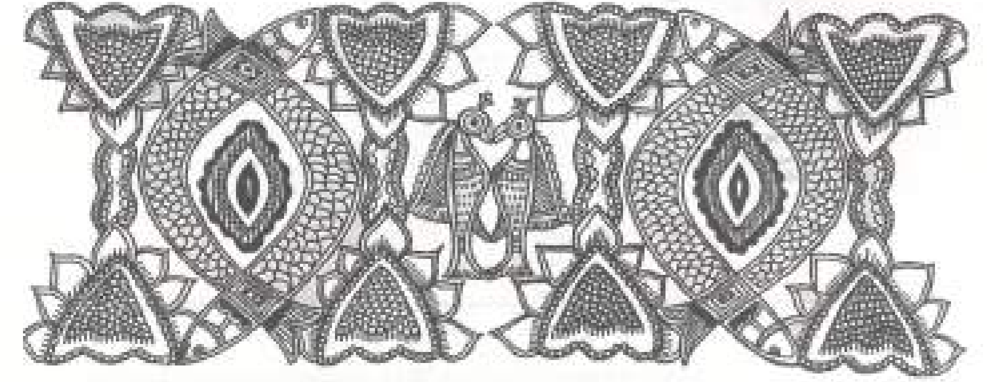
जखन रहइ छथि माधव, सखि हे
व्रजललनाक भमर मे,
केकरहु बाँहि लहरि सन ओलरल
लेपटायल हरि-गर मे ।
नीक होइत देखितहुँ माधव कें
जखनहि ठोर सटाबथि,
कोनो नितम्बिनि जखन लपकि कैं
कोंचा अपन सम्हारथि ।
हमरा सम्मुख देखितहि हरि कें
चटपट ठोंठ सुखइतनि,
ईंढ़िक घाम टिकासन चुबितनि
मुरली भट द' खसितनि ।
अमृतघट-आनन पर तैखन
स्वेदक बुन्न चमकितनि,
कुटिल भौंह तब गोपवधू कें
भागक भाव बतबितनि ।
कहि नहि ई सुख कहिया पायब
कहियो चोर पकड़ितहुँ,
तखनहि हिनकर सभ ढिठपाना
पल मे निहुँछि भगबितहुँ ।

हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्बल्लवी-
वृन्दोत्सारिदृगन्तवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगण्डस्थलम् ।
मामुद्वीक्ष्य विलज्जितं स्मितसुधामुग्धाननं कानने
गोविन्दं व्रजसुन्दरीगणवृतं पश्यामि हृष्यामि च ॥ (२/१९)



समय वसन्त अशोकक तरुपर
नान्हि- नान्हि टा मज्जर,
पवन वसन्ती विकसय तेकरा
विरहिनि मन पर बज्जर।
भेमक भुण्ड रसाल वृक्ष पर
सदिखन रहय अगोरने,
जखने सिसकी देलक मञ्जरि
गुञ्जय लोभे गरोसने।
ई सभ मन नहि किछु चाहइ अछि
बाँतर सन अपकारक,
समय केहन अछि 'दुरालोक' भेल
पवन-पुष्प दुःखकारक।

दुरालोकस्तोकस्तबकनवकाशोकलतिका-
विकासः कासारोपवनपवनोऽपि व्यथयति।
अपिभ्राम्यद्भृङ्गीरणितरमणीया न मुकुल
प्रसूतिश्चूतानां सखि! शिखरिणीयं सुखयति॥ (२/२०)



रसित रसिक रसराज मुरारी
देखैत-देखैत मुदिऔला,
मूढ़ युवक कें मन मोहइ अछि
नारि 'रत' बुधिऔला।
लोभें मुँह पर हास सकारण
केश- गुच्छ छिड़िआयब,
जानि-बूझि क' वक्ष-प्रदर्शन
वृथा रोम भुलकायब।
एहन-ओहन कामुक अभिप्रायक
अर्थ तरुण-हरि बुझला,
मन समेटि अविवेकक पथ सँ
त्वरित सुपथ पर अयला।

साकूतस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासित-
भ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूलोर्ध्वहस्तस्तनम्।
गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य गमिताकाङ्क्षश्चिरं चिन्तय-
न्नन्तर्मुग्धमनोहरं हरतु वः क्लेशं नवः केशवः॥ (२/२१)

तेसर सर्ग

मुग्धमधुसूदन

श्रीहरि छथि कंसारि , सुखादिक सार
जगत मे सुख विस्तारथि ,
राधा भव-सुख-बन्ध , मधुररसकन्द
सृष्टि मे रस सरसाबथि ।
किछुक दिवस हरि मुग्ध , रूप पर लुब्ध
छला व्रजनारि-फाँस मे
राधा गेली रिसाय , रूसल घर जाय
बहुरि प्रिय-मिलन आस मे ।
ओ छथि आद्य सिनेह , प्रणय-सुख-गेह
बिना हुनका हरि हारल
फिरथि विरह मे दग्ध , स्नेह-विश्रब्ध
सुखक सभ साधन टारल ।

कंसारिरपि संसारवासनाबन्धशृङ्खलाम् ।
राधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुन्दरीः ॥ (३/१)

राधा-विरह-विदग्ध , काम-सन्तप्त
खिन्न मन हरि अपसोचथि ,
कैलहुँ ऐसन काज , बिगारल बात
निरावृत भै ओ छोड़लि ।
फिरथि जेना विक्षिप्त , तृषा-परिवृत्त
हकासल यमुना-तट पर ,
ताकथि वन-वन राहि , बिथरला थाहि
कतहु वन-कण्टक पथ पर ।

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनङ्गबाणव्रणखिन्नमानसः ।
कृतानुतापः स कलिन्दनन्दिनीतटान्तकुञ्जे विषसाद माधवः ॥
(३/२)

प्रबन्ध ७ : मुग्धमधुसूदनहंसक्रीडनम्

यमुना-तट पर भग्न-हृदय , सोचथि हरि मन मे ।
व्रज-सुन्दरि मे डूबल , छेरायल छलहुँ जइ क्षण मे ॥
तेहन समय ओ अयली , नहि हमही छेटि पौलहुँ ।
हाय , गेली ओ दूरि , अनावृत , रोकि ने पौलहुँ ॥

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ।
सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ।
हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ (३/३)

कतेक दिवस सँ पड़ल , विरह मे केना हेती ओ ।
भेटला पर की करती , कहती विकल हृदय ओ ॥
हुनका बिनु सभ व्यर्थ , निरर्थक जीवन-यौवन ।
धन-जन वा परिवार , जते जे वैभव पौलहुँ ॥
हाय , गेली ओ दूरि , अनावृत , रोकि ने पौलहुँ ॥

किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ।
किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि०
(३/४)

मौन पड़ै अछि तमतमायल मुँह , लाल कमल सन ।
क्रोधें वंकिम भौंह , भ्रमर लुब्धलकमलानन ॥
कैलहुँ हम अपराध , अनेरो चैन गमौलहुँ ।
हाय , गेली ओ दूरि , अनावृत रोकि ने पौलहुँ ॥

चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रु कोपभरेण ।
शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ हरि हरि०
(३/५)



चरम वियोगक दशा, भेला मनलीन मुरारी ।
सोचथि, मन मे बसथि, नित्य वृषभानु-दुलारी ॥
हुनकहि मे हम रमण करी, सदिखन दुलराबी ।
तखन तकइ छी किये, जत' हुनका नहि पाबी ?।
ओ नहि कखनो बिलग, यदपि हमहीं भसिऔलहुँ ।
हाय, गेली ओ घूरि, अनादृत, रोकि ने पौलहुँ ॥

तामहं हृदि सङ्गतामनिशं भृशं रमयामि ।
किं वने'नुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरिहरि॰
(३/६)

हे तन्वी ! छी कत' अहाँ, की सोचि रहल छी ?
हमरा पर तमसाउ एते नहि, हमहूँ पजरि रहल छी ॥
मन मे उपजल भेद अहाँ कें, हमर चालि स' ।
चरण पकड़ि क' मना लितहुँ हम, जँ पाबितहुँ त' ॥
आब करू की, अहीं कहू, हमहुँ दुःख पौलहुँ ।
हाय, गेली ओ घूरि, अनादृत, रोकि ने पौलहुँ ॥

तन्वी ! खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ।
तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन ते'नुनयामि ॥ हरिहरि॰
(३/७)

हे प्रिय, हम छी चकित, अहाँ हमरे लग मे छी ।
ओहिना टहली-बुली, जेना की संगहि मे छी ॥
कखनो एम्हर, कखनो ओम्हर, चारू कात बुलइ छी ।
तइयो जानि किये नहि राधे, हृदय अपन लगबइ छी ॥
हम छी भ्रमित, किये नहि मानिनि, अहाँ रखन धरि टोकलहुँ ।
हाय, गेली ओ घूरि, अनादृत, रोकि ने पौलहुँ ॥

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ।
किं पुरेव ससम्भ्रमं परिरम्भणं न ददासि ?। हरिहरि॰
(३/८)

हे सुन्दरि ! सभ माफ करू, भाभट समटू, अभिसार करू ।
हम छी अवनत, जे कहब करब, अपराध कैल, अभिशाप हरू ॥
कहियो फेरो, नहि एना करब, कौनो सुन्दरि नहि सङ्ग करब ।
नहि आँखिक आब परोछ रहू, बस एक अहीं के अङ्ग धरब ॥
कामक पीड़ा सहन होय नहि, केतबो जोर लगौलहुँ ।
हाय, गेली ओ घूरि, अनादृत, रोकि ने पौलहुँ ॥

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ।
देहि सुन्दरि ! दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरिहरि॰
(३/९)

किन्दुबिल्व शुभ गाम सिन्धु सन
ताहि सिन्धु सँ चन्द्र जनमला,
ओ शशि भगवद्भक्तिपरायण
कविवर श्रीजयदेव कहयला ।
साहित्यक निस्सीम गगन मे
रोहिणि-रमण चमकला,
गौलनि गीतगोविन्दक पद ई
राधा - माधव हँसला ।

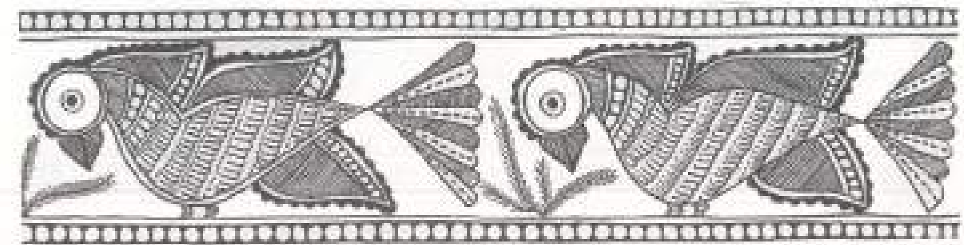
वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रवणेन ।
किन्दुबिल्व समुद्रसम्भवरोहिणीरमणेन ॥ (३/१०)

हे अनङ्ग, नहि करु तङ्ग
अछि बिद्ध हमर सभ अङ्ग-अङ्ग,
छी स्वतः बनल अङ्गल-अपङ्ग
पहिनहि स' छी हम भेल तङ्ग।
की, अहाँ बुझल शङ्कर हमरा?
जो रहथि सदा निज प्रिय सङ्ग,
हम विरह-विपत्तिक मारल छी
अछि सङ्ग आत्मवस विप्रलम्भ।
अन्तस मे अछि किछु पजरि रहल
से कोना शमन हो? कोन ढङ्ग?
तैं छाती पर टाङल मृणाल
तों की बुझल'? सौहरथ भुजङ्ग?
तों भ्रमित हुअ' नहि कण्ठ देखि
ई भेल विषें नहि नील रङ्ग,
शीतलकारक अछि नील कुसुम
से देखि किये छ' एना दङ्ग?
हमरा पर नहि दौड़' क्रोधें
तान' दोसर पर तीर-धनुष,
एहि ठाँ त' सब अछि दुःखी-मन्द
जा' शिव पर भाड़' अपन खुनुस।



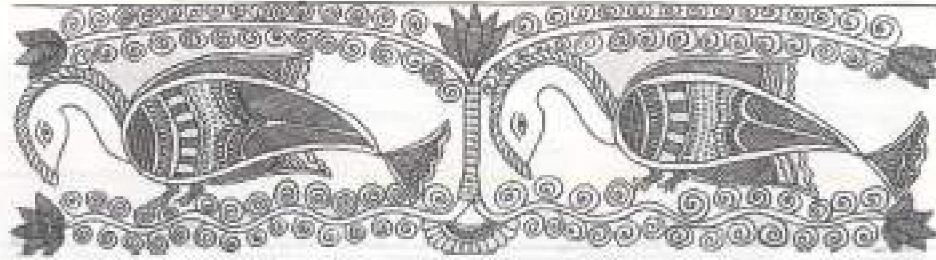
हृदि बिसलताहारो नायं भुजङ्गमनायकः
कुवलयदलश्रेणी कण्ठे न सा गरलद्युतिः।
मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि
प्रहर न हरभ्रान्त्याऽनङ्ग! क्रुधा किमु धावसि? (३/११)

तों खेल-खेल मे जग जितल'
एहि सृष्टिक तों छ' पहिला,
सिद्ध मुनी योगी भूपति सभ
जीव तोहर छथि बहिला।
महाप्रभावी पराक्रमी तों
जाय ने बाण अकारथ,
हमरा पर मे तीर चलौने
निन्दित हो पुरुषारथ।
राख' हाथक आम्र-बाण तों
तरकस सैंइत-जोगा क',
हम त' पहिने सँ मूर्च्छित छी
प्रिया-वियोग भोगा क'।
हमरे मन सँ जनमल छ' तों
तैं मनसिज कहबइ छ',
सृष्टिक आद्य सिनेहक परिणति
इच्छा पहिल तोंही छ'।
अपनो पर क्यो हाथ उठाबय?
एतबो नहि बुझइ छ?
सकल चराचर तोहरे भोजे
रत' किये भूलइ छ?



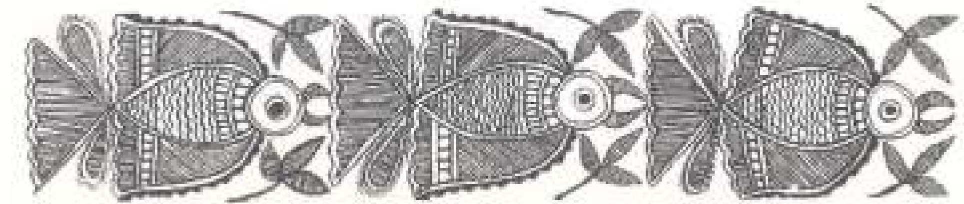
पाणौ मा कुरु चूतसायकममुं मा चापमारोपय
क्रीडानिर्जितविश्व! मूर्च्छितजनाघातेन किं पौरुषम्।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिज! प्रेङ्खत्कटाक्षाशुग-
श्रेणीजर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि सन्धुक्षते॥ (३/१२)

हरि हताश, सोचथि मोनहि मन
बात कतेको तरहक,
ध्यान गेलनि पुनि राहि रूप पर
देखलनि किछु अकरहुर ।
कोना भेला मनसिज जग-जङ्गम
जत'-तत' घूमइ छथि,
कत' पाओल सभ अस्त्र विलक्षण
जइ सँ जग जीतइ छथि ।
एहन चाप त' राधे के छनि
भ्रूपल्लव-धनु मारक,
कर्णपालि छनि डोरि धनुषके
नयन-कटाक्ष बाणक ।
कामायुध के स्वामिनि राधा
कामविजय-देवा छथि,
पाबि अनङ्ग कला-युत आयुध
विश्वविजय पाबइ छथि ।



भ्रूपल्लवं धनुरपाङ्गतरङ्गितानि
बाणा गुणः श्रवणपालिरिति स्मरेण ।
तस्यामनङ्गजयजङ्गमदेवताया-
मस्त्राणि निर्जितजगन्ति किमर्पितानि ॥ (३/१३)

भ्रुकुटि चढ़ल धनु पर आरोपित
नयन-कटाक्षक तीरें,
जतबा मारब से हम धारब
हे राधे बिनु पीड़ें ।
भल कच-पाश लपेटि देहकें
प्राण कण्ठगत मोचय,
अधर बिम्बफल अरुण प्रभा सँ
गति-मति-चितकें मोहय ।
भ्रुकुटि - केश वा बंकिम नयनक
कुटिल स्वभाव विदित अछि,
अधरहु के छनि प्रकृति रागमय
तैं जे करय से सहजहिं ।
मुदा मात्र एहि बातक अछि जे
वर्तुल स्तनमण्डल,
सद्वृत्तिक आगार बनल अछि
प्राणक लेल अमङ्गल ।



भ्रूचापे निहितः कटाक्षविशिखो निर्मातु मर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलः करोति कबरीभारोऽपि मारोद्यमम् ।
मोहं तावदयं च तन्वि ! तनुतां बिम्बाधरो रागवान्
सद्वृत्तः स्तनमण्डलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ? ।
(३/१४)

अचरज एक स्वयं अपना पर
लागय, एना कियै अछि,
रमण करी हुनके मे नित हम
तइयो विरह कियै अछि ?
हुनकहि साँसक संस्पर्श बनि
मञ्जरि-सुरभि बहइ अछि,
हुनकहि देहक छुअन रोममे
नेहक कम्प बनल अछि।
चञ्चल नयनक भ्रमण हृदय कें
सदिखन आर्द्र रखइ अछि,
हुनकहि कमलानन-दर्शन नित
सङ्कृति के सुखबोध दैत अछि।
हुनकहि वाणिक वृष्टि श्रवण मे
अमरित रस घोरइ अछि,
बिम्बाधर छवि अरुण प्रकृतिक
सुषमा सरस बनल अछि।
हुनकहि अस्तित्वक स्पन्दन
यौवन हमर बनल अछि,
रूप, शब्द, रस, गन्ध, छुवन गति
मति अनुभूति बनल अछि।
तइयो कहि नहि कियै मनक ई
करुणिम दशा बनल अछि,
चैनक पड़ल अकाल मरुस्थल
जीवन विकलबनल अछि।

तानि स्पर्शसुखानि ते च तरलाः स्निग्धा दृशोर्विभ्रमा -
स्तद्वक्त्राम्बुजसौरभं स च सुधास्यन्दी गिरांवक्रिमा ।
सा बिम्बाधरमाधुरीति विषयाङ्गे'पि चेन्मानसं
तस्यां लग्नसमाधि, हन्त विरहव्याधिः कथं वर्धते ॥
(३/१५)

श्रीभगवान कटाक्ष मनोहर
ऊर्मि जेकाँ तट पाबै,
राधा-स्नेह-पयोधि सुधामय
शशिमुखि कें दुलराबै।
बाँसुरि-वादन-लीन मुरारी
स्नेहाधिक्य प्रभावें,
ताकथि एकसूर राधा दिस
गोपिनि बूझि ने पाबै।
थीर माथ चञ्चल मणि-मुकुटक
द्युतिमय कुण्डल डोलय,
तिर्यक ग्रिवा देखैत राधा-मुख
भक्तक हित अनुमोदय।



तिर्यक्कण्ठविलोलमौलितरलोत्तंसस्य वंशोच्चर -
द्दीप्तिस्थानकृतावधानललनालक्षैर्न संलक्षिताः।
सम्मुग्धे मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेन्दौ सुधा -
सारे कन्दलिताश्चिरं ददतु वः क्षेमं कटाक्षोर्मयः ॥ (३/१६८)

चारिम सर्ग

स्निग्धमधुसूदन

यमुना-तट पर खिन्नहृदय हरि
गुम-सुम निविड़ वनस्थलि,
दूती बनि राधा-सखि अयली
करुण बोल मे बाजलि ।

यमुनातीरवानीरनिकुञ्जे मन्दमास्थितम् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तं माधवं राधिकासखी ॥ (४/१)

चानन मन नहि भावय हुनका
जो थिक विरहक बीतर,
चन्द्र-किरण सँ ही झरकइ छनि
मलयानिल विष-बासल ।
काम-बाण सँ आतंकित भै
अहिंक शरण ताकइ छथि,
ध्यान-जाप नामक निशि-बासर
लीन ने किछु बाजइ छथि ।
माधव ! भेस-बगै अति दीना,
विरहिनि खेदक मारल हीना !

प्रबन्ध ८ : हरिवल्लभाशोकः

निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु विन्दति खेदमधीरम् ।
व्यालनिलयमिलनेन गरलमिव कलयति मलय समीरम् ॥
माधव ! मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना !
सा विरहे तव दीना !! (४/२)

काम-बाण के अविरल वर्षा
रक्षा-कवच बनौली,
अन्तस मे बइसल मधुसूदन
तिनका कोना बचौली ?
पुरैनिक भीजल पातक जाल
बनौलनि छाती झाँपक ढाल ।
सखि छथि अहिंक स्वप्न मे लीना
विरहिनि खेदक मारल हीना ॥

अविरलनिपतितमदनशरादिव भवदवनाय विशालम् ।
स्वहृदयमर्मणि वर्म करोति सजलनलिनीदलजालम् ॥
सा विरहे तव दीना ! (४/३)

कुसुमक सेज करइ छथि रचि-रचि
जानि कुसुम-शर कामक,
स्वतः कष्ट अवधारथि विरहक
व्रत भारी अविरामक ।
कुसुमक सेज सुतथि रति-बरती
प्रिय के दै गलबाँही,
मनहि ततहि कल्पित सुख पाबथि
छटपट हरि परछाँही ।
परागक तकिया पीत ललाम
सुरभि के जाजिम विरल सकाम ।
मागथि परिरम्भन वर कहुना
विरहिनि खेदक मारल हीना ॥

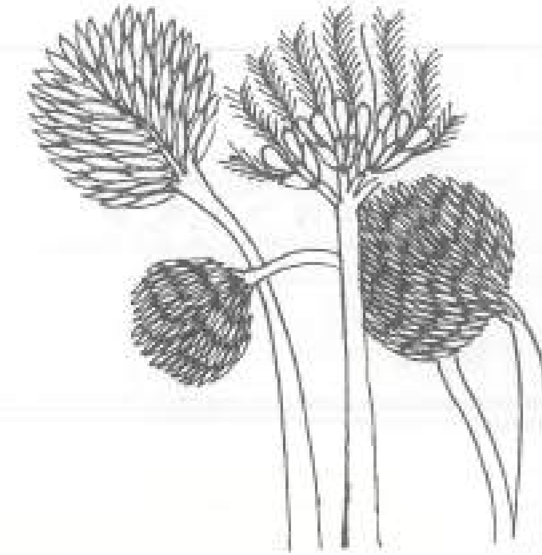
कुसुमविशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम् ।
व्रतमिव तव परिरम्भसुखाय करोति कुसुमशयनीयम् ॥
सा विरहे तव दीना ! (४/४)

फुल्ल कमल विकसित कमलानन
दीर्घ नयन नोरायल,
निर्झरिणी भदबारि बनल अछि
डुहडुह लाल धोरायल।
लगय राहु इनकल चन्द्रा के
झमझम अमरित झहरय,
हरिक वियोगें दगधल मानस
आँखिक पथ सौं बरसय।
चन्द्रमुख आरो भेल मनोज्ञ
कमलदृग अमृतधार सुरम्य।
लगइ अछि शीघ्र हेती रस-हीना
विरहिनि खेदक मारल दीना॥



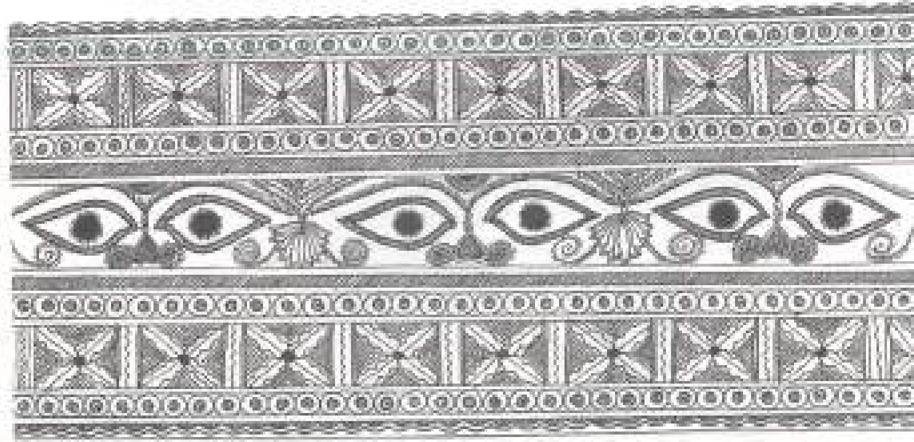
वहति च चलितविलोचनजलभरमाननकमलमुदारम्।
विधुमिव विकटविधुन्तुददन्तदलनगलितामृतधारम्॥
सा विरहे तव दीना! (४/५)

कस्तूरी मसि घोरि एकाते
रचथि चित्र छवि माधव,
कामदेव विरहक दाता बुझि
अलङ्कार गुण पाडब।
हाथ धराबथि आमक मज्जर
कामक बाण अचूके,
वाहन मकर बना बइसाबथि
पूजथि फूल अदूले।
हरिक छवि देखथि रूप अनेक
भ्रमित मति करथि स्वयं अभिषेक।
लगइ छथि जेना भेली सुधि-हीना
विरहिनि खेदक मारल दीना॥



विलिखति रहसि कुरङ्गमदेन भवन्तमसमशरभूतम्।
प्रणमति मकरमधो विनिधाय करे च शरं नवचूतम्॥
सा विरहे तव दीना! (४/६)

विरह-दशा सातम सीढ़ी पर
भ्रान्ति देखथि हरि-सम्मुख,
चित्र देखि मुसुकथि-बतियाबथि
आलिङ्गन लै' उन्मुख।
चित्र कतहु बोलय-पँजिआबय ?
हरि लगइ छथि कानय,
पुनि सोचथि सुनला नहि माधव
सम्मुख लागथि बाजय।
दिनोदिन बढ़िते जाय बतहपन,
कानब बाजब हँसब मनहि-मन।
खने-खन बइसि ध्यान मे लीना,
विरहिनि खेदक मारल दीना॥



ध्यानलयेन पुरः परिकल्प्य भवन्तमतीव दुरापम्।
विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम्॥
सा विरहे तव दीना! (४/७)

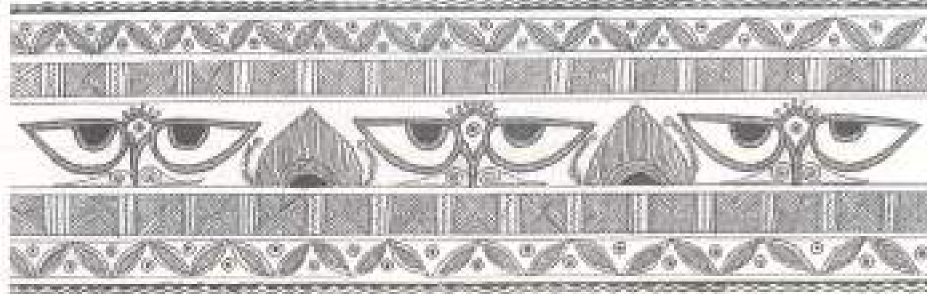
चित्र छोड़ि घूमथि जौं कखनो
डेग-डेग पर बाजथि,
बिलग अहाँ सँ छोड़बहि माधव
लछमीयो ठोकराबथि।
एसकर नारि बिलग प्रियतम सँ
सभ क्यो आँखि टेढ़ाबथि,
सार अहाँके, लछमिक भ्राता
चान सेहो दगधाबथि।
हरि हम चरण अहाँक खसइ छी,
किन्नहुँ पृथक ने जीबि सकइ छी।
चरण-रज धारि माटि मतिछीना,
बिरहिनि खेदक मारल दीना॥

प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव! तव चरणे पतिताहम्।
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम्॥
सा विरहे तव दीना! (४/८)

श्रीजयदेव कहथि विरहाकुल
राधा-सखि-मुख भणिता,
नाटकीय विधि सँ रस घोरय
गीतगोविन्दक कविता।

श्रीजयदेवभणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम्।
हरिविरहाकुलवल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयम्॥
सा विरहे तव दीना! (४/९)

हे माधव! सखि हमर विरह मे
सभ किछु अपन गमायल,
मन-चित बिगड़ल देह गेह भेल
देहे विपिन समायल।
सखिक सङ्ग हरिणी बनि फानथि
चारू कात बहेलिआ
काम-फाँस छितरौने जत-तत
चाहय प्राणक बधिआ।
विरहाग्निक तापें औंटायल
प्राणक सभ रस-मटका,
दावानल बनि जरबय चाहैनि
देह भेलनि मड़सटका।
सन्तापें सुनगल प्रेमानल
ओहिना तन कें जारय,
प्रश्वासक चिनगी उड़ि-उड़ि कै
विपिन-गेह कें भीड़य।
सभ तरहें लोहछल-पजरल सखि
आहत सेज पकड़ने,
कामक बधचित्ता यम बैसल
केहरि-चौकठि धैने।



आवासो विपिनायते प्रियसखीमालापि जालायते।
तापो'पि श्वसितेन दावदहनज्वालाकलापायते।
सापि त्वद्विरहेण हन्त हरिणीरूपायते हा कथं
कन्दर्पो'पि यमायते विरचयञ्शार्दूलविक्रीडितम्॥(६/१०)

केशव, राधा अहाँ विरह मे!
दूबरि देह असक कोमलाङ्गी
देहे भार बनल छनि,
मौतिक हार वक्ष पर लागय
व्यर्थक बोझ लदल छनि!
अनुकम्पू हरि वेगें सखि के
बिनु देरी रहि क्षण मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे!

स्तनविनिहितमपि हारमुदारम्।
सा मनुते कृशतनुरिव भारम्॥
राधिका तव विरहे केशव! (६/११)

प्रबन्ध ६ : स्निग्धमधुसूदनरामावलय:

विरह-व्यथा सँ व्याकुल राधा
शङ्का मे जीबइ छथि,
सरस सुगन्धित चन्दन लेपहु
गरल समान बुझइ छथि।
व्यथा बिगाड़ल मनक आस्था
व्याधि उखाड़ल तन मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे।

सरस मसृणमपि मलयजपङ्कम्।
पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम्॥
राधिका तव विरहे केशव! (६/१२)

मदन-दहन के विरह-दण्ड बुझि
सहजहिं सखि अवधारलि,
धौंकनी भेल हृदय, राधा
निःश्वासक आगौं हारलि ।
झपसेऔंत छथि अपनहिं श्वासें
चैन पड़ै नहि तन मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

श्वसितपवनमनुपमपरिणाहम् ।
मदनदहनमिव वहति सदाहम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ! (४/१३)

जलकणयुक्त कमल बिनु नालक
जेना लहरि पर नाचय,
तहिना सखि चकुआयल नयने
दिशा-दिशा मे ताकय ।
जानि कौन पथ अओता माधव
बुझि पड़थि नहि मन मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

दिशि दिशि किरति सजलकणजालम् ।
नयननलिनमिव विगलितनालम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ! (४/१४)

किंकर्तव्यविमूढ़ मनस्थिति
रहय अहर्निशि बेरने,
साँझहि हाथ गाल तर राखथि
गुमसुम भाइ खसीने ।
क्षीणकान्ति अधझाँपल आनन
शान्त बालशशि नभ मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

त्यजति न पाणितलेन कपोलम् ।
बालशशिनमिव सायमलोलम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ! (४/१५)

प्रिय-वियोग उद्विग्न राधिका
सन्तापें भ्रम पोसथि,
ताम्रवर्ण नव किसलय-शय्या
आगि-ओछाओन बुझथि ।
संशय बाढ़ि बिआधि अनल छनि
जड़ता गिरह-गिरह मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

नयनविषयमपि किसलयतल्पम् ।
कलयति विहितहुताशविकल्पम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ! (४/१६)

अपने प्रणतक्लेशनाशन छी
तैं ई बात बिचारू,
मरणासन्न उचारय हरि-हरि
आबहु प्राण उबारू ।
हरिक नाम लै अन्त होय जैं
दर्शन अगिला जन्मे,
केशव, राधा अहाँ विरह मे ।

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।
विरहविहितमरणेव निकामम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ॥ (४/१८)



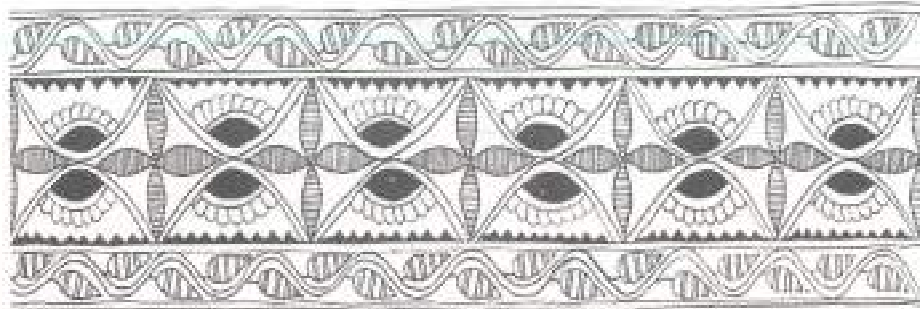
श्रीजयदेव कविक गीताञ्जलि
वैष्णव-जन सुख पाबथि,
राधा-माधव मिलन-विरह गति
जे क्यो सादर गाबथि ।

श्रीजयदेवभणितमिति गीतम् ।
सुखयतु केशवपदमुपनीतम् ॥
राधिका तव विरहे केशव ॥ (४/१८)

स्वर्ग-वैद्य अश्विनि कुमार सन
निपुण चिकित्सा-कर्ता,
श्रीहरि जैं छुबि-देखि लेथि त'
क्षणहि बनथि दुःखहर्ता ।
हमर सखी राधा के कैलक
ग्रसित महाज्वर कामक,
कीनो चिकित्सक व्याधिने बूझय
की उपाधि कविराजक ?
सन्निपात के लक्षण सभटा
तेहने संकट भारी,
बाँचि सकइ छथि जीवन जौं पद्य
देखथु बैद मुरारी ।
कखनहुँ सखि रोमाञ्चित होइ छथि
खन सीत्कार करइ छथि,
खन बिलपथि सन्तप्त होइत छथि
कीखन ध्यान धरइ छथि ।
बिनु काजें क्रीड़ा-स्थल मे
कुसमय जा बूलइ छथि,
आँखि मूनि दौड़इ छथि पथ पर
भै भ्रमान खसइ छथि ।
होस-हवास जखन पुनि आबैन
उठि भै ठाढ़ चलइ छथि,
विरह-ज्वरक ई लक्षण सभटा
माधव मात्र जनइ छथि ।
एखनहि ऐसन दशा भेल छनि
आगाँ जानि कि होयतनि,
जैं हरि एहिना विरूभल रहता
अपटी खेत परान निकलतनि।

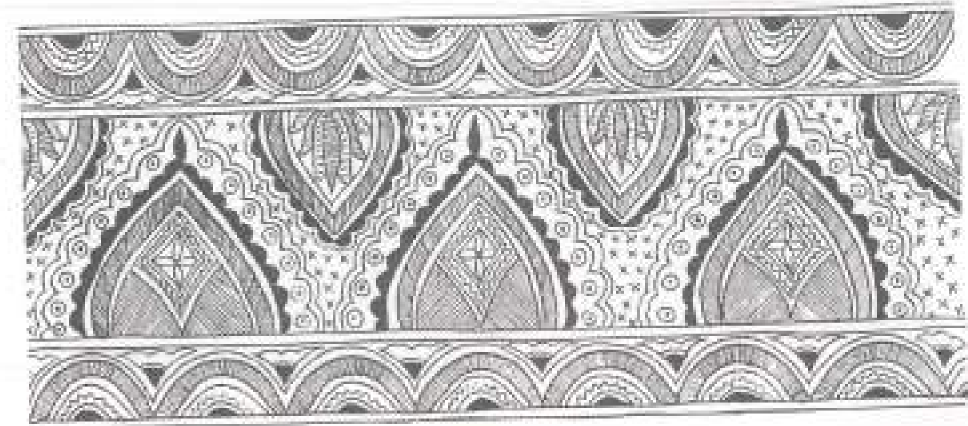
सा रोमाञ्चति सीत्करोति विलपत्युत्कम्पते ताम्यति
ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि ।
एतावत्यतनुज्वरे वरतनुर्जीवेन्न किं ते रसा-
त्स्वर्वैद्यप्रतिम! प्रसीदसि यदि त्यक्तोऽन्यथा हस्तकः॥
(४/१९)

बिपतल सुरगण-कल्याणक हित
अदितिक कोखि जनमलहुँ,
इन्द्रक राज कैल निष्कण्टक
तैं उपेन्द्र कहयलहुँ।
आश्विनि सँ बढ़ि सुन्दर अपने
गुणक अगार सुनइ छी,
बड़ उदार स्नेही छी अपने
तैं हुँ विनय करइ छी।
हमर सखी के रोग कठिन छनि
बुझितहुँ जौं नहि जायब,
पछतायब से अपनहि जानब
वज्र सँ कठिन कहायब।



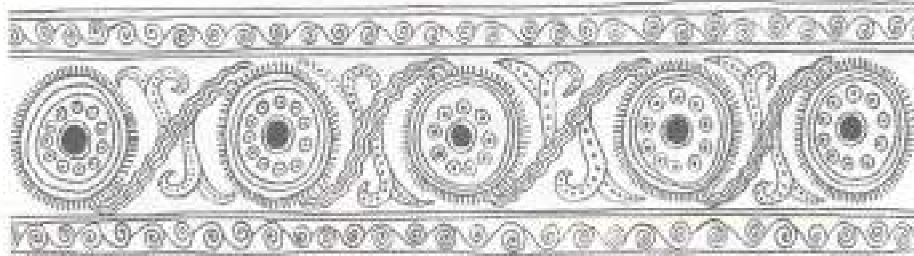
स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य! त्वदङ्गसङ्गामृतमात्रसाध्याम्।
निवृत्तबाधां कुरुषे न राधामुपेन्द्र! वज्रादपि दारुणोऽसि॥
(६/२०)

हे माधव! सखि हमर व्यथित छथि
विरह महाज्वर तापें,
कखनहुँ सिहरि बौखार चढ़इ छनि
तैखन करथि विलापें।
रोम-रोम मौलायल सीदल
अविरल अकट तरासे,
शीतोपचार उचित ऐसन मे
तइ पर नहि बिस्वासे।
चानन-कमलिनि नहि सोहाइ छनि
चन्द्रकिरण मरखाहे,
सुरभित वायु करेज मथइ छनि
पात-पुरैनि बिखाहे।
एहन हाल मे एसकर माधव
अहिंक उमेद करइ छथि,
हिमकर-शीतल संस्पर्श सँ
जीबक बाट तकइ छथि।



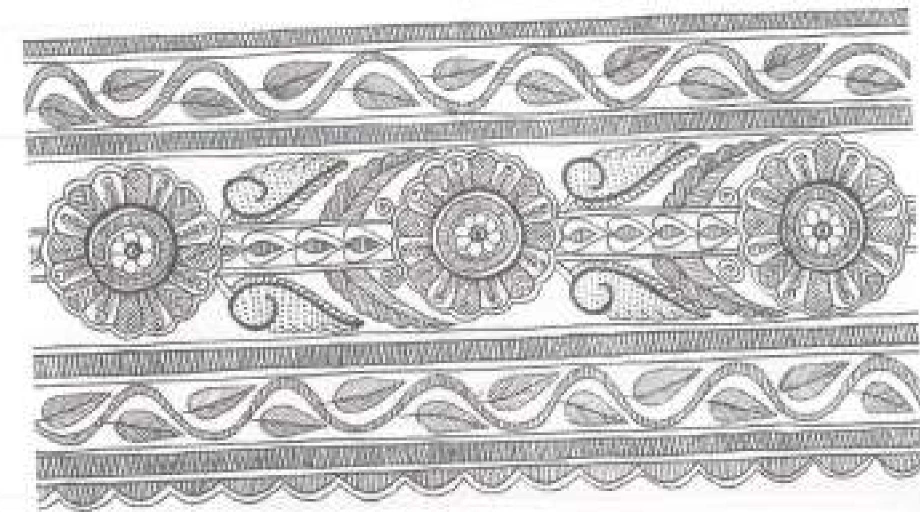
कन्दर्पज्वरसङ्ज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्याश्चिरं
चेतश्चन्दनचन्द्रमः कमलिनीचिन्तासु सन्ताम्यति।
किन्तु क्लान्तिवशेन शीतलतनुं त्वामेकमेव प्रियं
ध्यायन्ती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणा क्षणं प्राणिति॥ (६/२१)

माधव, एहि सँ पूर्व हमर सखि
क्षण भरि बिलग न भेलथि,
केकरा कहय विरह-दुःख से किछु
कनिञो बूझि ने पेलथि।
एहि सँ पहिने हमर सखी के
पलक खसब नहि भावय,
निमिष-क्षणांश परोक्ष होथि नहि
नित्यसङ्गिनी चाहय।
कतेक दिवस सँ दरस-परस नहि
अन्ह-मुन्ह भेल पड़ल छथि,
आमक मञ्जर फुटल डारि पर
ओ दुःख-सेज चढ़ल छथि।
आइ राधिका दूर बसइ छथि
प्रियतम बाँहि-वलय सँ
अचरज थोर लगइ अछि हमरा
प्राण ने निकसल तन सँ।



क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे
नयननिमीलनखिन्नया यया ते।
श्वसिति कथमसौ रसालशाखां
चिरविरहेन विलोक्य पुष्पिताग्राम॥ (४/२२)

जखन इन्द्र तमसा क' कैलनि
वृष्टि सघन अविरामक,
आवर्तक-पुष्कर कें देलनि
आज्ञा गोकुल-नाशक।
गोकुल रक्षा-हित कैलनि हरि
गोवर्धन गिरि धारण,
तानि भुजा गिरि-छत्र ठठौलनि
संकट कैल निवारण।
वैह भुजा जे गोपिनि चूमल
लाल ठोर छवि छापल,
रक्षा करथु सुजन पाठक कें
जे गिरि छतरी छारल।



वृष्टिव्याकुलगोकुलावनरसादुद्धृत्य गोवर्धनं
बिभ्रद्वल्लववल्लभाभिरधिकानन्दाच्चिरं चुम्बितः।
दर्पेणेव तदर्पिताधरतटीसिन्दूरमुद्राङ्कितो
बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः॥(४/२३)

पाँचम सर्ग

आकांक्षपुण्डरीकाक्ष

सुनलनि सभ सम्वाद सखी सँ
दशा जानि मन मे अकुलयला,
"हम रहि ठाँ रहि बाट तकइ छी"
प्रणतपाल मधुसूदन बजला।
जेना बुझाथि तहिना समझा क'
विनती कै हुनका ल'आनू
कहलनि हमहूँ बहुत बिकल छी
होउ प्रसन्न बात ई मानू।

अहमिह निवसामि याहि राधा-
मनुनय मद्वचनेन चानयेथाः।
इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता
स्वयमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम्॥ (५/१)

प्रबन्ध १० : हरिसमुदयागरुडः

सखि हे, माधव विरह-विकल छथि!
मलयानिल छुबि कुसुम फुलायल
विरहि जनक मन काम जगायल
समय वसन्तक दूर अहीं सँ
तिल-तिल हहरि रहल छथि।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि॥

वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय।
स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृदयदलनाय।
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति॥ (५/२)



चान आन बनि काम उधेसल
कनिओ नहि सन्ताप परेखल
कामदेव बिन्हलनि पञ्चक शर,
मरणासन्न बनल छथि।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि ॥

दहति शिशिरमयूखे मरणमनुकरोति ।
पतति मदनविशिखे विलपति विकलतरोऽति ।
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति ॥ (५/३)

मधुपक गुञ्ज श्रवण टीसइ छनि
रसकर राति कठिन बीतइ छनि
विरह-खिन्न तन मन मुरझायल
नव-नव रोग धरइ छथि ।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि ॥

ध्वनित मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ।
मनसि कलितविरहे निशि निशि रुजमुपयाति।
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति ॥ (५/४)

ललित धाम के त्यागि विपिन मे
पुर-कलरव के त्यागि विजन मे
कष्टमध्य आहि, लोटथि भूमि पर
नाम पकड़ि कुहरइ छथि।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि ॥

वसति विपिनविताने त्यजति ललितधाम ।
लुठति धरणिशयने बहु विलपति तव नाम ।
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति ॥ (५/५)

कवि जयदेव कहथि पाठक के
हरिक कृपा भेटओ भरि धौंके
विरह-विलास हरिक सरसाबय
जे क्यो श्रवण करइ छथि ।
सखि हे, माधव विरह-विकल छथि ॥

भणति कवि जयदेवे विरहविलसितेन
मनसि रभसविभवे हरिरुदयतु सुकृतेन ।
तव विरहे वनमाली सखि! सीदति ॥ (५/६)

जाहि विपिन मे प्रथम-प्रथम हरि
कामक ऑंजी-सीजी सिखलनि,
अहिंक सङ्ग रति-रभस तन्त्र मे
कामकला रस-सिद्धी पौलनि।
ताहि महातीरथ निकुञ्ज मे
मन्मथ-मनन उपास करइ छथि,
कुचकुम्भक आलिङ्गन इच्छैं
पहिलुक बातक मन्त्र जपइ छथि ।

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपतेरासादिताः सिद्धय-
स्तस्मिन्नेव निकुञ्जमन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः ।
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालपमन्त्रावलीं
भूयस्त्वत्कुचकुम्भनिर्भरपरिरम्भामृतं वाञ्छति ॥ (५/७)





प्रबन्ध ११ : स्वच्छन्दप्रदोषोदयः

ललित नितम्बिनि हे सखि राधे
जौं विलम्ब हो तौं पछतायब,
जौं चाही रतिसुख अनमोलक
चौट्ठहि जाय बहुत किछु पायब ।
आइ हरिकें रूपो अलबत्ते
तहिना अद्भुत रङ्ग जमइ छनि,
अहिंक अपन हृदयेशक दर्शन
सभ तरहें अभिराम लगइ छनि ।

रतिसुखसारे गतमभिसारे मदनमनोहरवेषम् ।
न कुरु नितम्बिनि ! गमनविलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ॥
(५/८)

मन्द-मन्द बह गन्ध सङ्ग तनु
कालिन्दिक तट जइठाँ खेलथि,
चञ्चल करें पयोधर - मर्दन
खन एम्हर खन ओम्हर डोलथि ।
ओतहि कतहु जानल ठेकान पर
सङ्केतक किछु धुन छोड़इ छथि,
अहाँ शरीरक छुअल पवन कें
परिमल बुझि मृदु पानकरइ छथि ।

धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली ।
गोपीपीनपयोधरमर्दन चञ्चलकरयुगशाली ॥
नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदुवेणुम् ।
बहु मनुते'तनु ते तनुसङ्गतपवनचलितमपि रेणुम् ॥ (५/९)

पातक मृदुल ओछान-बिछाओन
अहिंक लेल रचि-रचि बनबइ छथि,
गाछक कोनो पात खसै जौं
चौंकि हठात मुड़ी घुमबइ छथि ।

पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कितभवदुपयानम् ।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥
धीर समीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥(५/१०)

भरखरि एखने साँझ पड़ल अछि
भने अन्हार सगर पसरल अछि,
एहने मे तौं नील दोपट्टा
ओढ़ि विदा हो जे झलफल अछि ।
पएरक नूपुर बहुत बजइ छ'
ई अलगी सभ बात बिगाड़त
एकरा पहिने खोलि निकाल'
झुनुर-झुनुर झुन बएन पसारत ।

मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिसुलोलम् ।
चल सखि ! कुञ्जं सतिमिरपुञ्जं शीलय नीलनिचोलम् ॥
धीर समीरे .. .. ..
(५/११)



अहा ! केहन हेयत अनुपम ओ
दृश्य अलभ्य नितान्त अलौकिक,
रति-विपरीत निपुण विधि-आगरि
चढ़ल कन्त पर रति-रण सैनिक।
पीअर गोर कान्ति-तन सखि हे
जलधर मेघक वर्ण समायत,
जेना मेघ पर बगुलाक्हसल
मौतिक माल विद्याओल बुझायत।

उरसि मुरारेरुपहितहारे घन इव तरलबलाके।
तडिदिव पीते! रतिविपरीते राजसि सुकृत विपाके॥धीर....
(५/१२)

नलिननयनि हे सखि अनुरागिनि
कामकोटि सुन्दर छवि हरि कें,
देखितहि ढीड़क वस्त्र खसत भू
टूटत फान अकट करधनि कें।
रत-रत गोर अनावृत जाँघक
सहस रोम सिहरत-हुलसायत,
पल्लव सेज सम्हारि धरी तन
क्षण मे माधवमय भै जायत।

विगलितवसनं परिहृतरसनं घटय जघनमपिधानम्।
किसलयशयने पङ्कजनयने निधिमिवहर्षनिदानम्॥
धीर समीरे यमुना तीरे ....
(५/१३)

हे हठ-मानिनि मान तेयागू
हरिओ छथि मानी-परधानी,
तखन एना मे काज चलत की?
बिलखब व्यर्थेहि दुनू परानी।
कहियो दुनू एकहि होयब पुनि
उठल जेहन अछि मन मे बिहरी,
समय थोड़ आ काज बहुत अछि
अनसोहाँत अतिशय बलधिकरी।

हरिरभिमानी रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम्।
कुरु मम वचनं सत्वररचनं पूरय मधुरिपुकामम्॥
धीर समीरे यमुना तीरे ....
(५/१४)

श्रीजयदेव हरिक पद सेवल
रचि कविता रमणिक रति-रङ्गक,
प्रमुदित भेला सहज रस-नागर
कृपा अनूप सरस श्री-सङ्गक।

श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम्।
प्रमुदितहृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृतकमनीयम्॥
धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली॥ (५/१५)

हे सखि राधे, प्रियम अहाँके
काम-विदग्ध अबाह बनल छथि,
दीर्घ निसाँसे बेकल भेला हरि
राति अन्हार दुरङ्ग चढ़ल छथि।
गुंज-गुंज एहन अन्हार निकुञ्जक
पथ पर अविरल आँखि गड़ौने,
पाबि कतहु नहि दूर-दूर धरि
हिआ-हरण पलटइ छथि शयने।

विकिरति मुहुः श्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते
प्रविशति मुहुः कुञ्जं गुञ्जन्मुहुर्बहु ताम्यति।
रचयति मुहुः शय्यां पर्याकुलं मुहुरीक्षते
मदनकदनक्लान्तः कान्ते! प्रियस्तव वर्तते॥ (५/१६)

कहैत-कहैत व्यर्थक दिन बीतल
साँझ भेल से'हो भसिआयल,
चकवी करुण कते हम बाजू
राति अन्हार अहीं ले' आयल।
हे सखि राधे, आबहु चेतू
जिद्द छोड़ि जल्दी स' भागू,
जाउ जत' हरि बाट तकइ छथि
मान-कुमानक रोख ने राखू।

त्वद्वाम्येन समं समग्रमधुना तिग्मांशुरस्तं गतो
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सान्द्रताम्।
कोकानां करुणस्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
तन्मुग्धे! विफलं विलम्बनमसौ रम्योऽभिसारक्षणः॥
(५/१७)

अचरज भरल अकड़हर कौतुक
अछि अभिसारक कथा सुनइ छी,
धोखा मे अथवा धोखा दै
आन आन सँ मिलै जनइ छी।
राति अन्हार सघन गाछी मे
खास समय निश्चित चेन्हास पर,
पृथक-पृथक कामी ठेकनाबय
भटकि पुगय आनक ठेकान पर।
तखनुक जे अछि मिलन पिआसल
अनचिन्हार दू प्रेमी भटकल,
जान-अजाने महाकल्याणक
खेल अनूपम नवरस कामक।



आश्लेषादनु चुम्बनादनु नखोल्लेखादनु स्वान्तज-
प्रोद्बोधादनु सम्भ्रमादनु रतारम्भादनु प्रीतयोः।
अन्यार्थं गतयोर्भ्रमान्मिलितयोः सम्भाषणैर्जानतो-
र्दम्पत्योरिह को न को न तमसि व्रीडाविमिश्रो रसः॥
(५/१८)

हे सखि सुमुखि, जते किछु कहलहुँ
राखब मन-चित-साहस ध्याने,
एसकर राति अन्हरिया पथ पर
भय कें टारैत करू प्रयाणे।
गाछ-गाछ तर कने बिलमि क'
चारू कात अकानि सहटि क',
समझि-बूझि क' डेग बढ़बी
पहुँचक अछि से बात जानि क'।
जँ-जँ लग ठेकानक जायब
मन उमकत खन तारू सुखायत,
दूरहि सँ हरि देखि लपकता
पल मे जरल परान जुड़ायत।

सभयचकितं विन्यस्यन्तीं दृशं तिमिरे पथि
प्रतितरु मुहुः स्थित्वा मन्दं पदानि वितन्वतीम्।
कथमपि रहःप्राप्तामङ्गैरनङ्गतरङ्गिभिः
सुमुखि! सुभगः पश्यन्स त्वामुपैतु कृतार्थताम्॥ (५/१९)

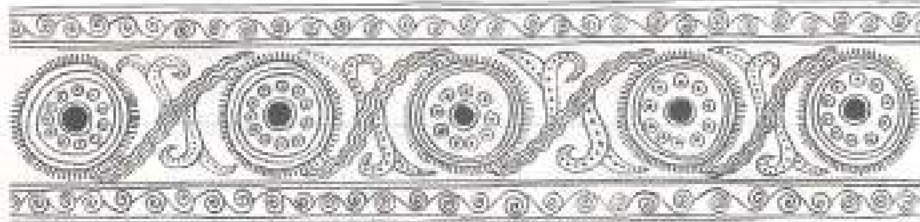
श्रीराधा-मुखकमल-भृङ्ग सन
त्रैलोक्यक नव नीलरत्न सन,
व्रजसुन्दरि हित मुक्त साँझ सन
सभहक सहज सखा अपनहि सन।
धरणिक बोझ बनल जे दानव
तेकरा मारि कीर्त्ति हरि कैलनि,
कंस-विनाशक धूमकेतु बनि
दुष्टक राज समाप्त करौलनि।
से हरि सभहक रक्षा करिहथि,
पाठक-श्रोता कें सुधि रखिहथि।

राधामुग्धमुखारविन्दमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली-
नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारान्तकः।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरीजनमनस्तोषप्रदोषोदयः
कंसध्वंसनधूमकेतुरवतु त्वां देवकीनन्दनः॥ (५/२०)

छठम सर्ग

धन्यवैकुण्ठकुङ्कुम

सखि परबोधलि
राधा मानलि
ठाढ़ भेली तन कॉँपय,
थर थर दस नहि
देह सकै नहि
साँस थमै नहि हाँफय।
साहस कैलनि
डेग बढ़ौलनि
तलमलाय पुनि खसली;
सखी सम्हारलि
आशा हारलि
लता छाँहि मे रखली।
राहि छाँहि मे
दूती पथ मे
थरफराय सखि बढ़ली;
कामसन्द हरि
ऑटकि साँस भरि
माधव सँ सखि बजली।



अथ तां गन्तुमशक्तां चिरमनुरक्तां लतागृहे दृष्ट्वा।
तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह॥
(६/१)

प्रबन्ध १२ : धन्यवैकुण्ठकुङ्कुम

ए हरि, राधा असक बनल छथि!

नयन पसारि तकइ छथि दिशि दस
जे हरि पीलनि अधरक सभ रस,
अतिशय विकल पड़ल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तम्।
तदधरमधुरमधूनि पिबन्तम्॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (ध्रु/२)

सजि-धजि कऽ जौं बिदा होइ छथि
थरथराय सखि भूमि खसइ छथि,
निर्बल भेल पड़ल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

त्वदभिशरणरभसेन वलन्ती।
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (ध्रु/३)

श्वेत भेंट अङ्कुर के कङ्कन
सुमिरथि पहिरि हरिक रस-रङ्गन,
दुर्बल सेज पड़ल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

विहितविशदबिसकिसलयवलया ।
जीवति परमिह तव रतिकलया ॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥ (६/४)

हमहीं छी माधव-मधुसूदन
अभरन पहिरथि ठानथि रोदन,
मतिभ्रम-फाँस पड़ल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

मुहुरवलोकितमण्डनलीला ।
मधुरिपुरहमिति भावनशीला ॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥ (६/५)

एकहि बात पुनि-पुनि पूछइ छथि
हे सखि, माधव कत' रुकल छथि?
मन-सन्ताप भरल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्।
हरिरिति वदति सखीमनुवारम्॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (६/६)

मेघ-अन्हार हरिक छवि बुझथि
दौड़थि चूमथि धरि पँजिआबथि,
मति भासल बगदल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम्।
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम्॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (६/७)

जौं पछि अपन बतहपन बुझथि
लाज लगनि बड़ मन पछताबथि,
हरिमय सखी बनल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

भवति विलम्बिनि विगलितलज्जा।
विलपति रोदिति वासकसज्जा॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (६/८)

श्रीजयदेवक हरि-गीतावलि
आनन्दित रसिकक रोमावलि,
रोम-रोम पुलकल छथि,
ए हरि, राधा असक बनल छथि।

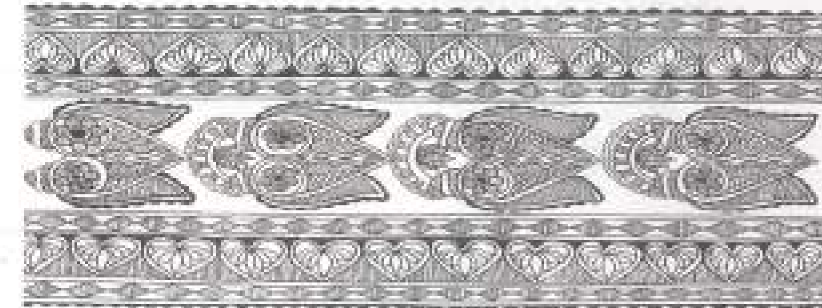
श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् ।
रसिकजनं तनुतामतिमुदितम् ॥
नाथ हरे! सीदति राधाऽऽवासगृहे॥ (६/९)

बड़ खेलाड़ भगवान अहाँ छी
नारिक हाल ने किछु जानइ छी,
आँच पजारि चूल्हि सुनगाओल
आगाँ की हो, नहि बूझइ छी?
ओ छथि विरहक चरम बिन्दु पर
अदहन जेना खदकि गेल हो,
शब्द करै हुड़-गुड़-गुड़-घुड़-घुड़
माटिक कौहा चटकि गेल हो।
भुलकल देह ठाढ़ रोमावलि
सदिखन ओ घुटकैत रहइ छथि,
जेना अहीं मे सगर समायल
अपने देहक भोग करइ छथि।



विपुलपुलकपालिः स्फीतसीत्कारमन्त-
र्जनितजडिम काकुव्याकुलं व्याहरन्ती।
तव कितव! विधायामन्दकन्दर्पचिन्तां
रसजलनिधिमग्ना ध्यानलग्ना मृगाक्षी॥ (६/१०)

दिन मे काज बहुत छनि हुनका
पहिरब ओढ़ब सेज ओछायब,
अङ्ग-अङ्ग साजब हरि-इच्छैं
बेर-बेर सिरखार निहारब।
राति कटब बड़ मोसकिल होइ छनि
पाँज सटल सूतइ छनि मनसा,
हाथ हथोड़थि किछु नहि पाबथि
सिमरक तूर उड़य जनबासा।
सेजक काज बहुत बाढ़ल छनि
पात ललीन पुरैनि जुटायब
आँचर-खूँट नीरा पत्ता कें
नहुअे-नहुअे रेघा पीछब।
तइ पत्ता पर पत्ता साटब
पिपनिक सीआनि गैंठ लगायब,
हरिअर सुग्गा कोर नेढ़ि क'
बेर-बेर सिरहाना बदलब।
एतबा काजक धुन सवार छनि
विरह योगिनी-तन्त्र सधइ छथि,
रातुक बात कहब हम कतबा?
कबइ माछ सन मरण देखइ छथि।



अङ्गेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेऽपि सञ्चारिणी
प्राप्तं त्वां परिशङ्कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति।
इत्याकल्पविकल्पतल्परचनासङ्कल्पलीलाशत-
व्यासक्तापि विना त्वया वरतनुर्नैषा निशां नेष्यति॥ (६/११)

ए वनमाली, विपिन-विहारी
साँझक पाहुन, प्रणय-सुखारी,
रत' गाछ तर की सूतल छी ?
नन्दक गेह छोड़ेक अगाड़ी।
जाउ ओतहि सुख सौं निशि खेपब
भोजन थार-सचारक उत्तम,
ठाँओ देल पर चकमक अरिपन
तइ पर सेज सहज स्वर्गोत्तम।
मदन भुजङ्ग बीआरि अइ ठाँ
साँझ-परात डँसय-फुफकारय,
गोपन भेद नगर भरि पसरत
राधा-कृष्ण प्रणय रति जय-जय।



किं विश्राम्यसि कृष्णभोगिभवने भाण्डीरभूमीरुहि
भ्रातर्यासि न दृष्टिगोचरमितः सानन्दनन्दास्पदम् ।
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गोपतो
गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथिप्राशस्त्यगर्भा गिरः॥
(६/१२)

सातम सर्ग

नागरनारायण

दहिक छौंछ सन चानक दुपदुप
दुधिया रजत इजोरिया,
शुभ्र प्रकाश दसोदिस पसरल
कुलटा लेल अन्हरिया।
जेकरा लेल अन्हार सुखद अछि
तेकरा हित अपराधे,
कैल चान ई पाप कलङ्कक
मृगलाञ्छन सिरधारे।
दिशा-सुन्दरी पहिरि-ओढ़ि कै
निकसलि मोद लुटाबय,
माझ कपार ठोप चाननकै
चन्द्रकिरण छवि पाबय।

अत्रान्तरे च कुलटाकुलवर्त्मघात-
सञ्जातपातक इव स्फुटलाञ्छनश्रीः ।
वृन्दावनान्तरमदीपयदंशुजालै-
र्दिक्सुन्दरीवदनचन्दनबिन्दुरिन्दुः॥ (७/१)

देखि चान कें झुलकी मारैत
क्षितिजक वातायन सँ,
छिआ-हरण भै राधा बजली
निरसल-तबधल मन सँ।

प्रसरति शशधरबिम्बे विहितविलम्बे च माधवे विधुरा।
विरचितविविधविलापं सा परितापं चकारोच्चैः॥
(७/२)

प्रबन्ध १३ : स्निग्धमधुसूदनरासावलयः

सखि हे, केकर शरण हम धारू!
नियत काल हरि वन नहि अयला
यौवन बुझि निरमाल भेरौला,
सखियो बुझल बेगारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

कथित समयेऽपि हरिरहह न ययौ वनं
मम विफलमिदममलरूपमपि यौवनम्।
यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवञ्चिता॥
(६/३)

राति विकाल एलहुँ एहि वन मे
मनसिज जाठि घसाओल तन मे,
कोना मनक दुख टारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितं
तेन मम हृदयमिदमसमशरकीलितम्॥
यामि हे कमिह शरणं . . . . (६/४)

एहन असह विरहानल लेसल
तदपि कियै जीवी नहि जानल
भल थिक मरण विचारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

मम मरणेव वरमिति वितथकेतना ।
किमिति विषहामि विरहानलमचेतना॥
यामि हे कमिह शरणं . . . . (६/५)

हमरा लेल मधुर मधुयामिनि
फुटल धैल सौंपहुँ विष-वारुणि
सौतिनि बनल दुलारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनि ।
कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी॥
यामि हे कमिह शरणं . . . . (६/६)

मणिमय कङ्कन स्वर्णभूषण
व्यर्थक पहिरन सभ मे दूषण
टलहा जानि उतारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

अहह कलयामि वलयादिमणिभूषणम् ।
हरिविरहदहनवहनेन बहुदूषणम्॥
यामि हे कमिह शरणं . . . . (६/७)

कुसुम-माल्य पूर्वहि सन धारल
कुसुमायुध बुझि मनसिज मारल
सुमन-सुकोमल तन विषबारू,
सखि हे, केकर शरण हम धारू!

कुसुमसुकुमारतनुमतनुशरलीलया ।
स्रगपि हृदि हन्ति मामतिविषमशीलया॥
यामि हे कमिह शरणं . . . . (६/८)

हम बेंतक वन पड़ल एकाकी
हरि मन धन सन कुंरयने आबी
की विधि विरह निबारू,
सखि हे,केकर शरण हम धारू !

अहमिह निवसामि नगणितवनवेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ॥
यामि हे कमिह शरणं .. .. (७/९)

हरिक चरण रक्षक छथि जिनकर
श्रीजयदेव रटल गुण तिनकर
गीतक पद मन धारू,
सखि हे,केकर शरण हम धारू !

हरिचरणशरणजयदेवकविभारती ।
वसतु हृदि युवतिरिव कोमलकलावती ॥
यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवञ्चिता ॥ (७/१०)

की कारण जे हरि नहि अयला
की, दोसर के रूप लोभयला?
बन्धु-मित्र सङ्ग खेल भुलयला,
अथवा मिलनक ठौर भटकला?

तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किंवा कलाकेलिभि-
र्बद्धो बन्धुभिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति ।
कान्तः क्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः
सङ्केतीकृतमञ्जुवञ्जुललताकुञ्जेऽपि यन्नागतः ॥ (७/११)

बेंतक वन मे एसकरि राधा
विविध भाँति सोचइ छथि,
सखी गेल छथि हरिकें आनय
छटपट दुनुक बाट तकइ छथि ।
बड़ी काल पर दूती घुरली
हरिक सङ्ग नहि, एसकर अयली,
राधा देखि विषण्ण सखी-मुख
शंकित मन कै तर्क भमयली ।

अथागतां माधवमन्तरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकाम् ।
विशङ्कमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह ॥
(७/१२)

रतिक्रीड़ा - उपयुक्त वसन मे
मर्दित पुष्प फँसल कुन्तल मे
कोनो युवति गुणमति रति-निपुणा
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे ।

प्रबन्ध १४ : हरिमितचम्पककेशरः

स्मरसमरोचितविरचितवेशा
गलितकुसुमदरविलुलितकेशा
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥
(७/१३)

श्रीभगवानक आलिङ्गन मे
रोमाञ्चित कामिनि स्वयं रति मे
कुच-कलसी पर माला गति मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

हरिपरिरम्भणवलितविकारा ।
कुचकलशोपरि तरलितहारा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(८/१४)

हरि-तन-आसन चढ़ि चन्द्रानन
अलस नयन चूमय रस-बासन
छितरल कच भुतिआयल घन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

विचलदलकललिताननचन्द्रा ।
तदधरपानरभसकृततन्द्रा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(८/१५)

रति-गति कुण्डल दलित कपोलन
गतिमय कटि घण्टी धुन घन-घन
सघन लहरि उन्माद जघन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

चञ्चल कुण्डलदलितकपोला ।
मुखरितरसनजघनगतिलोला ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (८/१६)

नयन निमीलित हरि मुसुकाबथि
हँसय सुधीरा हरि पुलकाबथि
रतिरस निपुणा घुटकय धुन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

दयितविलोकितलज्जितहसिता ।
बहुविधिकूजितरतिरसरसिता ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (८/१७)

विपुल पुलक कम्पित रोमाञ्चित
दीर्घ साँस तन-मन आनन्दित
शिथिल वदन निश्चेष्ट मगन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे ॥

विपुलपुलकपृथुवेपथुभङ्गा ।
श्वसितनिमीलितविकसदनङ्गा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥(८/१८)

रतिश्रम-सीकर लथपथ तन मे
खेल समापि सधीरज रण मे
हरिक वक्ष पर माथ खसौने
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे।

श्रमजलकणभरसुभगशरीरा ।
परिपतितोरसि रतिरणधीरा ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (८/१९)

श्रीजयदेव भनित हरि-रमिता
कलि-कल्मष हरिकस्य पुनीता
सुख-समृद्धि बढ़य आँगन मे
मधुरिपु सङ्ग रमय कानन मे ।

श्रीजयदेवभणितहरिरमितम् ।
कलिकलुषं जनयतु परिशमितम् ॥
कापि मधुरिपुणा विलसति युवतिरधिकगुणा ॥ (६/२०)

हे सखि, पहिने सुखकर छल शशि
वेदन मनक हरइ छल,
आब तेह शशि पाण्डु वर्ण छथि
साँझहि सँ मन बेकल।
विरह दशा मे हमरा तजि हरि
पीत-विवर्ण बनल छथि,
तिनके वर्णक चन्द्र आब ई
कामक मित्र बनल छथि ।
नित्य साँझ मे चान उदित भै
हरि-मुख स्मृति पाड़य,
डुमरिक फूल बनल छथि माधव
तैं हिमकर हिआ जारय ।

विरहपाण्डुमुरारिमुखाम्बुजद्युतिरयं तिरयन्नपि वेदनाम् ।
विधुरतीव तनोति मनोभुवः सुहृदये हृदये मदनव्यथाम् ॥
(६/२१)

प्रबन्ध १५ : हरिरसमन्मथतिलकम्

एखन मुरारी यमुना-तट पर
वन मे रमण करइ छथि,
कोनो विलासिनि गोपवधूकें
मुख पर तिलक करइ छथि।
चुम्बन लोभें अधिक लग स'
गालक चित्र लिखइ छथि,
साँसक उष्ण प्रवाहें ओकरा
मन रोमाञ्च भरइ छथि।
रोमाञ्चित सिहरल तन वनिता
नहुँ-नहुँ मसकि रहल अछि,
कस्तूरी के तिलक भाल पर
मृगलाञ्छन लागइ अछि।

मुमुदित मदने रमणीवदने चुम्बनवलिताधरे ।
मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ॥
रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना ॥ (६/२२)

ओहि रमणी के केस सघन अछि
औंठिया मेघक रङ्ग सन,
सुन्दर आ तेहने मनोहर अछि
मोहय युवकक तन-मन ।
तइ मोहक कुन्तल मे माधव
चमकी फूल सजइ छथि,
लागय मनसिज यौवन-वन मे
हरिणि सिकार करइ छथि।

घनचयरुचिरे रचयति चिकुरे तरलिततरुणानने।
कुरबककुसुमं चपलासुषमं रतिपतिमृगकानने ॥ रमते....
(६/२३)

ओहि रमणी के दुनू पयोधर
उठल गगन सन लागय,
तइ पर छितरल मणिमाला जौं
तारावलि सन लागय।
ठोस कठोर सुविस्तृत वक्षक
सुषमा रातुक नभ सन,
अर्धचन्द्र सन नख पद-युग्मक
कस्तूरी नीलाञ्जन।

घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरूषिते।
मणिसरममलं तारकपटलं नखपदशशिभूषिते॥ रमते...
(6/24)

अति कोमल मिरणाल-नाल भुज
कर मे लै सोहराबथि,
नीलमणिक कङ्गन सौं माधव
रमणिक हाथ सजाबथि।

जितबिसशकले मृदुभुजयुगले करतलनलिनीदले।
मरकतवलयं मधुकर निचयं वितरति हिमशीतले॥ रमते॰
(6/25)

रत-रत गोर पृथुल युग-जघनक
आसन स्वर्ण-सिंहासन,
रतिपति कामक जेना लगइ औ
ओइ पर होयत चुमाओन।
सिद्ध धूप सँ बासल जघनक
मणिमाला सँ सज्जा,
मङ्गल वंदनहार सजाबथि
कटि मे हरि बिनु लज्जा।

रतिगृहजघने विपुलापघने मनसिजकनकासने।
मणिमयरसनं तोरणहसनं विकिरति कृतवासने॥ रमते....
(6/26)

नव पल्लव सन लाल-लाल पद
श्वेत नखक मणि सोभय,
बाउर भेला हरि पद-शोभा पर
तैं एतबा अनुरोधय।
पहिने पद चुमकारि हँसोतथि
पुनि दोपटा सँ पोछथि,
लछमिक बास हृदय मे तइ ठाँ
टेकि आल रङ साजथि।

चरणकिसलये कमलानिलये नखमणिगणपूजिते।
बहिरपवरणे यावकभरणं जनयति हृदि योजिते॥ रमते....
(6/26)

हे सखि, अहाँ सुनइ छी केवल
किछु नहि बोल बजइ छी,
हमर दशा दयनीय बनल अछि
टक-टक अहाँ तकइ छी।
ओ हलधर-हरबाह-सहोदर
हुनका रुचय गोआरिनि,
ओ छथि दुष्ट गमारहु तेहने
तैं घसवाहिनि भामिनि।
व्यर्थ विपिन मे समय गमाओल
ओ नहि छथि तइ जोकरक,
भैंस-भसन्नरि भावनि हुनका
अपनहुँ छथि अपरोजक।

रमयति सुभृशं कामपि सुदृशं खलहलधरसोदरे।
किमफलमवसं चिरमिह विरसं वद सखि! विटपोदरे॥ रमते...
(6/28)

श्रीजयदेव हरिक पद-सेवक
गुणनिधि रास-रसेश्वर,
कामोद्दीपक पद गाओल कवि
कलि-भय हरु परमेश्वर।

इह रसभणने कृतहरिगुणने मधुरिपुपदसवके।
कलियुगरचितं न वसतु दुरितं कविनृपजयदेवके॥ (८/२९)

"हे सखि, राधे!"
"कह बहिना, की?"
"निठुर ने अयला!"
"तैं तोरा की?"
"दुःखी किये तों?
तों हरखित हो,
तोरे चालि छउ,
अपना घर जो!"
"बहुत नारि सँ ओ घेरायल छथि
निर्बाधें हरि रमण करइ छथि",
"एक ओही मे तोहूँ माउगि छें
बुलिक सङ्ग निलज्ज सुतइ छथि।"
"देखिहक आइ देखैबनि हमहूँ
फाटल कोंकड़ि कोंढ़ हमर अछि,
राति वनक बिच जागि बितायब
देखी के भाउठ करबइ अछि।"

नायक: सखि! निर्दयी यदि शठस्त्वं दूति! किं दूयसे?
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते, किं तत्र ते दूषणम्?
पश्याद्य प्रियसङ्गमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै-
रुत्कण्ठार्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति॥
(८/३०)

प्रबन्ध १६ : नारायणमदनायासः

कमलनयन वनमालिक सङ्ग
किसलय सेज सुतय जे,
तेकरा नहि व्यापय कामनल
सखि, हरि सङ्ग रमय जे।

अनिलतरलकुवलयनयनेन।
तपसि न सा किसलयशयनेन।
सखि! या रमिता वनमालिना॥ (८/३१)

विकसित कमल मनोहर आनन
देखि ठकायल से सुधुआ मन,
रमल ने हरि के सङ्ग तेकर की
मनसिज नहि बेधत आकुल तन?

विकसितसरसिजललितमुखेन।
स्फुटति न सा मनसिजविशिखेन॥
सखि! या रमिता वनमालिना॥ (८/३२)

अमृततुल्य हरिक वचनामृत
बातहि मे रहि गेलि जे विस्मृत,
जे नहि रमल हरिक सङ से की
मलय पवन सँ होयत तापित?

अमृतमधुरमृदुतरवचनेन।
ज्वलति न सा मलयजपवनेन॥
सखि! या रमिता वनमालिना॥ (८/३३)

स्थलकमलक कान्ति चरण-कर
देखैत भुलायलि जे रस-किङ्कर,
सुतल नै सङ्ग, चन्द्रकिरण सँ
से वनिता लोटत नहि भू पर?

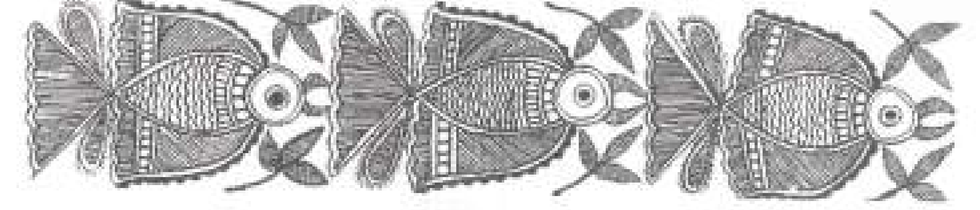
स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन ।
लुठित न सा हिमकरकिरणेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३४)

उद्धत सजल मेघ सन उमरल
रूप देखि वनिता जे भटकल,
कैल नै शयन हरिक सङ सेजनि
विकल नै होय विरह-दुःख कातर?

सजलजलदसमुदयरुचिरेण ।
दलति न सा हृदि चिरविरहेण ॥
सखि या रमिता वनमालिना ॥ (६/३५)

स्वर्ण-निकष सन कृष्ण वर्ण भल
तइ पर धारल पीताम्बर पट,
रङ्गहि भूलल, भोगल नहि हरि
से उपहासें पड़य नै सङ्कट?

कनकनिकषरुचिशुचिवसनेन ।
श्वसिति न सा परिजनहसनेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३६)



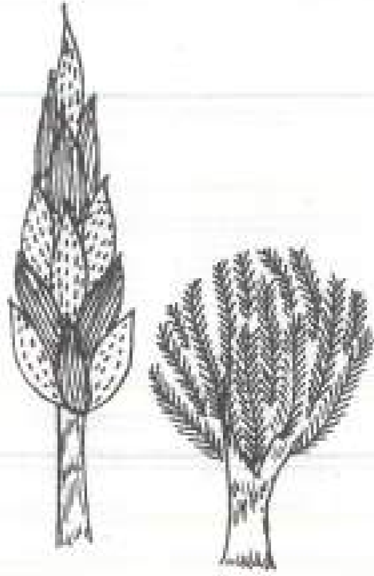
सकल भुवन मे श्रेष्ठ तरुण वर
से नहि भोगल जे बुझि बाँतर,
सेवनिता विरहिनि, करुणावश
विरह-नीर भीजत नहि आँचर?

सकलभुवनजनवरतरुणेन ।
वहति न सा रुजमतिकरुणेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३७)

श्रीजयदेवक रसमय भावक
गीत सुखद पैसथु हृदि नटवर,
राधा-कवि-श्रोता-पाठक कैं
मन पूरथु नारायण नागर।

श्रीजयदेवभणितवचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन ॥
सखि! या रमिता वनमालिना ॥ (६/३८)

हे मलयाचल-पवन सुगन्धित
दक्षिण अहाँ कहाबी,
रही सतत अनुकूल जीव पर
हमरा किये सताबी ?
क्षण भरि होउ सदय हमरो प्रति
हमरो प्राण उबारू,
कामदेव के मित्र गन्धवह
एना ने जी कें जारू।
जेना शिखण्डी के आगाँ कै
अर्जुन भीष्म कें मारल,
तहिना कृष्णक आश लगा कै
तौं नित काया जारल।



मनोभवानन्दन चन्दनानिल !
प्रसीद रे दक्षिण ! मुञ्च वामताम।
क्षणं जगत्प्राण ! विधाय माधवे
पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि ॥ (६/३९)

हे सखि, हमर मनहि अछि दोषी
जड़ि अछि सभ उत्पातक,
जेकरा कारण विरह अङेजल
अरजल घन सन्तापक।
जाहि कृष्ण के कारण तेजल
सखी- सुहिरदय-परिजन,
तेकरहि मन बिसरय नहि पल-छिन
वैरि बनल सभ पुरजन।
नीक ने लागय सखी-बहिनपा
चन्द्र-किरण विष-बाँतर,
मलयानिल देहे झरकाबय
श्वास भेल दुख-कातर।



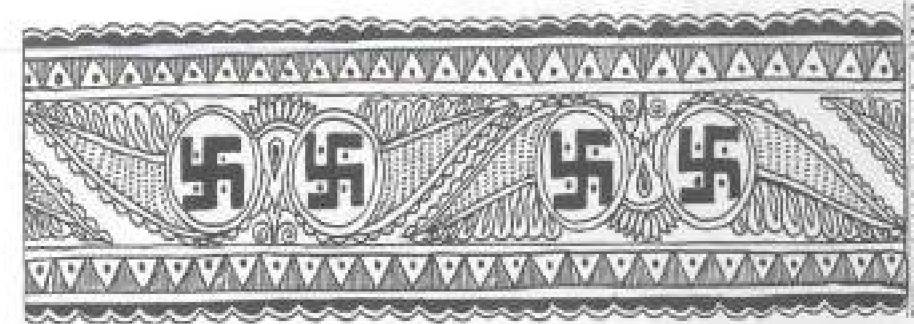
रिपुरिव सखीसंवासोऽयं शिखीव हिमानिलो
विषमिव सुधारश्मिर्यस्मिन्दुनोति मनोगते।
हृदयमदये तस्मिन्नेव पुनर्वलते बला-
त्कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरङ्कुशः ॥ (६/४०)

हे मलयानिल अनल-ज्वालबनि
जार' भीतर-बाहर,
कामदेव, तोँहू नहि चूक',
छोड़ह बाण तड़ातड़।
हे यमुने, तोँ यमक बहिन छ'
भल लै प्राण डुबाब',
विरह-दग्ध तन शीतल होयत
सभ क्यो ओलि पुराब'।
केतबो दुःख-सन्ताप बढ़ै बरु
घुरब घर नहि ता' धरि,
जा' हरि सँ पुनि मिलन होय नहि
साँस चलइ अछि जा' धरि।



बाधां विधेहि मलयानिल! पञ्चबाण!
प्राणान्गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये।
किंते कृतान्तभगिनि! क्षमया तरङ्गै-
रङ्गानि सिञ्च मम शाम्यतु देहदाहः॥ (८/४१)

वन मे कहुना राति बितौलनि
नीन टुटल अन्हरोखे,
सपना देखल हरि सूतल छथि
पाँजर लागि अधोखे।
जानि कहुन छलनीन स्वप्न मे
अनचोके सभ उनटा,
हरिक वक्ष कञ्चुकि सँ झाँपल
राधा पीअर दोपटा।
सखी-बहिनपा ठाढ़ि हँसइ छलि
मारथि जोर ठहाका,
सभहक मन आनन्द करथु हरि
फहरओ पुण्य-पताका।



प्रातर्नीलनिचोलमच्युतमुरः संवीतपीतांशुकं
राधायाश्चकितं विलोक्य हसति स्वैरं सखीमण्डले।
व्रीडाचञ्चलमञ्चलं नयनयोराधाय राधानने
स्वादुस्मेरमुखोऽयमस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजः॥
(८/४२)

आठम सर्ग

विलक्ष्यलक्ष्मीपति

कौनो प्रकारें राति बितौली
राधा वन-पाँतर मे,
विरह-उपेक्षा काम-वेदना
बान्हि अपन आँचर मे।
प्रात अन्हारे अनायास हरि
राधा सम्मुख अयला,
प्रणत भाव सँ माथ झुकौने
ठाढ़ बीक बनि रहला।
विकट विरह के नाँघि मानिनी
हरि के देखि बगदली,
प्रियतम देखि असूया उपजल
जे-से वचन बरसली।



अथकथमपि यामिनीं विनीय स्मरशरजर्जरितापि सा प्रभाते।
अनुनयवचनं वदन्तमग्रे प्रणतमपि प्रियमाह साभ्यसूयम् ॥
(८/१)

प्रबन्ध १७ : लक्ष्मीपतिरत्नावली

जाउ-जाउ ए माधव एहि ठाँ
ठहरक काज उचित नहि,
जाउ जत' बेसी सुख भेटय
एहि ठाँ फूसि चलत नहि।
कमलनयन अछि नाम अहाँके
नयन जुड़ाउ ओहि ठाँ,
हिंजक हिंज गोआरिनि नाचय
मटकि-मटकि क' जइ ठाँ।
पहिने घर मे जाक' सूतू
आँखि लाल अड़हुल सन,
सगर राति रस-रङ्गक मातल
प'ल फुलल गुल्लरि सन।

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिवेशम् ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशम् ॥
हरि हरि याहि माधव! याहि केशव! मा वद कैतववादम् ।
तामनुसर सरसीरुहलोचन! या तव हरति विषादम् ॥
(८/२)

नाम कृष्ण अछि वर्ण कृष्ण अछि
ठोर सतत अरुणायल,
आइ किये अछि कारी-झामर?
आँखिक काजर लागल।

कज्जलमलिनविलोचनचुम्बनविरचितनीलिम रूपम् ।
दशनवसनमरुणं तव कृष्ण! तनोति तनोरनुरूपम ॥
(८/३)

काम-केलि के झमझौहरि मे
अङ्ग-अङ्ग नोछरायल,
मरकतमणि पर स्वर्ण-लेख सन
रतिजय-लेख लिखायल।

वपुरनुहरति तव स्मरसङ्गरखरनखरक्षतरेखम् ।
मरकतशकलकलितकलधौतलिपेरिव रतिजयलेखम् ॥
(८/४)

क्रौञ्चबन्ध रति-आसन मे जे
पद-युग छौ वामा के,
अहाँ हृदय पर मैथुन भोगल
निकलल छाप धमाके।

चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ॥
(८/५)

अधराधर भुजरी-भुजरी अछि
दन्तक्षतें थकुचायल,
कहाँ गेल ओ बात अभेदक
विश्वासे भसिआयल।

दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् ॥
(८/६)

उहाँ प्रकृति सँ परम शुद्ध छी
प्रणतपाल परिपालक,
अधलाहक सङ्गति मे सभटा
चालि कुचालि बनायल।

बहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण! मनोऽपि भविष्यति नूनम्।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम् ॥
(८/७)

नेनमतिए सँ नारिक हन्ता
पुतना के वध कैलहुँ,
एही काज मे वन विचरइ छी
हमर दशा ई कैलहुँ।

भ्रमति भवानबलाकवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दयबालचरित्रम् ॥ (८/८)

हे सुरगण विधुगण कवि-कोविद
श्रीजयदेव रसात्मक,
रति-वञ्चित राधा-माधव के
सुनु विलाप सुखकारक।

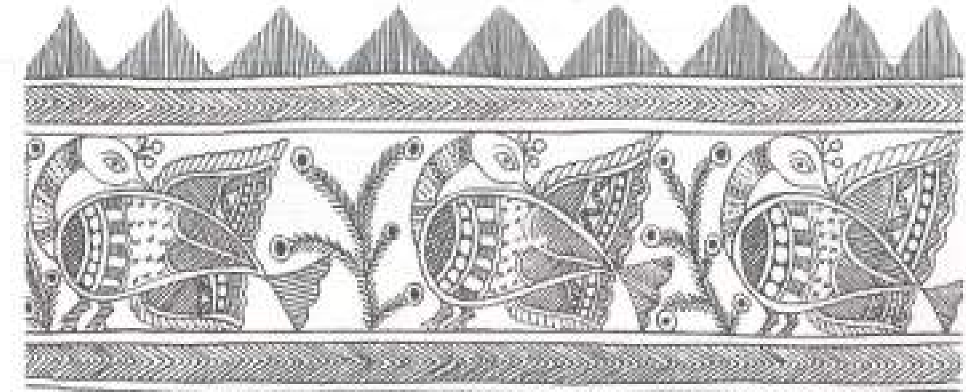
श्रीजयदेवभणितरतिवञ्चितखण्डितयुवतिविलापम् ।
शृणुत सुधामधुरं विबुधा! विबुधालयतोऽपि दुरापम् ॥
(८/९)

कतेक गाढ़ अछि रङ्ग सिनेहक
ओहि रति-लोलुप प्रतिएँ,
भीतर स' से उभरि रहल अछि
पसरल विस्तृत बहीं।
एहि बातक नहि दुःख अछि हमरा
लज्जा मात्र लगइ अछि,
दूती बनि जे गेल समदिया
अहाँ सङ्ग सूतइ अछि।
तेकरहि पयरक छाप हृदय पर
अहाँ सगर्व धरइ छी,
कौस्तुभ मणि जइ ठाँ सोभइ छल
दूतिक पयर छापइ छी।



तवेदं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव
प्रियापादालक्तच्छुरितमरुणद्योति हृदयम्।
ममाद्य प्रख्यातप्रणयभरभङ्गेन कितव!
त्वदालोकः शोकादपि किमपि लज्जां जनयति॥ (८/१०)

हरि-बनसी-धुन महामन्त्र अछि
सुन्दरि मे मन-मोहित,
घुमा-घुमा सिर नाचथि धुन पर
स्तम्भित-आकर्षित।
बनसी-धुन मन्दार पुष्प कें
ठुनका सँ भहराबय,
दानव-दुष्टक कोंढ़ तोड़ि कें
सुरगण सुखी बनाबय।
मुरली धुन बनि पाञ्चजन्य-रव
असुर-प्रवृत्ति पराजय,
हरि-रति-गान मुग्ध श्रोता कें
बहुविधि सुख पहुँचाबय।



अन्तर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्मन्दारविभ्रंशन-
स्तम्भाकर्षणदृप्तिहर्षणमहामन्त्रः कुरङ्गीदृशाम्।
दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां
भ्रंशः कंसरिपोर्विपीलयतु वः श्रेयांसि वंशीरवः॥

नवम सर्ग

मुग्धमुकुन्द

रातुक विकल खण्डिता राधा
जँह-तँह हरि के बजली,
अपनहि मन अपसोच करथि पुनि
खिन्न भमा क' बैसली।
रति-चिर वञ्चित मन विषादमय
व्यवहारें सन्तप्ता,
हरि कें बिसरि सकलि नहि मानिनि
चिन्तित कलहन्तरिता।
सखि उपरागक रेख ने मानलि
मनक विकलता बूझलि,
विरह-व्यथा जर्जर राधा सँ
अति सिनेह-स्वर बाजलि।

तामथ मन्मथखिन्नां रतिरसभिन्नां विषादसम्पन्नाम्।
अनुचिन्तितहरिचरितां कलहान्तरितामुवाच रहसि सखी॥
(९/१)

बहय पवन वासन्ती तैखन
हरि अपनहि अभिसरथि नियत वन
एहि सँ बढ़ि की भाग होय सखि
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि।

प्रबन्ध १८ : अमन्दमुकुन्द

हरिरभिसरति वहति मधुपवने।
किमपरमधिकसुखं सखि! भवने॥
माधवे मा कुरु मानिनि! मानमये॥ (९/२)

ताड़क फल सँ बाढ़ि सरस मधु
ललित कलित आकार कलस-कुच
व्यर्थ करू नहि हरी समरपू
देरि करू नहि हरि-प्रिय भामिनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि।

तालफलादपि गुरुमतिसरसम्।
किं विफलीकुरुषे कुचकलशम्?
माधवे मा कुरु मानिनि! मानमये। (९/३)

त्रैलोक्यक सभ सँ सुन्दर वर
तजब व्यर्थ मे बाजि अनर्गल
हरि सँ बाढ़ि मनोज्ञ पुरुष के?
सुषमा जिनकर छनि जग-व्यापिनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि।

कति न कथितमिदमनुपदमचिरम्।
मा परिहर हरिमतिशयरुचिरम्॥
माधवे मा कुरु मानिनि! मानमये॥ (९/४)

एतबा अधिक विषाद किये अछि,
राति-दिनक ई रुदन किये अछि?
एहन बताहि-घताहि बनल छी
देखि हँसय सभ साथी-सङ्गिनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि।

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला?
विहसति युवतिसभा तव सकला॥
माधवे मा कुरु मानिनि! मानमये॥ (९/५)

औत' कुञ्ज मे नियत ठौर पर
सजल पुरैनिक नवल सेज पर
सुतल प्रतीक्षारत माधव के
देखि जुड़ाउ पियासल नैननि
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि ।

सजलनलिनीदलशीतलशयने ।
हरिमवलोकय सफलय नयने ।।
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ।। (९/६)

मन मे अगबे खेद भरल अछि
मुँह पर कष्टक स्वेद पड़ल अछि
हमरो बात सखी किछु मानी
हरि मन मे नहि भेद सुहासिनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि ।

जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदम् ?
शृणु मम वचनमनीहितभेदम् ।।
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ।। (९/७)

श्रीभगवान अहाँ लग आबथि
मधुर वचन सँ मन हरखाबथि
मन मे रोख करू नहि कनिञो
हरिक प्रिया रसमयि बरभागिनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि ।

हरिरुपयातु वदतु बहुमधुरम् ।
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम् ।।
माधवे मा कुरु मानिनि ! मानमये ।। (९/८)

श्रीजयदेवक हरिगुण-कीर्तन
हरयकलेस सुखद मन-रञ्जन
भक्तजनक हित पुण्य-प्रदाता
रसिक लेल अनुपम मधुस्राविनि,
माधव सँ एत मान उचित नहि मानिनि ।

श्रीजयदेवभणितमतिललितम् ।
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् ।।
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये ।। (९/९)

जे व्यवहार उचित नहि किन्नहु
तेहने काज करइ छी,
अपने चालिए विरह बेसाही
हमरो मारि पड़इ छी ।
कतेक राग-अनुराग अहाँ ले'
माधव मने रखइ छथि,
सभ किछु त्यागि विरागि भेल हरि
नाम अहाँक जपइ छथि ।
जैं व्यवहार रहन अछि तैं ने
चानन जहर लगइ अै,
चन्द्रकिरण सँ धाह लगइ अछि
दग्ध तुषार करइ अै ।।

स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणी
द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये ।
तद्युक्तं विपरीतकारिणी तव श्रीखण्डचर्चा विषं
शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीडामुदो यातनाः ।। (९/१०)

हमहूँ अपन अशुभ नाशइ ले'
हरिगुण-कथा लिखइ छी,
श्रीभगवानक चरण-कमल पर
वन्दन अरपि रहल छी ।
औह् पद्मक परिमल बनि गङ्गा
चित् स्वच्छन्द बहइ छथि,
सुरगण मौलि झुका माधव कें
सादर नमन करइ छथि ।
झुकल मौलि मे खचित इन्द्रमणि
नील छटा छिटकाबय,
कमलक आगु-पाछु गेहराबैत
भृङ्ग-निकर सन लागय ।

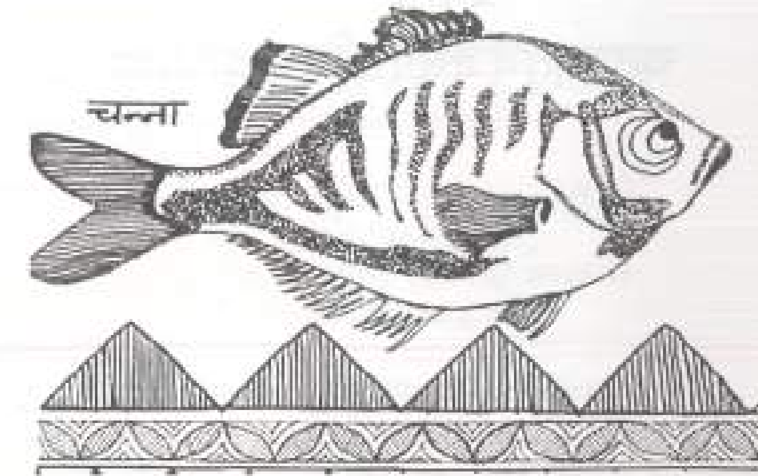


सान्द्रानन्दपुरन्दरादिदिविषदवृन्दैरमन्दादरा-
दानम्रैर्मुकुटेन्द्रनीलमणिभिः सन्दर्शितेन्दिन्दिरम् ।
स्वच्छन्दं मकरन्दसुन्दरगलन्मन्दाकिनीमेदुरं
श्रीगोविन्दपदारविन्दमशुभस्कन्दाय वन्दामहे ॥ (९/११)

दसम सर्ग

चतुरचतुर्भुज

दिन भरि सखी मनाबैत रहली
विविध वचन बुधिआरि सुनौली,
मनक रोख खुट्टा नहि छोड़ल
राधा हृदय उछौंत ने भेली ।
दिन बीतल संध्या घुरि आयल
राधा आर विकल भे उठली,
कोमल तामस पसरल आनन
साँस-निसासक बोझें दबली ।
हुनका मन मे खेद एकर जे
हरि अपना जोकरक नहि बुझला,
तखनहि कतहु विपिन सँ माधव
निकलि सुकोमल स्वर मे बजला ।



अत्रान्तरे मसृणरोषवशामपारनिः श्वासनिः सहमुखीं सुमुखीमुपेत्य ।
सव्रीडमीक्षितसखीवदनां दिनान्ते सानन्दगद्गदपदं हरिरित्युवाच ॥
(१०/१)

हे प्रियतमे! सुधामयि , शीले !
हासमुखी किछु बाजू,
बजैत काल दन्तक द्युति छिटकत
घोर मनक तम काटू ।
    तमस-हरण सँ हिअ-पट फूजत
    वैकल्यक घन फाटत,
    नयन चकोर निरखि चन्द्रानन
    अधर-सुधारस चाटत ।
अहीं हमर सुखधाम, अहीं छी
तन-मन-नित अनुरङ्गिनि,
वृथा मान के त्यागि मानिनी
ताप हरू अनुरागिनि ।

प्रबन्ध १६ :
चतुरचतुर्भुजरागराजिचन्द्रोद्योत:

वदसि यदि किञ्चिदपि दन्तरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरम् ।
स्फुरदधरशीधवे तव वदनचन्द्रमा
रोचयतु लोचनचकोरम् ॥
प्रिये! चारुशीले! मुञ्च मयि मानमनिदानम् ।
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं
देहि मुखकमलमधुपानम् ॥ (१०/२)

हे सुषमामयि, शोभनदन्ते!
जँ तमसायल अहाँ छी,
बान्हू, काटू, देह नछोड़ू
दण्ड जे किछु जानइ छी ।
    भुज-बन्धन मे बान्हू हमरा
    नख सँ देह भम्होरू,
    दन्तावलिएँ अधर चाँपिकै
    जे मन हो सुख लूटू ।

सत्यमेवासि यदि सुदति! मयि कोपिनी
देहि खरनखरशरघातम् ।
घटय भुजबन्धनं जनय रदखण्डनं
येन वा भवति सुखजातम् । (१०/३)

अहीं हमर सभ अलङ्कार छी
अहीं हमर जीवन छी,
अहीं हमर एहि भव-सागर के
सभ अनमोल रतन छी ।
    कोना रहब अनुकूल अहाँ से
    सक भरि जतन करइ छी,
    मन मे क्लेश रहै नहि कखनो
    से अभिलाख करइ छी ।

त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं
त्वमसि मम भवजलधिरत्नम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी
तत्र मम हृदयमतियत्नम् ॥ (१०/४)

नील नलिन सन नयन अहाँ के
क्रोधें लाल लगइ औ,
तब्बायल पोखरि मे दू टा
लाल कमल डोलइ औ।
जे अछि कारी दुःख सौं झामर
तेकरा लाल करइ छी,
हमरो कामक बाण बेधि क'
लाल किये ने करइ छी?

नीलनलिनभिमपि तन्वि! तव लोचनं
धारयति कोकनदरूपम्।
कुसुमशरबाणभावेन यदि रञ्जयसि
कृष्णमिदमेतदनुरूपम् ॥ (१०/५)

कलसाकार पयोधर तइ पर
मणि-मञ्जरि छवि पाबओ,
झिलमिल रश्मि छिटकि छाती पर
स्वप्निल भास बढ़ाबओ।
सघन जघन सौं कनिञे ऊपर
डँड़कस घुघरू लागल,
घन-घन झुन-झुन गीत सुनाबओ
कामदेव जनु आयल।

स्फुरतु कुचकुम्भयोरुपरि मणिमञ्जरी
रञ्जयतु तव हृदयदेशम्।
रसतु रसनापि तव घनजघनमण्डले
घोषयतु मन्मथनिदेशम ॥ (१०/७)

हे मधुभाषिनि, ताप-विनाशिनि
करू आदेश अखनिञे,
कमलेतर कोमल पद-युग मे
हाथ लगाबी कनिञे।
लाउ चरण हम आलक रङ सँ
नहुञे हाथ सजाबी,
कतेक अवधि सँ उजड़ल मन मे
कामोद्रेक जगाबी।

स्थलकमलगञ्जनं मम हृदयरञ्जनं
जनितरतिरङ्गपरभागम्।
भण मसृणवाणि! करवाणि चरणद्वयं
सरसलसदलक्तकरागम् ॥ (१०/६)

हमर हृदय मे जरय अहर्निशि
विषय-विकारक ज्वाला,
रोम-रोम आकुल तइ तापें
लहलह कामक हाला।
हमर माथ पर राखू मानिनि
शीतल अपन कमल-पद,
मनक ताप-सन्ताप शमन हो
जीवन होय निरापद।

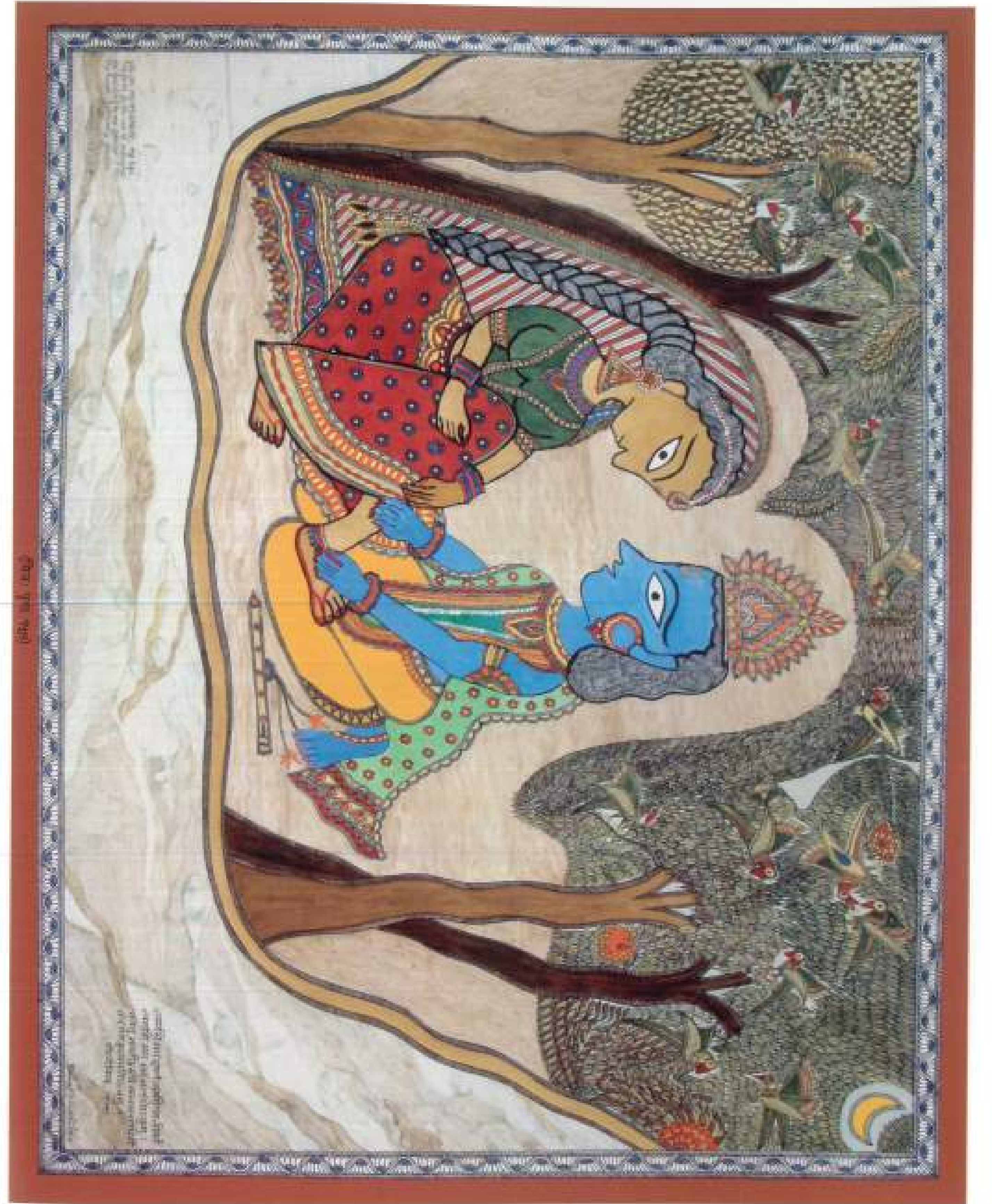
स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं
धेहि पदपल्लवमुदारम्।
ज्वलति मयि दारुणो मदनकदनारुणो
हरतु तदुपाहितविकारम् ॥ (१०/८)

चतुर चतुर्भुज चालि चढ़टगर
बोल तैना ने राखल,
श्रीजयदेवक कविगुण-पटुता
जय-जय सभ जग मानल।

इति चटुलचाटुपटुचारु मुरवैरिणो
राधिकामधि वचनजातम् ।
जयति जयदेवकविभारतीभूषितं
मानिनीजनजनितशातम् ॥ (१०/८)

मन मे जे शङ्का जड़िआयल
तइ सँ अहूँ विकल छी,
पहिने से शङ्का परिहारू
हमहूँ जरल-मरल छी।
कहाँ बुझी हमरा मन मे अछि
परवनिता के छाया,
मुदा ने एहि मे सत्य कनेको
ई सभटा अछि माया।
हमरा मन मे टीसय हरदम
अहँक वक्ष के नोकी,
रुचिर जघन के मादक सुषमा
कामदेव के झुलकी।
हमर हृदय मे आसन सदिखन
अहँक लेल राखल अछि,
बैसि ताहि पर बान्हू भुज मे
दासक मन व्याकुल अछि।

परिहर कृतातङ्के ! शङ्कां त्वया सततं घन-
स्तनजघनयाक्रान्ते स्वान्ते परानवकाशिनि ।
विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोऽपि ममान्तरं
प्रणयिणि ! परीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् ॥ (१०/१०)



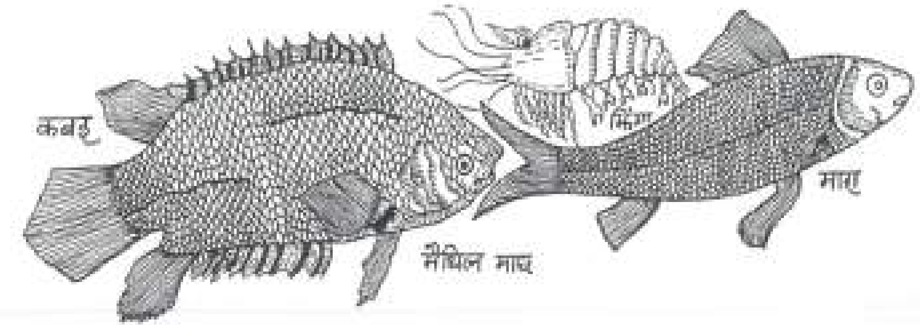
अभिनव दण्डक अभियान करू
मुग्धे ! हम अवनत छी,
करू अधर पर दन्त- प्रहारे
समुपस्थित अविरत छी।
बान्हू भुज-वल्लरि मे हमरा
स्तन सँ करू निपीड़न,
कामदेव चण्डाल बनल छथि
चण्डि ! करू उत्पीड़न।

मुग्धे ! विधेहि मयि निर्दयदन्तदंश-
दोर्वल्लिबन्धनिबिडस्तनपीडनानि ।
चण्डि ! त्वमिह मुदमुद्वह पञ्चबाण -
चाण्डालकाण्डदलनादसवः प्रयान्ति ।। (१०/११)

शशिमुखि ! बहुत विचित्र बात अछि
आनन आह्लादक अछि,
किन्तु भौंह कारी नागिन सन
युवकक हृदय डँसइ अछि।
तइ विष सँ बाँचइ लै' केवल
सिद्धमन्त्र उपकारक,
अधरक सुधा अहिंनेरे पीबी
सुन्दर विधि उपचारक।

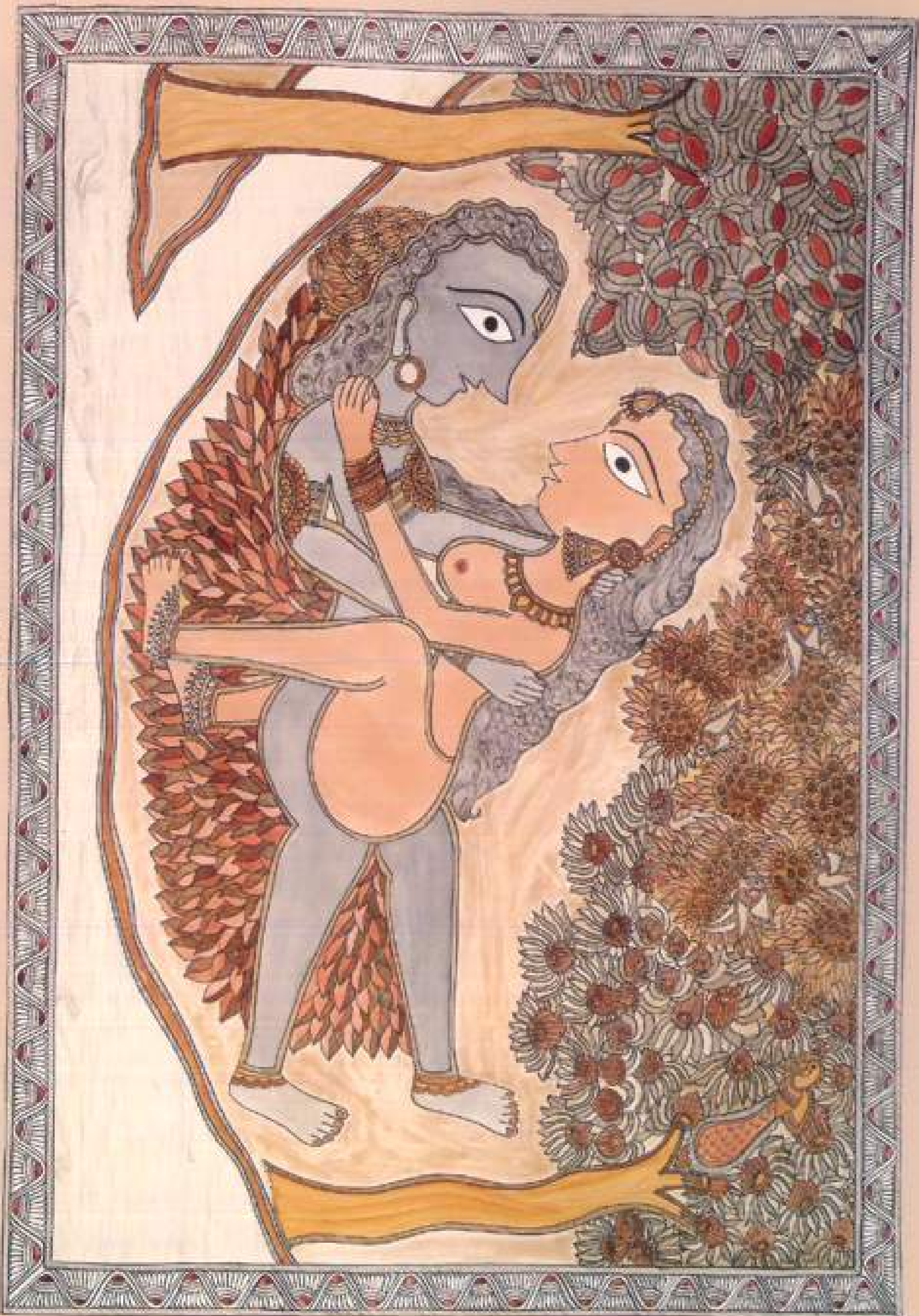
शशिमुखि ! तव भाति भङ्गुरभ्रूर्युवजनमोहकरालकालसर्पी ।
तदुदितभयभञ्जनाय यूनां त्वधरसीधुसुधैव सिद्धमन्त्रः ।।
(१०/१२)

हे तन्वी ! अछि वृथा मौन ई
मन परिताप भरइ औ,
कंल पड़ै नहि चित मे कौखन
रहि-रहि जेना मथइ औ।
तरुणि ! अहाँ कनिञे मन खोलू
पञ्चम सुर आलापू,
राग वसन्ती मन मधुआलय
विरह-व्यथा सभ बिसरू।
हे सुमुखी ! सन्ताप करू नहि
रूद विमुखता छोड़ू,
हमरा नहि छोड़ू एहि तरहें
भावक जड़ता तोड़ू।
हे मुग्धे ! हम हाजिर छी भल
प्रियतम विकल अहाँ के,
एक बेर ताकू भरि नयने
हँटत सकल दुख-तापे।

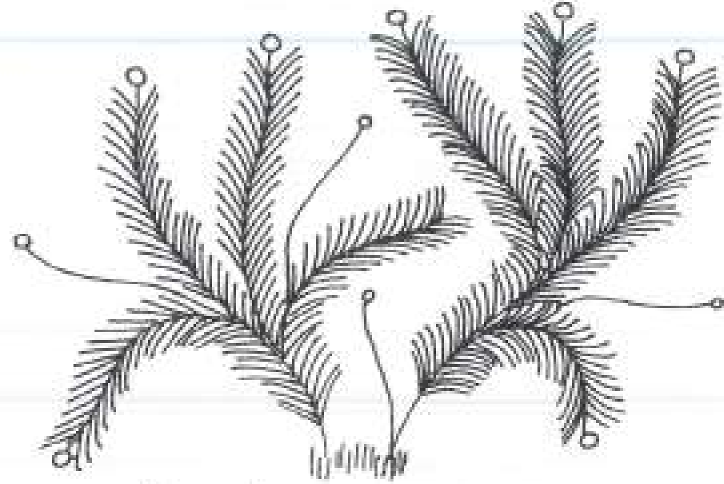


व्यथयति वृथा मौनं तन्वि ! प्रपञ्चय पञ्चमं
तरुणि ! मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः ।
सुमुखि ! विमुखीभावं तावद्विमुञ्च न मुञ्च मां
स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धे ! प्रियो'यमुपस्थितः ।। (१०/१३)



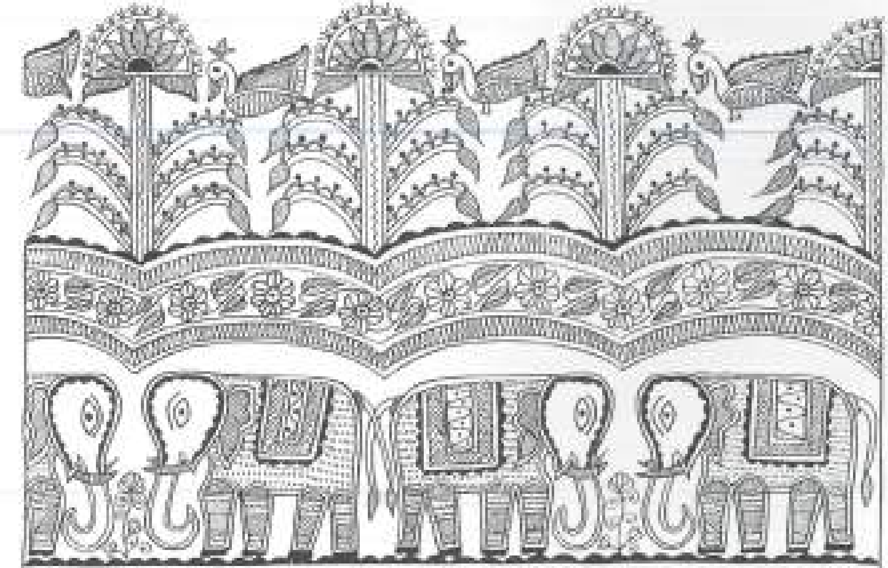


प्रिये ! केहन संयोग विलक्षण
एकहि ठाम सभ सुषमा,
मुखमण्डल मे बसय जहाँ के
तैं छी जहाँ अनुपमा ।
अधर लाल बन्धूक पुष्प सन
गाल गोर महुआ सन,
नीलकमल सौं बेसी सुन्दर
नयन अमिअ-बहुआ सन ।
तेहने नाकक छवि तिल फूलक
मोहक आर विलक्षण,
कुन्द पुष्प सन दन्तावलि अछि
उज्ज्वल द्युति मुक्ता सन ।
अहिंक मुखक सुषमा सँ सेवित
पाँचहु शर छनि कामक,
आकर्षण, वशकर, उन्मादन
द्रावण- शोषणकारक ।



बन्धूकद्युतिबान्धवोऽयमधरः स्निग्धो मधूकच्छवि-
र्गण्डश्चण्डि ! चकास्ति नीलनलिनश्रीमोचनं लोचनम् ।
नासाभ्येति तिलप्रसूनपदवीं कुन्दाभदन्ति ! प्रिये !
प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः ॥
(१०/१४)

ए तन्वङ्गी, श्री, रस-पुङ्गी
बूझल रहस अमोलक,
अहिंक देह मे बास करइ छथि
अप्सरि सभ सुर लोकक ।
अलस नयन अप्सरि मदालसा
इन्दुमती मुख-धामे,
मादक गति मे मनोरमा आ
जघने रम्भा नामे ।
हाव भाव रति हास कलायुत
तइ मे बसथि कलावति,
चित्र लिखल सन भौंह मनोहर
चितलेखा सुख पाबथि ।



दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दु सन्दीपनं
गतिर्जनमनोरमा विजितरम्भमूरुद्वयम् ।
रतिस्तव कलावती रुचिरचित्रलेखे भ्रुवो-
वहो विबुधयौवतं वहसि तन्वि ! पृथ्वीगता ॥ (१०/१५)



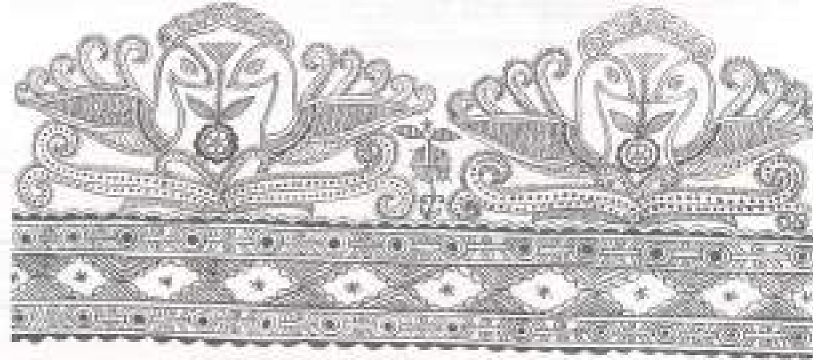
श्रीराधा के स्तन-कुम्हक
दृश्य देखल हाथी मे,
कुवलयपीड़क कुम्भ लगैजौं
विशद वक्ष छाती मे ।
पहिने देखि अचम्भित माधव
शृङ्गारक रस उपगल,
नहुँ- नहुँ सुनगल रुधिर, देह पर
स्वेदक बुनकी उमगल ।
देखि पसेना हरिक देह पर
कंसक जी हरखायल,
ओ बुझलक हाथी के डर सौं
बालक अछि घबड़ायल ।
ओम्हर हरि रति- स्मृति- रस मे
डूबि आँखि के मूनल,
कंसक दरबारी सभ मद मे
हरि निराश छथि बूझल ।
तखनहि हरि स्थिति दिस घुमला
देखल हाथी सम्मुख,
मारि मुष्टिका माथा फोड़ल
देल परमगति उन्मुख ।
लटपटाय कुवलय भू-लुण्ठित
"जितला हरि" स्वर गूँजल,
दुष्टक दलन कैलनि मधुसूदन
कंसक मटका फूटल ।
से राधा के प्रियतम माधव
जगतक हर्ष बढ़ाबथु,
धर्म काम आ अर्थक वैभव
सभहक लेल लुटाबथु ।

सप्रीतिं तनुतां हरिःकुवलयापीडेन सार्धं रणे
राधापीनपयोधरस्मरणकृत्कुम्भेन सम्भेदवान् ।
यत्र स्विद्यति मीलति क्षणमपि क्षिप्रं तदालोकन-
व्यामोहेन जितं जितं जितमभूत्कंसस्य कोलाहलः ॥
(१०/१६)

एगारहम सर्ग

सानन्ददामोदर

श्रीभगवान कैल बड़ अनुनय
आखिर राधा मानलि,
मनक मान्न सभ भेल तिरोहित
जैना नीन सँ जागलि।
रूक्ष अधर पर स्मिति पसरल
मृग-दृग ओजें चमकल,
उठल रोम मे लहरि प्रणय के
अनपट साँकल खनकल।
माधव विहुँसि निकेत सिधारल
राधा आलस झाड़ल,
चाटी-पाटी कैल सुरुचि सँ
बिरूफल मन हरखायल।
मुदा लाज नहि आँचर छोड़य
छिन अवगुंठन तानलि,
सकुचल सुमन सराहि शिलीमुख
सखि अनुरागें बाजलि।



सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुञ्जशय्याम्।
रचितरुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाद ॥ (११/१)

प्रबन्ध २० :
श्रीहरितालराजिजलधरविलसितम्

रचि-रचि वचन मधुर रस-तीक्ष्ण
चरण पकड़ि अनुनय मृदु-शीतल
बाट तकइ छथि आगू,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारू!

विरचितचाटुवचनरचनं चरणे रचितप्रणिपातम्।
सम्प्रति मञ्जुलवञ्जुलसीमनि केलिशयनमनुयातम् ॥ (११/२)

थुलथुल जघन पयोधर उमतल
मंथर गति हंसक मति मारल
नूपुर ध्वनि झमकारू,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारू!

घनजघनस्तनभारभरे! दरमन्थरचरणविहारम्।
मुखरितमणिमञ्जीरमुपैहि विधेहि मरालनिकारम् ॥ (११/३)

कृष्ण- भमर गुञ्जय मनमोहक
कोकिलकाम- निदेशक घोषक
नहि अवरोध विचारू,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारू!

शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधुपविरावम्।
कुसुमशरासनशासनबन्दिनि पिकनिकरे भज भावम् ॥
(११/४)

पवन-प्रकम्पित किसलय डोलय
लता-निकर संकेत कराबय
बेंतक वन झटकारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु !

अनिलतरलकिसलयनिकरेण लतानिकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु ! करोति गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् ॥
(११/५)

हार मनोहर विमल धारयुत
अभिलाषित स्तन बाजय किछु
नाजक घोघ उतारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु !

स्फुरितमनङ्गतरङ्गवशादिव सूचितहरिपरिरम्भम् ।
पृच्छ मनोहरहारविमलजलधारममुं कुचकुम्भम् ॥(११/६)

देह अहाँके रति अजबारल
सखि सभ जानथि सभकेँ बूझल
मन्मथ-विजय उचारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु !

अधिगतमखिलसखीभिरिदं तव वपुरपि रतिरणसज्जम् ।
चण्डि ! रसितरशनारवडिण्डिममभिसर सरसमलज्जम् ॥
(११/७)

मनसिज-बाण सरिस कर-पङ्कज
सखिक हाथ धँ चलू मतङ्गज
कङ्कन धुनि पसारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु !

स्मरशरसुभगनखेन सखीमवलम्ब्य करेण सलीलम् ।
चल वलयक्वणितैरवबोधय हरिमपि निगदितशीलम् ॥
(११/८)



मुक्ता हार, रमणि हेँ उत्तम
जयदेवक पद हरिगुण सत्तम
गीतगोविन्द उचारु,
मुग्धे, माधव-पथ अभिसारु !

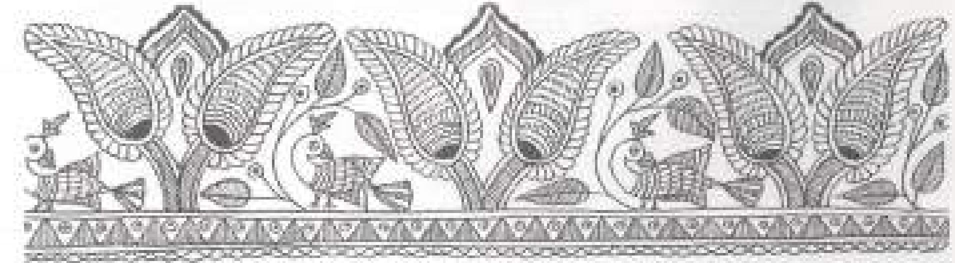
श्रीजयदेवभणितमधरीकृतहारमुदासितवामम् ।
हरिविनिहितमनसामधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरामम् ॥ (११/९)

ए सखि, एहन कठोर कनु नहि
हरि छथि भेल निठोहर,
निमुन निकुञ्ज निविड़ तम घेरल
तइ ठाँ बइसल रसकर ।
कतेक काल सँ बाट निहारथि
किसलय सेज ओछौने,
खन एम्हर खन ओम्हर ताकथि
चिन्ता माथ चढ़ौने ।
ओ सोचथि अओती रस-नागरि
बजती किछु रस बतिआ,
अङ्ग-अङ्ग के छूबि मेटौती
विरह-वियोगक पतिआ ।
सोचि मने रोमाञ्चित भेलथि
घामे देह भिजल छनि,
सोचथि दौड़ि पकड़ि ल' आनी
मुरछा आबि घेरइ छनि ।



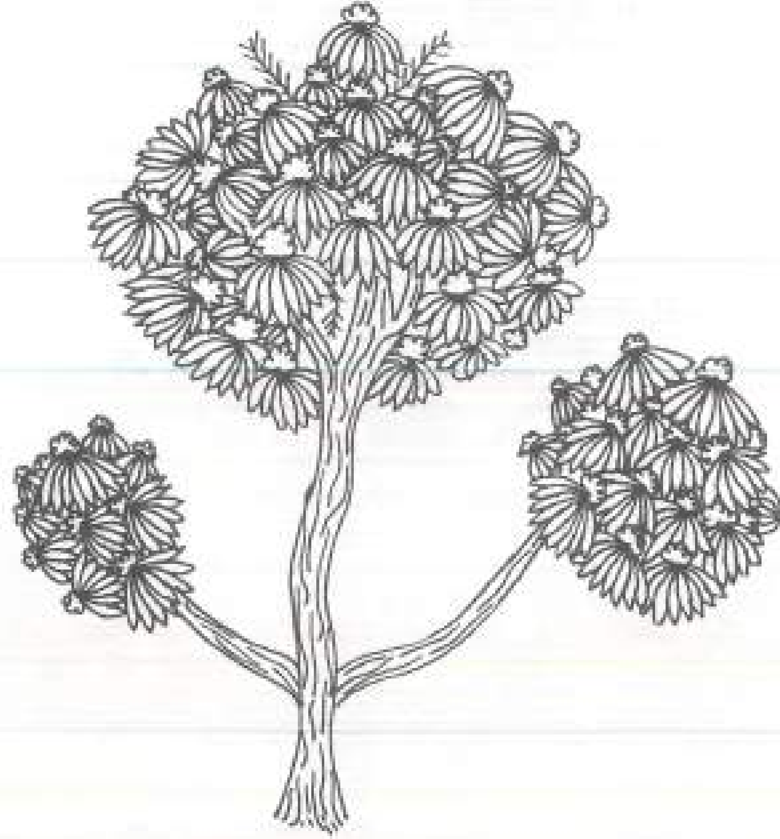
सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मरकथां प्रत्यङ्गमालिङ्गनैः
प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि! समागत्येति चिन्ताकुलः ।
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति
प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमःपुञ्जे निकुञ्जे प्रियः ॥ (११/१०)

सभ सँ पैघ छिनार रसिकवर
के अछि बूझू, अन्हारे
जे दुर्गम अछि झाँपल-तोपल
तेकरहु करय उघारे ।
जखन अन्हार दहोदिस पसरय
बाट अन्हारेँ डूबय,
रसवन्ती अभिसारक पथ पर
झटपट डेग बढ़ाबय ।
कारी गुज-गुज रस-लोलुप तम
पहिने तन आलोड़य,
बान्हि पाश मे सगर देह कें
वर्जित अङ्ग हँसोथय ।
खन काजर बनि हँसय नयन मे
वेणी सघन सजावय,
नीलकमल माला कुन्तल मे
कुच कस्तूरी काढ़य ।
से अन्हार पसरल अछि सगरो
कामक रक्षा सिपाही,
भय-सङ्कोच निकालू मन सौं
लागल जत' पसाहि ।



अक्ष्णोर्निक्षिपदञ्जनं श्रवणयोस्तापिच्छगुच्छावलीं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदामकुचयोः कस्तूरिकापत्रकम ।
धूर्तानामभिसारसम्भ्रमजुषां विष्वङ्निकुञ्जे सखि!
ध्वान्तं नीलनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति ॥
(११/११)

केसर पीत-अरुण आभा सन
गौरवर्णं युवती सभ,
अभिसारक पथ जगमग झुकझुक
तारावलि टाँकल नभ।
अथवा नील वसन तन झाँपल
अभिसारिका सुपथ पर,
स्वर्ण-रेख सँ आलोकित जँ
नील कसौटी पाथर।



काश्मीरगौरवपुषामभिसारिकाणा-
माबद्धरेखमभितो रुचिमञ्जरीभिः।
एतत्तमालदलनीलतमं तमिस्रं
तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां तनोति॥ (११/१२)

सखिक वचन कें मानि प्रफुल्लित
राधा डेग बढ़ौली,
सङ्ग-सङ्ग चलि किछुए क्षण मे
मुसुकैत हरि कें पौली।
बेंतक वन मे लता-पात सँ
छारल-बेढ़ल मंदिर,
तह पर पाटल पुष्प सुगंधित
शुक-पिक रव घन मंजिर।
द्वार लागि भगवान अधर पर
मुसुकी छिटकय मोहक,
मणिक माल कुण्डल कङ्गन सँ
आलोकित पथ गेहक।
मिलल नयन सँ नयन तरासक
अपहृत पातिल फूटल,
लाजें भेलि कठौत मानिनी
डेगक तेजी छूटल।



हारावलीतरलकाञ्चनकाञ्चिदाम-
केयूरकङ्कणमणिद्युतिदीपितस्य।
द्वारे निकुञ्जनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य
व्रीडावतीमथ सखीमियमित्युवाच॥ (११/१३)

प्रबन्ध २१ :

ठमकलि देखि सखी ई बाजलि
उमतल मन औनरल रस-कौंकड़ि
सुख पूर्वक निशि काढ़ू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

मञ्जुतरकुञ्जतलकेलिसदने ।
विलस रतिरभसहसितवदने !
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१४)

नव अशोक दल सेज सुसज्जित
अहिंक लेल कैलनि हरि अर्पित
स्तन-हार सम्हारू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

नवभवदशोकदलशयनसारे ।
विलस कुचकलशतरलहारे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१५)

कमल कुसुम कमनीय देह के
कुसुम सेज पर राखि नेह के
मन भरि निशि भरि विलसू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

कुसुमचयरचितशुचिवासगेहे ।
विलस कुसुमसुकुमारदेहे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१६)

काम-बाण सँ हहरल राधे !
सुरभित मलय समीरक सङ्गे
निधुवन के रस बरसू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

मृदुचलमलयपवनसुरभिशीते ।
विलस मदनशरनिकरभीते ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१७)

रसक थम्ह सन जघन अलस अछि
नवल पात सँ भवन बनल अछि
दीर्घ काल धरि विलसू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

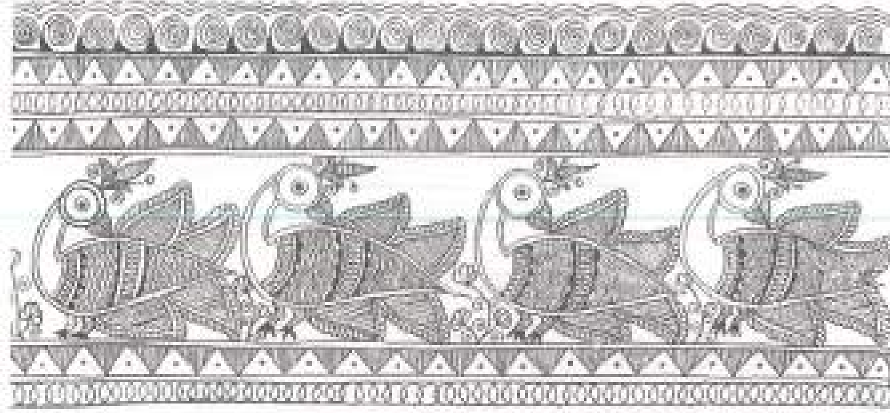
विततबहुवल्लिनवपल्लवघने ।
विलस चिरमलसपीनजघने ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१८)

कामदेव के परम साधिके
मत्त भ्रमर गुञ्जार राधिके !
कोबर मे रस उमरू,
पइसू ! माधव सङ् सटि बइसू !

मधुमुदितमधुपकुलकलितरावे ।
विलस कुसुमशरसरसभावे ।
प्रविश राधे ! माधवसमीपमिह ।। (११/१९)

दन्त-कान्ति सन मणि-द्युति शोभित
केलि भवन कोकिल कल कूजित
तइ ठाँ मदन अराधू,
पइसू! माधव सङ्‌ सटि बइसू!

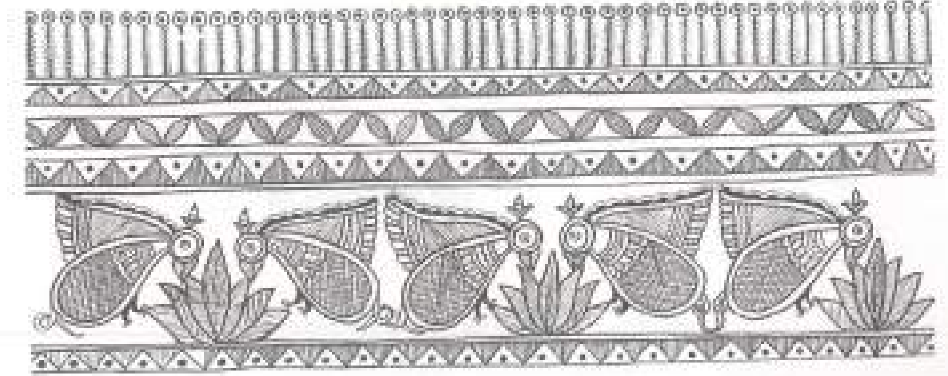
मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे ।
विलस दशनरुचिरुचिरशिखरे ।
प्रविश राधे! माधवसमीपमिह ॥ (११/२०)



पद्मावति हित स्थल प्रसादक
भोग लगाबथि हँसि-हँसि माधव,
कृपा- जलद बनि बरसू,
पइसू! माधव सङ्‌ सटि बइसू!

विहितपद्मावतीसुखसमाजे ।
कुरु मुरारे! मङ्गलशतानि ।
भणति जयदेवकविराजराजे ।
प्रविश राधे! माधवसमीपमिह ॥ (११/२१)

कतेक अवधि सँ मन मे पोसल
छवि अहाँक हरि मन मे डोलल,
विरह-निदाघ पसाहिक तबधल
श्रीभगवान भेला मुरुझायल ।
कामक ज्वर सन्तप्त करइ छनि
रहि-रहि मदनक बाण कुहइ छनि,
कोना शान्ति भेटओ तन-मनके
तेकर ने कनिओ बाट भेटइ छनि ।
ओ चाहथि अधरक रस पीबी
अहिंक किनल बहिआ बनि जीवी,
चरण अहाँके सेवि अहर्निशि
बह सटा सभटा सुख पाबी ।
अहीं हुनक दुःख मेटि सकइ छी
बिख मे अमरित फेंटि सकइ छी,
हरिक सङ्ग सङ्कोच कथी के?
जंघासन पर बैसि सकइ छी ।



त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो भृशं तापितः
कन्दर्पेण च पातुमिच्छति सुधासम्बाधबिम्बाधरम् ।
अस्याङ्कं तदलङ्कुरु क्षणमिह भ्रूक्षेपलक्ष्मीलव-
क्रीते दास इवोपसेवितपदाम्भोजे कुतः सम्भ्रमः? (११/२२)

अद्भुत कुञ्जभवन सुखदायक
ऋतु वसन्त तइ पर अति मादक,
विरह-दशाकें निहुँछि विदा दैं
पैसलि राधा गेह सुठामक ।
नयन पड़ल नयनक मृदु भाषा
ठुट्ठ आदि पनगल अभिलाषा,
मन-मयूर घनश्याम निरेखल
नूपुर कहल प्रेम - परिभाषा ।

सा ससाध्वससानन्दं गोविन्दे लोललोचना ।
सिञ्जानमञ्जुमञ्जीरं प्रविवेशाभिवेशनम् ॥ (११/२३)

राधा-वदन विलोकि फुलायल
मन-उपवन माधव कें,
विविध भाव तरङ्ग मानस मे
सिन्धु निरेखल शशिकें।
निछक शृङ्गार निछट स्वकङ्गा
हरि दुलना रतिङ्गा,
श्रीमुख देखि परम हरखैला
मन मे उछलल अङ्गा ।

प्रबन्ध २२ :
सानन्दगोविन्दरागश्रेणिकुसुमाभरणम्

राधावदनविलोकनविकसितविविधविकारविभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधुमण्डलदर्शनतरलिततुङ्गतरङ्गम् ॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम् ।
सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनङ्गनिवासम् ॥ (११/२४)

हरिक वक्ष पर उज्जव माला
पुनि-पुनि हृदि आलिङ्गय,
नील नीर यमुना मे फेनक
माला जत-तत भासय ।

हारममलतरतारमुरसि दधतं परिरभ्य विदूरम् ।
स्फुटतरफेनकदम्बकराम्बितमिव यमुनाजलपूरम् ॥
(११/२५)

नील कमल मे जेना सनायल
सगरो पीत परागे,
तहिना धोती पीत पटम्बर
श्याम देह छवि लागे ।
श्याम गात पद्मासन बुझि कै
चढ़ि बइसू रतिरङ्गे,
श्याम-गोर अद्भुत छवि पाओल
उमगू परम उमङ्गे ।

श्यामलमृदुलकलेवरमण्डलमधिगतगौरदुकूलम् ।
नीलनलिनमिव पीतपरागपटलभरवलयितमूलम् ॥ (११/२६)

नयन सुचञ्चल हरि-मुख पेखल
बाढ़ि जेना रति-रागक,
खञ्जन नयन रूप रस मातल
कमल फुलायल शरदक ।

तरलदृगञ्चलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागम् ।
स्फुटकमलोदरखेलितखञ्जनयुगमिव शरदि तडागम् ॥ (११/२७)

श्रीभगवानक कानक कुण्डल
रहि-रहि गाल छुबइ छनि,
कमल-वदन परिशीलन भावें
टूटा सूर्य घुमइ छनि ।
कुण्डल सँ छिटकय सतरङ्गी
द्युति सँ ठेर रङ्गल छनि,
देखि भेली राधा रति-रञ्जित
मन उद्वेग बदल छनि।

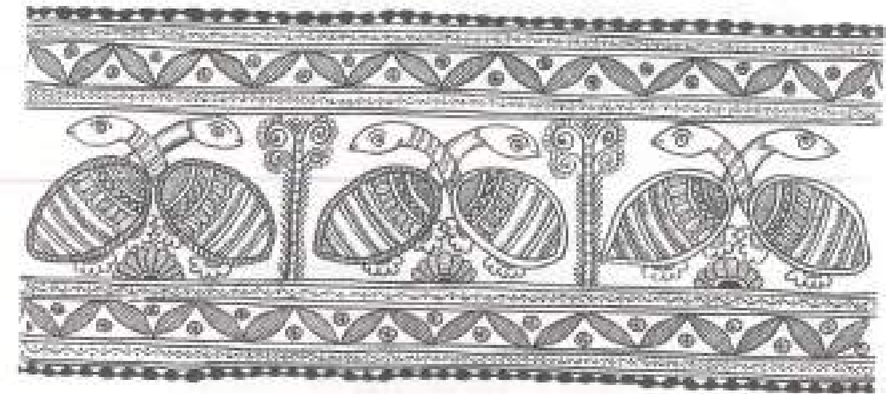
वदनकमलपरिशीलनमिलितमिहिरसमकुण्डलशोभम् ।
स्मितरुचिरुचिरसमुल्लसिताधरपल्लवकृतरतिलोभम् ॥
(११/२८)

श्रीभगवानक कच कुन्तल मे
फूल तेना गँथल छनि,
लगय जेना उमरल बादर मे
चान नुकाय हँसइ छनि।
तहिना श्याम वदन पर चानन
तिलक तेना शोभइ छनि,
तिमिरावृत नभ मे जँ विकसित
पूर्णचन्द्र बिहुँसइ छनि।

शशिकिरणच्छुरितोदरजलधरसुन्दरसकुसुमकेशम् ।
तिमिरोदितविधुमण्डलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशम् ॥
(११/२९)

श्रीमाधव के गात प्रफुल्लित
रोमाञ्चित रति-मन्थित,
तइ पर मणि-आभा पसरल अछि
सुषमा वैभव-मण्डित ।

विपुलपुलकभरदन्तुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगणकिरणसमूहसमुज्ज्वलभूषणसुभगशरीरम् ॥
(११/३०)



श्रीजयदेवक गीतक पुण्ये
सुषमा द्विगुन बदल छनि,
तइ माधव कें प्रणमथु पाठक
महिमा जिनक जगत छनि ।

श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणीकृतभूषणभारम् ।
प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदयसारम् ॥
(११/३१)

हरिक नयन कटाक्षपात कें
टारब कठिन विचारल ,
तैं सोचि राधा दृग-अंचल
श्रवण-क्षेत्र धरि नमरल ।
लाम बाट पर चलिते-चलिते
जहिना पथिक थकइ अछि,
तहिना नयन पसेना बोरल
आनन्दाश्रु चुबइ अछि ।

अतिक्रम्यापाङ्गं श्रवणपथपर्यन्तगमन -
प्रयासेनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारं गमितयोः ।
इदानीं राधायाः प्रियतमसमायातसमये
पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः ॥ (११/३२)

सेज समीप पुगलि श्रीराधा
लाथ लगा सखि भागलि,
क्यो कुड़िआबैत कान निकसली
क्यो जनि मुस्की पाड़लि ।
पाबि एकान्त तखन श्रीराधा
माधव- मुख पर ताकलि ,
नयन नयन सँ सटल थीर रहि
सुधि- बुधि जेना हेरायलि ।
तखनुक हालति देखि लाजहुक
गरिमा लाज पड़ायल ,
फूल-पात सभ लाजें सिकुरल
विरह-व्यथा जनु हारल ।

भजन्त्यास्तल्पान्तं कृतकपटकण्डूतिपिहित -
स्मितं याते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने ।
प्रियास्यं पश्यन्त्याः स्मरपरवशाकूतसुभगं
सलज्जा लज्जापि व्यगमदिव दूरं मृगदृशः ॥ (११/३३)

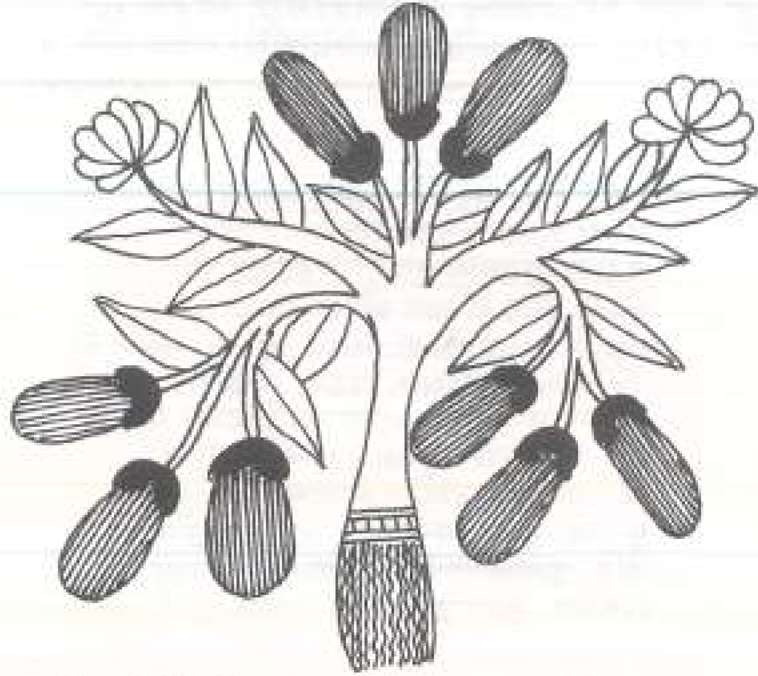
शिरिष कुसुम सन कोमल राधा
माधव नेहुँ अँकवारल,
सटल वक्ष सँ वक्ष पिआसल
राधा- माधव मातल ।
पीन पयोधर तिक्ख नीक भल
माधव मने विचारल,
पीठ छेदि बाहर निकलत की ?
माथ घुमा कै ताकल ।

सानन्दं नन्दसूनुर्दिशतु मितपरं सम्मदं मन्दमन्दं ।
राधामाधाय बाह्वोर्विवरमनु दृढं पीडयन्प्रीतियोगात्
तुङ्गौ तस्या उरोजावतनु वसतनौर्निर्गतौ मा स्म भूतां
पृष्ठं निर्भिद्य तस्माद्बहिरिति वलितग्रीवमालोकयन्वः ॥
(११/३४)

मारि दैत्य मुरजित् बनि माधव
प्रबल भुजाके बल सौं,
कंसक कुवलय हाथी मारल
खेल- खेल मे झट सौं ।
हाथिक माथा फूटल भड़ाम सौं
रुधिरक उठल फोहारा,
हरिक भुजा पर छिटका पसरल
सिन्दूरक मनिहारा ।
विजयलक्ष्मी चँवर डोलाबथि
पुजथि पुष्प मन्दारे,
ताहि भुजाके जय हो- जय हो
भक्तक बल आधारे ।

जयश्रीविन्यस्तैर्महित इव मन्दारकुसुमैः
स्वयं सिन्दूरेण द्विपरणमुदा मुद्रित इव ।
भुजापीडक्रीडाहतकुवलयापीडकरिणः
प्रकीर्णासृग्बिन्दुर्जयति भुजदण्डो मुरजितः ॥ (११/३५)

श्रीराधा सुषमा- निधान
रति समान सुन्दरि छथि,
कामदेव के क्रीड़ा- स्थल
आनन्दक दाता छथि।
वक्षस्थल छनि दिव्य सरोवर
स्तन दुनू कमल छनि,
राजहंस बनि तत माधव कें
चुमकब नीक लगइ छनि।
राधा- माधव कें एहि रूपक
जे क्यो ध्यान करइ छथि,
तिनकर मङ्गल करथि मुरारी
शुभ- शुभ सतत करइ छथि।

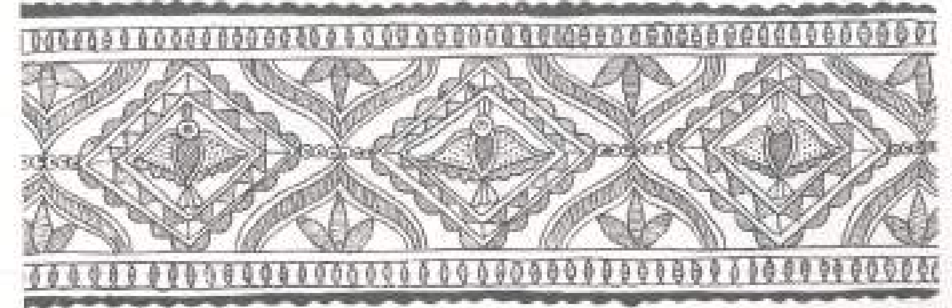


सौन्दर्यैकनिधेरनङ्गललनालावण्यलीलाजुषो
राधाया हृदि पल्वले मनसिजक्रीडैकरङ्गस्थले ।
रम्योरोजसरोजखेलनरसित्वादात्मनः ख्यापय -
न्ध्यातुर्मानसराजहंसनिभतां देयान्मुकुन्दो मुदम् ।।(११/२६)

बारहम सर्ग

सुप्रीतपीताम्बर

सहटि चलल सखि-वृन्द
छोड़ि दुहु कुञ्ज- भवन मे,
जुड़बथु विकल परान
मगन मन रङ्ग- रमण मे।
राधा ठाढ़ि सलज्ज
नयन अनुरागें रञ्जित,
नहि- नहि मुख पर भाव
हृदय अभिलाषें कम्पित।
मौन अधर पर हास
सेज दिस अपलक ताकथि,
बुझि नयनक रति- भाव
तखन हरि सादर बजलथि।



गतवति सखीवृन्दे'मन्दत्रपाभरनिर्भर -
स्मरपरवशाकूतस्फीतस्मितस्नपिताधराम् ।
सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नवपल्लव-
प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम् ।।
(१२/१)

प्रबन्ध २३ : मधुरिपुमोदविद्याधरलीला

किसलय-सेज धरू पद कामिनि
चरण-नलिन सुकुमारे,
मर्दन करु पद-पल्लव वैरिक
उपजओ रति-सुख सारे।
दुर्लभ छल मधुमय क्षण ऐसन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण!

किसलयशयनतले कुरु कामिनि! चरणनलिनविनिवेशम्।
तव पदपल्लववैरिपराभवमिदमनुभवतु सुवेशम्॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके!
(१२/२)

बाटक थाकल चरण अहाँके
लाउ कने हम दाबी,
नूपुर सन नेही बनि हमहूँ
संगति प्रिय कै पाबी।
विरह-विषाद झुकत नहि आनन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण!

करकमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरम्।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम्॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके!
(१२/३)

शशिमुख सँ अमृतमय बोलक
निर्झर अहाँ बहाबी,
मिलन-विरोधी वसन वक्ष सँ
हमहूँ टारि हँटाबी।
विरह-निदाघक होय समापन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण!

वदनसुधानिधिगलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम्।
विरहमिवापनयामि पयोधररोधकमुरसि दुकूलम्॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके!
(१२/४)

अमरित-कलस पयोधर-पुरहर
रोमाञ्चित उद्वेलित,
परिरम्भन आसें उमतायल
छलकि उठत भै हर्षित।
कृपामयि करु सुधा-निधि अर्पण,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण!

प्रियपरिरम्भणरभसवलितमिव पुलकितमतिदुरवापम्।
मदुरसि कुचकलशं विनिवेशय शोषय मनसिजतापम्॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके!
(१२/५)

हे भामिनि ! की कहू दशा हम
विरहानल के मारल,
अधरामृत के पान कराबी
स्तब्धहिं ले जी टाङल ।
मेटत दासक मृत्यु-हुताशन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण !

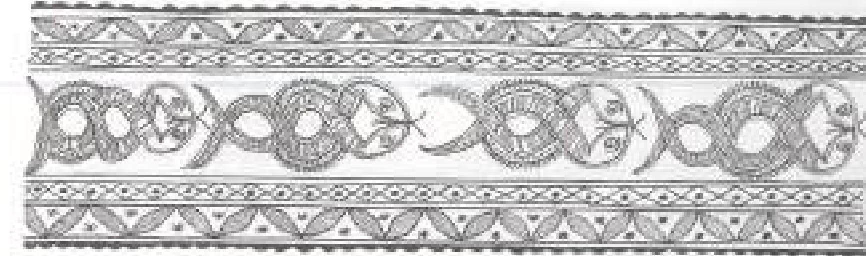
अधरसुधारसमुपनय भामिनि ! जीवय मृतमिव दासम् ।
त्वयि विनिहितमनसं विरहानलदग्धवपुषमविलासम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/६)

हे शशिमुखि चञ्चल भै छमकू
डँड़कस हो अनबोले,
घनघन धुनि सन कण्ठक स्वर हो
श्रुति तिरपित हो बोले।
शमन हो विरह-कूक अवसादन,
मानिनि अनुसर तुअ नारायण !

शशिमुखि ! मुखरय मणिरसनागुणमनुगुणकण्ठनिनादम् ।
श्रुतियुगले पिकरुतविकले मम शमय चिरादवसादम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/६)

व्यर्थहि कैलहुँ मारब अनेरो
बाजय नयनक भाषा,
दारुण विरह बेसाहि गमाओल
प्रेमक सभ अभिलाषा ।
आबहु करु रतिक प्रतिपादन,
मानिनि, अनुसर तुअ नारायण !

मामितिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
लज्जितमिव नयनं तव विरमति सृजसि वृथा रतिखेदम् ॥
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुसर राधिके !
(१२/८)



श्रीजयदेव भनथि भगवानक
प्रणय-विनोदक लीला,
भक्त जनक जीवन मुखरित हो
रसमय काव्यक क्रीड़ा ।

श्रीजयदेवभणितमिदमनुपदनिगदितमधुरिपुमोदम् ।
जनयतु रसिकजनेषु मनोरमरतिरसभावविनोदम् ॥
(१२/९)

ओ क्षण आबि तुलायल नहुँ - नहुँ
राधा शय्या चढ़ली,
कंठ पड़ै नहि उच्छ्वास सँ
घामे सगर नहयली।
तहिना माधव अस्त-व्यस्त सन
अपनहि मे ओझरायल,
जेना चन्द्रिका भूतल भू पर
चान कतहु भुतिआयल।
तन वा मन किछु थीर नैं कनियो
चञ्चल दृग औनायल,
देखी प्रिय के मन भरि छौंके
पल-पल पलक झँपायल।
अति पुलकित गातक परिरम्भन
बान्हब कठिन लगै छल,
अधराधर के पान करब त'
बाजब कठिन लगै छल।
की छोड़ब की करब कठिन छल
काम-रीति अनुसारें,
सहज भेल किछु तेहने औंचक
बूझू रति-व्यवहारे।

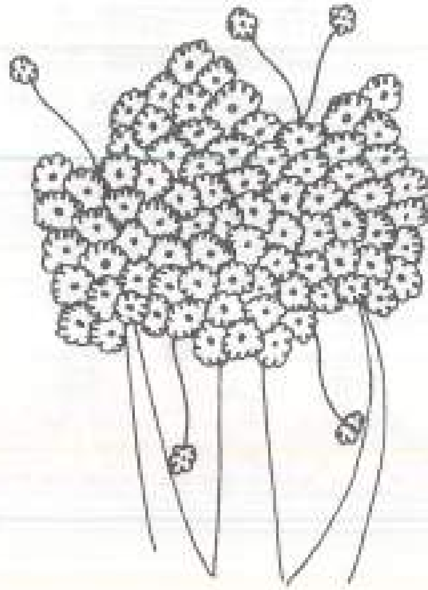
प्रत्यूहः पुलकाङ्कुरेण निविडाश्लेषे निमेषेण च
क्रीडाकूतविलोकितेऽधरसुधापाने कथाकेलिभिः।
आनन्दाधिगमेन मन्मथकलायुद्धेऽपि यस्मिन्नभू-
दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारम्भः प्रियं भावुकः॥
(१२/१०)

विरह बैरि के होय पराभव
राधा मनैं सँमरली,
वीर वेश रति-रण करबा ले'
मधुसूदन पर चढ़ली।
पहिने हरि के बान्हि भुजा मे
बहिआ रतिक बनोली,
अधर - अधर पर राखि चषक सौं
गति- मति समटा हरली।
तखन दशन-आघात नखक्षत
पृथुल नितम्बें मर्दन,
कुन्तल पकड़ि समारल गतिकें
डँड़कस दुन्दुभि गुञ्जन।
घनन-घनन झम-झम रसबरसै
हरि आनन्दें भीजथि,
कामक गतिबड़ टेढ़ कहल अछि
माधव मन मे बूझथि।



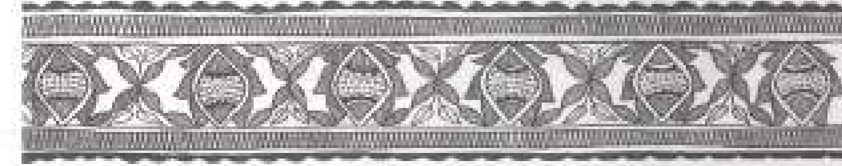
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजै-
राविद्धो दशनैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः।
हस्तेनानमितः कचेऽधरमधुस्यन्देन सम्मोहितः
कान्तः कामपि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामा गतिः॥
(१२/११)

सहसा घातक वेग मन्द भेल
नूपुर के धुनि ठमकल,
स्वाँसक लय टूटल विजयनि के,
देह दण्ड सन पसरल।
जंघा शिथिल वक्ष अवनत सन
बाँहिक बन्धन छूटल,
मौतिक माल दहोदिस छितरल
डाँहक ईंड़कस टूटल।
असीथकित भै उनटलि राधा
सहजहि आँखि मुनायल,
रति-विपरीतक समर औरायल
माधव के मन हरखल।



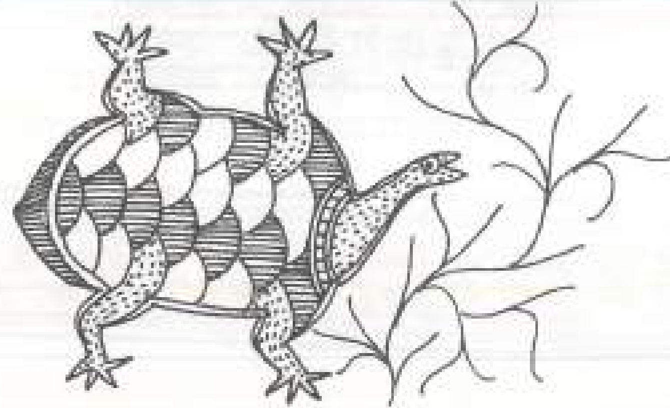
मारङ्के रतिकेलिसङ्कुलरणारम्भे तथा साहस-
प्रार्यं कान्तजयाय किञ्चिदुपरि प्रारम्भि यत्सम्भ्रमात।
निष्पन्दा जघनस्थली शिथिलता वोर्वल्लिरुत्कम्पितं
वक्षो मीलितमक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति॥
(१२/१२)

अति घनघोर समर रति-द्वन्द्वक
विरमि शयन सुख-निद्रा,
राधा बेसुधि पड़ल अनावृत
नयन निमीलित तन्द्रा।
देखल हरि प्रातहि सौन्दर्यक
राशि सेज पर औलड़ल,
अङ्ग-अङ्ग मे पञ्चबाण के
स्रोत जेना हो रोपल।
नख-क्षत के लाली अनुरञ्जित
लाल पलास पयोधर,
अर्ध फुलायल कमल नयन मे
बन्धुजीव अधराधर।
वेणी-पुष्प मालती छितरल
सहजहि गमकै मादक,
गौर गात रत-रत चम्पा सन
सभ मिलि छल उन्मादक।
किछु क्षण हरि देखिते रहि गेला
रूप अनूप अपारक,
उठल हृदय मे लहरि असाधे
अद्भुत काम-विकारक।



तस्याः पाटलपाणिजाङ्कितमुरो निद्राकषाये दृशौ
निर्धौताधरशोणिमा विलुलितस्रस्तस्रजो मूर्धजाः।
काञ्चीदाम दरश्लथाञ्चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो-
रेभिः कामशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्मनः कीलितम्॥
(१२/१३)

प्रातक प्रणय अनङ्गक मोचल
असोथकित भै राधा,
बिथरि सेज पर एम्हर-ओम्हर
नयन झँपायल आधा।
उजरल-पुजरल केसक सज्जा
गालक घाम सुखायल,
अधरक लाली भेल तिरोहित
वक्षक कान्ति नुकायल।
माधव कखनो रूप निहारथि
कखनो देह हँसोतथि,
कखनो उकठकरथि नहँुए सँ
कोमल बिठुआ काटथि।
गुदगुदीक सिहरनु सँ राधा
लोटपोट भै पलटथि,
कखनो झाँपथि वक्ष हाथ सँ
कखनो जघन नुकाबथि।



व्याकोशः केशपाशस्तरलितमलकैः स्वेदमोषौ कपोलौ
क्लिष्टा बिम्बाधरश्री कुचकलशरुचा हारिता हारयष्टिः।
काञ्चीकान्तिर्हताशा स्तनजघनपदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यन्ती सत्रपा सा तदपि विलुलिता मुग्धकान्तिर्धिनोति॥
(१२/१४)

सुरति-क्रिया सँ श्रान्त राधिके
आनन्दें अलसैली,
मृगनयनी के प'ल फुजै नहि
निष्पन्दित भै पड़ली।
रतिकालक आकुल सित्कारें
अधर श्वेत पर्णाङ्गी,
एहन दृश्य देखथि बड़भागी
हरि-सेवक रसरङ्गी।

ईषन्मीलितदृष्टि मुग्धविलसत्सीत्कारधारावशा-
दव्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दन्तांशुधौताधरम्।
शान्तस्तब्धपयोधरं भृशपरिष्वङ्गात्कुरङ्गीदृशो
हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो धयत्याननम्॥
(१२/१५)

किछु कालक पश्चात स्वस्थ-मन राधा भेली,
देखि मुदित सानन्द तखन हँसि हरि सँ बजली।

अथ सहसा सुप्रीतं सुरतान्ते सा नितान्तखिन्नाङ्गी।
राधा जगाद सादरमिदमानन्देन गोविन्दम्॥
(१२/१६)

प्रबन्ध २४ : सुप्रीतपीताम्बरतालश्रेणिः

करु यदुनन्दन! चानन सँ बढ़ि
शीतल कोमल कर सँ,
काम-कलश वक्षस्थल ऊपरि
नव पल्लव मृगमद सँ।
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

करु यदुनन्दन! चन्दनशिशिरतरेणकरेण पयोधरे।
मृगमदपत्रकमत्र मनोभवमङ्गलकलशसहोदरे॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/१६)

ए प्रिय! चुम्बन सँ लेभरौलहुँ
आँखिक काजर ऐसन,
काढ़ फेर काम-शर तिक्खर
गाढ़ कालिमा जैसन।
अलिकुल लाजें धरै शवासन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

अलिकुलगञ्जनकं रतिनायकसायकमोचने।
त्वदधरचुम्बनलम्बितकज्जल उज्ज्वलय प्रिय! लोचने॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/१८)



नयन-कुरङ्गक भौंरी जैसन
कुण्डल कान सजाबी,
ए शुभवेश! अनङ्ग महीपक
पाश मोहनक पाबी।
जन-जन देखि होय सम्मोहन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

नयनकुरङ्गतरङ्गविकासनिरासकरे श्रुतिमण्डले।
मनसिजपाशविलासधरे शुभवेश! निवेशय कुण्डले॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/१९)

कमलहुँ सँ बढ़ि उज्ज्वल मोदक
मुख पर केश समारू,
लगै जेना भौंरा लुबधल हो
तहिना लट झमकारू।
मुख मे वास करै जौं मधुवन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

भ्रमरचयं रचयन्तमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे।
जितकमले विमले परिकर्मय नर्मजनकमलकं मुखे॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/२०)

ए कमलानन! घाम सुखायल
हमर लिलारक ऊपर,
कस्तूरी सँ तिलक लगै जौं
मृगलाञ्छन शशि ऊपर।
भालक छवि लागय से अनमन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

मृगमदरसवलितं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे।
विहितकलङ्ककलं कमलानन! विश्रमितश्रमशीकरे॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/२१)

कामक ध्वज मे चओरक छवि सन
मोर-पाँखि सँ सुन्दर,
रतिक्रीड़ा मे केस उजरि गेल
फूल सजाउ मनोहर।
मानद! झारि-थकरि जुट्टी सन,
खेलू, हरखि-पुलकि यदुनन्दन!

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद! मनसिजध्वजचामरे।
रतिगलिते ललितं कुसुमानि शिखण्डिशिखण्डकडामरे॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने!
(१२/२२)



हे हरि ! सघन जघन करि - कामक
वास - गुफा कें कर सौं,
साजू रूचिर मने कर - कमलें
मणि - माणिक्य वसन सौं ।
कटि मे बान्हू रत्नाभूषण,
खेलू, हरखि - पुलकि यदुनन्दन !

सरसघने जघने मम शम्बरदारणवारणकन्दरे ।
मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय ! वासय सुन्दरे ॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने !
(१२/२३)

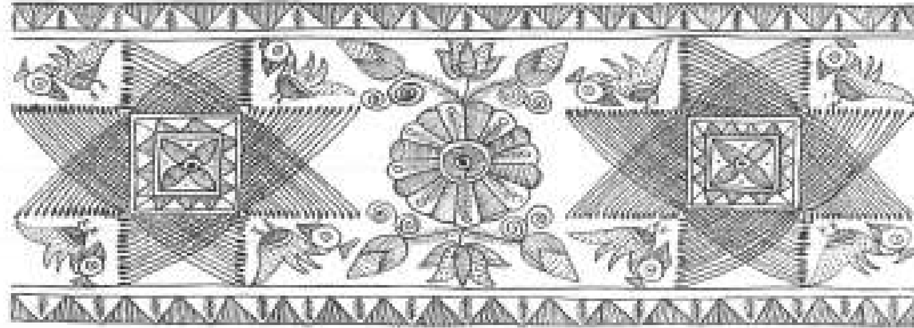
श्रीजयदेव कैल पद - रचना
कलि - ज्वर ताप विनाशय,
श्रीहरि - चरण पियूष - प्रसदिं
जगत परम सुख पाबय ।
सदय मण्डन - पद सुनु मधुसूदन,
खेलू, हरखि - पुलकि यदुनन्दन !

श्रीजयदेववचसि रुचिरे सदयं हृदयं कुरु मण्डने ।
हरिचरणस्मरणामृतनिर्मितकलिकलुषज्वरखण्डने ॥
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीडति हृदयानन्दने !
(१२/२४)

ए हरि ! घोरि सरस कस्तूरी
चटकदार मसि लबितहुँ,
आङुर के पिहुआ सँ नहुँ-नहुँ
चित्र वक्ष पर रचितहुँ।
छोट पुरैनिक पात गाल पर
प्रियवर रुचिर बनबितहुँ,
जघन सँ ऊपरि मणिमय काञ्ची
रेसम ताग लगबितहुँ।
पुष्प-माल सँ वेणी सजितहुँ
कङ्कन हाथ पहिरितहुँ,
मणिनूपुर कें पहिरि पयर मे
झमकि बाट पर चलितहुँ।
राधा के अभिलाख-वचन सुनि
माधव हरखि पुरौलनि,
निरखि परस्पर मुदित युगल-छवि
प्रेमक धार बहौलनि।

रचय कुचयोश्चित्रं पत्रं कुरुष्व कपोलयो-
र्घटय जघने काञ्चीं मुग्धस्रजा कबरीभरम्।
कलय वलयश्रेणीं पाणौ पदे मणिनूपुरा-
विति निगदितः प्रीतः पीताम्बरोऽपि तथाकरोत्॥

(१२/२५)



गीतगोविन्दक काव्य कलायुत
विधुजन परखि बताबथि,
विविध विधा के सङ्गम रहि मे
श्रीहरि स्वयं सुनाबथि।
सङ्गीतक गन्धर्व-कला रहि
काव्यक चरण-चरण मे,
श्रीभगवानक वैष्णव-चिन्तन
दिव्य प्रेम-दर्शन मे।
श्रृङ्गारक तात्विक अनुशीलन
पुरुष-प्रकृति के लीला,
पण्डित कवि जयदेव सुनौलनि
कृष्ण-चरित गुण-शीला।

यद्गान्धर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च यद्वैष्णवं
यच्छृङ्गारविवेकतत्त्वरचनाकाव्येषु लीलायितम्।
तत्सर्वं जयदेवपण्डितकवेः कृष्णैकतानात्मनः
सानन्दाः परिशोधयन्तु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः॥
(१२/२८)

भोजदेव-रामा देवी सुत
श्रीजयदेवक रचना,
अमर रहओ आ बनल रहौ नित
भगवद्भक्तक गहना।

श्रीभोजदेवप्रभवस्य रामादेवीसुतश्रीजयदेवकस्य।
पराशरादिप्रियवर्गकण्ठे श्रीगीतगोविन्दकवित्वमस्तु॥
(१२/२९)

शशिबाला
9.12.2009

३० अगस्त, २००७

रचनाकारद्वयक प्रकाशित पुस्तक

1. माछ-भात
2. मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-1
3. मिथिला चित्र प्रवेशिका, भाग 1-2
4. मिथिला चित्र-कोर, भाग-3
5. मेघदूत
6. मैथिली गीतगोविन्द।

पुस्तक प्राप्तिक स्थान

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय,
दरभंगा, मिथिला-846001
सम्पर्कः (मो.) 9931665939
ईमेलः kashyapkk2000@yahoo.co.in
mithlauniversity@gmail.com

प्रकाशक

भारती विकास मंच
बरहेता, लहेरिया सराय,
दरभंगा, मिथिला-846001





कश्यपजी आ शशिबाला गुरु-शिष्य परम्परामे एकटा तेहन रचना-धर्मक पयस्विनी मिथिलामे प्रवाहित कयलनि जेकर त्रिमुखी धारा आजीविकाक गंगा, कलाक यमुना आ साहित्यक सरस्वती बनि हजार-हजार निरालम्ब उपेक्षिता, नारी-जीवन कें प्रयाग-संगम जेकाँ सिंचित क' रहल अछि। भारती विकास मंच संस्थाक बोधिवृक्षक छाँहि मे दुनू साधक रचनाकार मिथिला चित्रकलाक मन्त्रसँ जाति-पाँति, अज्ञानता आ रूढ़िवादक पंकमे फँसल समस्त मैथिल नारी-समुदायकें ज्ञानक संग आयवृद्धिक एकटा तेहन सिद्धि प्रदान कयलनि जेकर उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ अछि। ज्ञानक अपरिमित सुगन्धिसँ पोषित मिथिला-कलाक सौरभकें अपन संकल्पक पोछिमे समेटि ई दुनू साधक परिव्राजक जेकाँ मिथिलाक गाम-गमइसँ लै देश भरि आ देशक सीमासँ बाहर, यूरोप धरि जाहि यज्ञक समायोजन कैलनि तेकर दक्षिणामे आइ धरि अपन सभ किछु निर्मोही भावसँ समर्पित करैत रहलाह। धन, पद आ यशक माया कतेको बेर दुनू साधककें विचलित करय चाहलकनि मुदा सभ आकर्षणसँ निर्लिप्त, कहियो ओम्हर पलटि क' नहि देखलाह। मुदा अपन लोकक उपेक्षा, से जतबे लग तेतबहि आक्रामक। तेकरो कोनो परवाह नहि कयलनि। एकटा दिशाबोध, कष्ट माने की? अपन निश्चय। एहि बोधकें अपन सम्बल बना एखन धरि आगाँ बढ़ैत रहलाह। तथापि, साधनाक अनेको कष्ट सहितहुँ, कश्यपजी एकटा पुरुष छथि जेना बुद्ध, महाबीर वा गाँधी एकटा पुरुष छलाह, मुदा मिथिला सन रूढ़िवादी समाजमे शशिबाला सन कोनो महिलाकें परिपाटीक लीक तोड़ि क' सामाजिक परिवर्तन करबामे केहन-केहन कष्टक सामना करय पड़ैत छैक तेकर उदाहरण कत' पायब? ओ दुःख त' मात्र गोविन्दे बुझि सकैत छथि। आ से, जँ गोविन्दक कृपा नहि रहितनि त' एतेक सफलता कोना भेटितनि? ओही नारायणक कृपासँ शशिबाला अपन पिता श्री वज्र नारायण जी सँ शील, गुण आ धैर्य पौलनि, कश्यपजी सन गुरुसँ नम्रता आ कौशल पौलनि आ श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसइथ) सन ज्ञानी आ उदार वर पौलनि जे साधनाक पथ पर एखनहुँ बढ़ैत जा रहलीह अछि। कला-सागरक मन्थनमे संलग्न ई लक्ष्मी एखन धरि मिथिलाकें जतेक रत्न प्रदान कयलनि से अन्यतम अछि। गोविन्द दुनू साधककें सफलता देथु।

राजनन्दन लाल दास
सम्पादक, कर्णामृत, कोलकाता।

